नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
बापू की याद आई
मां दुर्गा : दशहरा
कैक्टस कैसे-कैसे
एशियाई खेल
अक्तूबर '९४
पांच रुपए
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

डायमण्ड कॉमिक्स में

कार्टूनिस्ट प्राण के प्रसिद्ध चरित्र

चाचा चौधरी सीरीज

चाचा चौधरी और बिग बैन
चाचा चौधरी और रैम्बो
चाचा चौधरी और जिद्दी कजान
चाचा चौधरी और जहरीला इंसान नोरा
चाचा चौधरी और राका का चैलेंज
चाचा चौधरी और विचित्र चिड़ियाघर
चाचा चौधरी और ट्रिपल नाइन
चाचा चौधरी–राका का हमला
चाचा चौधरी और प्रो. शटल काक
चाचा चौधरी ज्यूपिटर पर
चाचा चौधरी और बनारसी ठग
चाचा चौधरी और चोर की तलाश
चाचा चौधरी का अजूबा
चाचा चौधरी और शेख इब्नबतूता
चाचा चौधरी और एक करोड़ का हीरा
चाचा चौधरी और अरमान अली फरमान अली
चाचा चौधरी और हाइवे के लुटेरे
चाचा चौधरी का इंसाफ
चाचा चौधरी और रोबोट
चाचा चौधरी और हीरों की खेती
चाचा चौधरी और साबू पर हमला
चाचा चौधरी और चंपत संपत
चाचा चौधरी और राका का इंतकाम
चाचा चौधरी और हकीम जमालगोटा
चाचा चौधरी और पलीते की कमर
चाचा चौधरी और पोपटलाल
चाचा चौधरी उड़ने वाली कार
चाचा चौधरी बिल्लू और पिंकी
चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़
चाचा चौधरी और गुलामों की बिक्री
चाचा चौधरी और राका की वापसी
चाचा चौधरी का धमाका
चाचा चौधरी और चालाक गोशा
चाचा चौधरी और युधिष्ठिर का मुकुट
चाचा चौधरी और राका का तूफान
चाचा चौधरी और हाथी का व्यापार
चाचा चौधरी और सड़क का भूत
चाचा चौधरी और साबू का वतन
चाचा चौधरी और गाज़ा
चाचा चौधरी और फिल्म स्टार
चाचा चौधरी और सम्राट अशोक का खजाना
चाचा चौधरी और बोतल में जिन्न
चाचा चौधरी और गब्बर सिंह से टक्कर
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना
चाचा चौधरी और साबू का अपहरण
चाचा चौधरी अंतरिक्ष में
चाचा चौधरी और आदमखोर
चाचा चौधरी और साबू का हथौड़ा
चाचा चौधरी और शिकारी लक्कड़बग्गा सिंह
चाचा चौधरी और मैडम जारो
चाचा चौधरी और साबू की शादी
चाचा चौधरी अमेरिका में
चाचा चौधरी और साबू का बूट
चाचा चौधरी और क्रिकेट मैच
चाचा चौधरी और रहस्यमय चोर
चाचा चौधरी और राका
चाचा चौधरी और साबू काले टापू पर
चाचा चौधरी और कराटे सम्राट
चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे
चाचा चौधरी डाइजेस्ट 1 से 11

बिल्लू सीरीज

बिल्लू की साईकिल
बिल्लू-गर्मी की छुट्टियां
बिल्लू की तोप
बिल्लू मि. इंडिया
बिल्लू और बजरंगी पहलवान
बिल्लू फाइव स्टार होटल में
बिल्लू और रावण के सिर
बिल्लू और फिल्म शो
बिल्लू का दोस्त
बिल्लू होस्टल में
बिल्लू का होमवर्क
बिल्लू पिकनिक पर
बिल्लू की सोफ्टी
बिल्लू का हंगामा
बिल्लू-1
बिल्लू-2
बिल्लू-3
बिल्लू और हाथी की सैर
बिल्लू का केक
बिल्लू और करोड़ रुपये
बिल्लू और क्रिकेट
बिल्लू डाइजेस्ट 1 से 7
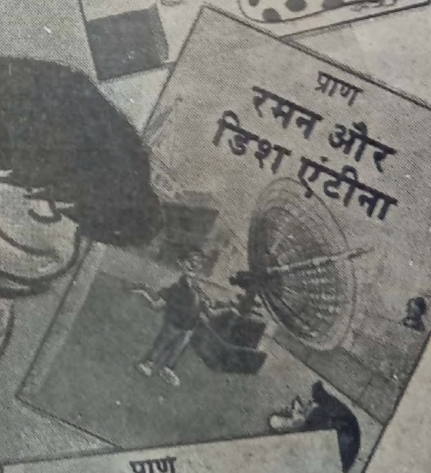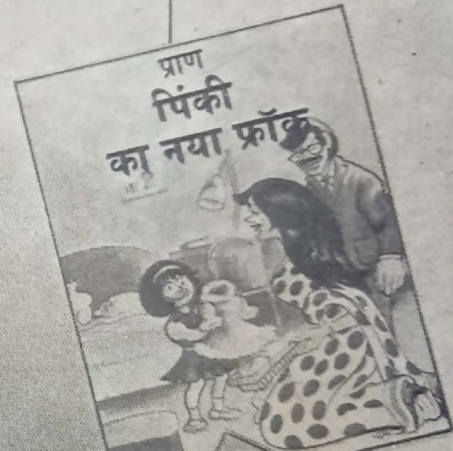
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

पत्र मिला

□ मैं मास्को में रहता हूं । गर्मी की छुट्टियों में भारत आया था । अपने अंकल के घर नंदन पढ़ी । लौटते वक्त मैंने आठ 'नंदन' खरीदीं । इस पत्रिका को पढ़ने से मेरी हिंदी अच्छी हो जाएगी ।

— यानीलोक गेनोसूची, मास्को

□ अगस्त '९४ का अंक मिला तो मन प्रसन्न हो गया । इस अंक में 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' और 'चटपट' मजेदार लगे । 'रेत में घड़ा', 'छोड़ दे बांसुरी', 'सोया जागा', 'आज दाना कल पानी', 'मोतियों का हार', 'पूत-सपूत' कहानियां बहुत अच्छी लगीं, । यह पत्रिका हमारे मन के अंधेरे को हटाकर उजाला भर देती है ।

— हिमालय, रायगढ़

□ इस अंक में 'चटपट', 'तेनालीराम', 'ज्ञान-पहेली', 'चीटू-नीटू' के साथ-साथ कहानियां 'घंटी की डोर', 'दूसरा बेटा', 'गीत का मोल', 'सब दे दिया', 'नींद गायब', 'एक दिन एक रात', 'पूत-सपूत' बहुत अच्छी लगीं ।

— प्रदीपकुमार स्वेन, भुवनेश्वर

□ अगस्त अंक बहुत ही बढ़िया था । 'लौट आया मोती', 'पूत-सपूत', 'खिड़की वाली लड़की', 'गीत का मोल', 'रेत में घड़ा' रचनाएं बहुत अच्छी लगीं । 'चीटू-नीटू' ने भी बहुत हंसाया । सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक थीं ।

— गिरीश बाटला, नई दिल्ली

□ इस माह की पत्रिका में 'नंदन बाल समाचार', 'सचित्र समाचार' तथा भगवान विष्णु और भक्त ध्रुव के चित्र बहुत पसंद आए ।

— शोभित खटाना, डाक पत्थर, देहरादून

□ इस देश में हिंदी सीखने के प्रति अनूठा उत्साह है । हम यहां हाई कमीशन परिसर में हिंदी कक्षाएं चलाते हैं । आपकी पत्रिका 'नंदन' विद्यार्थियों में काफी लोकप्रिय है । हम यहां तीस प्रतियां मंगाते हैं । सभी शिक्षार्थियों को 'नंदन' देते हैं ।

—बी.एन. गोयल

भारत का हाई कमीशन, त्रिनिडाड

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : उपासना मिश्रा, छिबरामऊ; शिवप्रसाद सैनी, लखनऊ; दिलीपकुमार मोदी, कटक ।

बार-बार पढ़ने और सहेजकर रखने योग्य विशेषांक

□ दीपावली के अवसर पर श्रीगणेश और श्रीलक्ष्मी के सतरंगे चित्र ।

□ **दीपावली त्योहार है साफ-सफाई का, खुशियों का—**

□ इस बार पर्यावरण पर विशेष सामग्री—
पक्षियों और पेड़ों पर नए बाल-गीत ।

□ **देश-देश के रंगीन डाक-टिकट— 'हमारा पर्यावरण' और 'खेलो-कूदो संग हमारे ।'**

□ प्रकृति के गीत-संगीत को समेटती रोचक कथाएं ।

□ **दो खेल— घर में बैठकर खेलिए और मनोरंजन कीजिए ।**

□ अजब-अनोखी चार चित्र-कथाएं— रहस्य-रोमांच से भरी गुदगुदाती ।

□ **भारतीय भाषाओं की दो दर्जन से अधिक कहानियां— आप भी पढ़ें, दूसरों को भी पढ़वाएं ।**

□ सात साल की भारतीय बच्ची, दुनिया में बेजोड़— नंदन की ओर से मुलाकात तानिया सचदेव से ।

□ **त्योहारों के मौसम में महंगाई तेजी से बढ़ी तो सब परेशान । तेनालीराम ने कौन-सा करिश्मा दिखाया ।**

□ चीन में भारत— डा. ओम्प्रकाश सिंहल रंगीन चित्रों के साथ सैर करा रहे हैं ।

अधिक पृष्ठ : अधिक रंगीन पृष्ठ : अधिक कहानियां

ज्ञा न व र्द्ध क

म नो रं ज क

सा ह सि क

रो मां च क

र ह स्य म यी

प्रत्येक का मूल्य: 24/- • डाकखर्च: 6/-

आओ बात करें

राम, सीता और लक्ष्मण वन में रह रहे थे। एक दिन शूर्पणखा वहां आई। लक्ष्मण को देखा, तो उन पर रीझ गई। लेकिन लक्ष्मण उसे अपना नहीं सकते थे। उन्होंने छुटकारा पाने के लिए उसके नाक-कान काट दिए। वह रोती-झींकती अपने भाई खर के पास पहुंची। खर गंधमादन पर्वत पर रहता था। वह रावण का सीमा-रक्षक अधिकारी था। उसके अधिकार में चौदह सेनापति और चौदह हजार सैनिक थे। उसने बड़ी सेना और अपने भाई दूषण को साथ लेकर, श्रीराम पर हमला बोल दिया।

राम ने लक्ष्मण को सीता की सुरक्षा के लिए एक गुफा में जाने को कहा। फिर धनुष-बाण लेकर खर-दूषण की सेना का सामना करने को आ डटे। युद्ध हुआ। खर-दूषण तथा उनकी भारी सेना के छक्के छूटने लगे। वे सब खेत रहे।

अकम्पन ने इस युद्ध को देखा था। उसने लंका जाकर रावण को यह खबर दी। यह सब सुनकर, रावण क्रोध में भर उठा। बोला— "मैं राम-लक्ष्मण को मारने को खुद जनस्थान जाता हूं।"अकम्पन तो राम की वीरता देख ही चुका था। उसने कहा— "दशग्रीव, आप रण में तो राम को जीत नहीं सकते। उस महावन में धोखा देकर राम की पत्नी सीता का हरण कर लीजिए। सीता से बिछड़कर राम जीवित नहीं रहेगा।"

अकम्पन की बात सुन,रावण बोला— "ठीक है, ठीक है, कल सवेरे ही मैं सारथि के साथ जाऊंगा। सीता को हरकर यहां ले आऊंगा।"अगले दिन सवेरे ही रावण मारीच के पास जा पहुंचा। जनस्थान में हुए युद्ध के बारे में उसे बताया। खर-दूषण के मारे जाने की बात कही। यह भी कहा— "मैं राम की पत्नी का हरण करना चाहता हूं। तुम मेरी सहायता करो।"

मारीच बोला— "लंकेश्वर, मित्र के रूप में जरूर तुम्हारा कोई शत्रु है, जिसने तुम्हें ऐसी सलाह दी है। इससे राक्षसों की प्रतिष्ठा कम होगी। तुमसे किसने कहा कि सीता को हरकर ले आओ। हे राक्षसराज, तुम लंका लौट जाओ और इस विचार को त्याग दो।"

रावण लंका लौट आया। लेकिन तभी शूर्पणखा वहां आ गई। रावण को खरी-खोटी सुनाने लगी। राम-लक्ष्मण की वीरता और सुंदरता की चर्चा करते हुए उसने उन्हें अजेय बताया। उसने भी कहा— "तुम सीता को उठाकर ले आओ।"

रावण का मन फिर बदल गया। वह जनस्थान गया। रावण ने मारीच को बाध्य कर दिया कि उसका साथ दे। मारीच सुनहरी मृग बन गया। राम की कुटिया के आसपास कुलांचें भरने लगा। उसका पीछा करते हुए राम दूर निकल गए। मारीच को बाण लगा, तो मरते समय उसने जोर से पुकारा— 'हा लक्ष्मण!' मायावी मारीच ने राम की आवाज में लक्ष्मण को पुकारा था। यह सुनकर, सीता घबरा गईं। उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि वह तुरंत जाएं, शायद उनके भाई पर कोई संकट है। लक्ष्मण गए तो धोखे से रावण ने सीता का हरण कर लिया। सीता को ले जाकर अशोक वाटिका में रखा। राम-रावण युद्ध हुआ। रावण के बड़े-बड़े शूरवीर मारे गए। अंत में रावण भी मारा गया।

रावण वीरों में वीर था। विद्वान भी था। मरा तो विभीषण को याद आया कि कैसे रावण ने उसका अपमान किया था। किंतु राम ने विभीषण से कहा— "मरण के साथ ही वैर का अंत हो जाता है। वह अधर्मी तो था, किंतु बलवान और शूरवीर था। तुम इसका अंतिम संस्कार करो। अब यह जैसा तुम्हारा भाई है, वैसा ही मेरा भी।"

दशहरा आता है तो देश-विदेश में रामलीलाएं होती हैं। हर साल रावण को जलाते हैं यानी वैर-भाव का अंत करते हैं।

अगला अंक 'उपहार विशेषांक' होगा। अधिक पृष्ठ, अधिक सामग्री। अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लें।

तुम्हारे भइया

नंदन

अक्तूबर '९४
वर्ष : ३० अंक : १२

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : सूरज एन. शर्मा; एलबम : भुवनेश

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा, उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : नारायण

पेड़ देवता

—वीरेन्द्र पैन्यूली

चंद्रपुरी के राजा विजयवीर साधु-सतों का बहुत आदर किया करते थे। साधु-संत भी दूर-दूर से उनके राज्य में आते थे। एक बार दूर हिमालय से घूमते-घामते एक संन्यासी चंद्रपुरी आए। राजा ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। संन्यासी महाराजा के आदर और स्नेह से ही नहीं, प्रजा की भलाई के उनके कार्यों से भी बहुत प्रभावित हुए।

जब वह जाने लगे, तो उन्होंने विजयवीर को कुछ बीज भेंट स्वरूप दिए। उन्होंने बताया—"इन बीजों से पनपने वाला पौधा बढ़ कर कल्प वृक्ष बन जाएगा। श्रद्धापूर्वक पेड़ से जो भी मांगोगे, मिल जाएगा।" पर साथ ही उन्होंने यह भी कहा—"पेड़ के गुणों के बारे में किसी को कुछ न बताना, अन्यथा इसका प्रभाव समाप्त हो जाएगा। और हां, पेड़ से चाहे जो मांग सकते हो पर अपनी आयु नहीं बढ़वा सकोगे।"

संन्यासी बीज देकर चले गए। राजा विजयवीर के आदेश पर सेवकों ने महल के उद्यान में उन बीजों को बो दिया। कुछ समय बीता, जगह-जगह बोए गए बीजों में से केवल एक ही अंकुरित हुआ। एक ही पौधा पनपने-बढ़ने लगा।

महाराजा ने उस पौधे की विशेष देख-रेख के आदेश दिए। उसके चारों ओर ऊंची बाड़ सुरक्षा की दृष्टि से लगा दी गई। धीरे-धीरे पौधा पेड़ का रूप लेने लगा। उस पर चिड़ियों ने घोंसले बना लिए, किंतु अभी फल नहीं लगे थे।

महारानी अच्छी तरह जान गई थीं, महाराजा पेड़ का विशेष ध्यान रखते हैं। अब तो वह भी पेड़ की विशेषता जानने के लिए बेचैन हो गईं। लेकिन बार-बार पूछने पर भी राजा ने उन्हें कुछ न बताया। कैसे बताते ? संन्यासी ने निषेध जो किया था। बस, वह इतना कहकर टाल देते—"यह पेड़ संन्यासी द्वारा मिले बीजों से उगा है। राज्य के लिए शुभ है।" उन्होंने अपने इकलौते बेटे राजकुमार प्रताप को भी पेड़ का विशेष ध्यान रखने को कहा था। प्रताप भी मां की तरह पेड़ के गुण जानने को बेचैन था।

एक दिन राजा ने रानी और राजकुमार से कह भी दिया—"पेड़ के गुण जानने के लिए हठ का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं है। राज्य के कुछ ऐसे विशेष भेद भी होते हैं, जो केवल राजा की जानकारी में ही होते हैं।"

महाराजा विजयवीर के गुप्तचरों ने उन्हें सूचना दी थी कि पड़ोसी राजा उस पेड़ का भेद जानने के लगातार प्रयास कर रहा था। क्योंकि चंद्रपुरी पर हर आक्रमण में अपनी पराजय के लिए वह उस पेड़ को ही कारण मानता था।

कुछ समय बाद पेड़ पर फूल लगे। अब तो रानी का हठ और भी बढ़ गया। एक दिन उन्होंने राजा से साफ-साफ कह दिया कि पेड़ पर लगने वाले सबसे पहले फल का स्वाद वही चखेंगी। महाराजा विजयवीर ने उन्हें फिर समझाया पर कोई प्रभाव न हुआ। आखिर उन्होंने वचन दिया कि जैसे ही पेड़ से कोई फल गिरेगा,वह मंगवाकर रानी को दे देंगे। राजा के आदेश से पेड़ की सुरक्षा और भी कड़ी कर दी गई। यह भी आदेश दे दिया गया—'पेड़ पर लगने वाले फलों को उनकी आज्ञा के बिना न तोड़ा जाए। न ही नीचे गिरा हुआ कोई फल उठाया जाए।'

एक दिन सेवकों ने सूचना दी कि पेड़ से एक फल टूटकर नीचे गिरा है। राजा ने तुरंत उस फल को मंगवाकर रानी को दे दिया। साथ ही फिर कहा—"इस फल को खाने का अपना हठ छोड़ दो।" पर महारानी ने एक न सुनी।

रानी ने फल के तीन हिस्से किए। एक हिस्सा प्रताप को दिया और एक अपने भाई को। फिर बाकी बचा फल स्वयं खा लिया। फल खाते ही तीनों अत्यंत बेचैनी अनुभव करने लगे। उन्हें ज्वर हो गया। तीनों की दशा बिगड़ने लगी। चिकित्सकों ने ज्वर कम करने की औषधियां दीं, पर कोई लाभ न हुआ। वैद्यों ने राजा से कहा कि वे ज्वर का कारण नहीं समझ पाए हैं। क्योंकि जो फल खाया गया है, उसके बारे में कुछ पता नहीं है। उन्होंने सब औषधियां देकर देख ली हैं। किसी से कोई लाभ नहीं दिखाई दे रहा था।

रानी, प्रताप और रानी के भाई की दशा खराब होती गई। यह देख, महाराजा बहुत चिंतित हो उठे। वह मानते थे कि यह सब रानी के हठ के कारण हुआ है। उन्होंने यह बात रानी से कह भी दी। रानी ने कुछ न कहा, उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

विजयवीर ने कहा—"भविष्य में इस तरह के हठ न करने का वचन दो। मैं तुम्हें और राजकुमार को बचाने का प्रयास करूंगा, लेकिन तुम्हारे भाई को नहीं। क्योंकि वह पड़ोसी राजा से मिलकर चंद्रपुरी के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है। उसी ने तुम्हें पेड़ का रहस्य जानने के लिए उकसाया था।"

विजयवीर के कानों में संन्यासी के शब्द गूंज रहे थे—'श्रद्धापूर्वक इस पेड़ से जो भी मांगोगे, मिल जाएगा।' वह तुरंत उस वृक्ष के नीचे जा खड़े हुए। हाथ जोड़कर आंखें मूंद लीं। संन्यासी को मन ही मन प्रणाम किया। महारानी और प्रताप की जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगे।

सचमुच पेड़ महाराज के लिए कल्पवृक्ष सिद्ध हुआ। उनकी प्रार्थना के बाद रानी और राजकुमार स्वस्थ होते चले गए। महाराजा ने एक और कामना की थी—पेड़ पर ऐसे घातक फल न उगें जिन्हें खाने वाले के प्राण संकट में पड़ जाएं। अगली सुबह राजा ने देखा कि पेड़ पर एक भी फल नहीं था। जमीन पर टूटकर गिरे फल भी गायब हो गए थे। जैसे किसी ने जादू से उन्हें लोप कर दिया था।
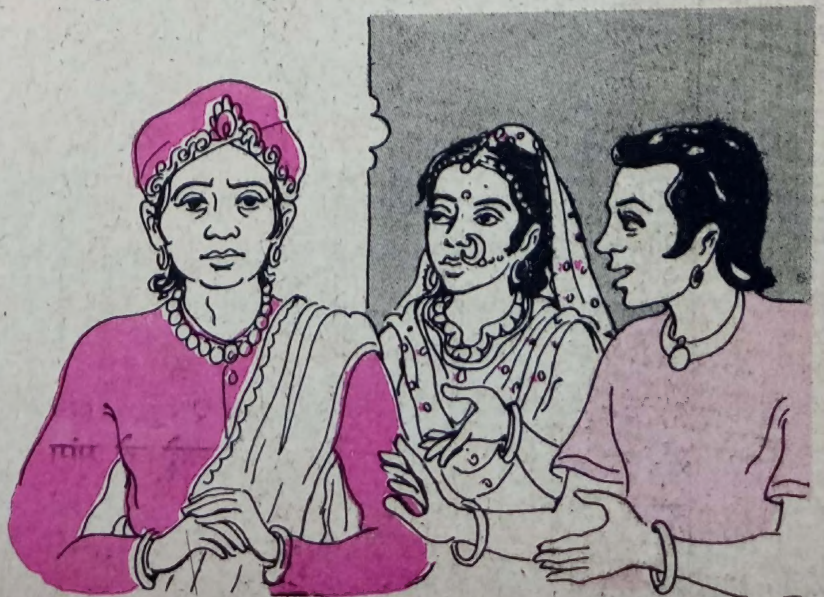
वृक्ष पर दोबारा फल नहीं आए। समय बीतता गया। राजा के अतिरिक्त बाकी सबके लिए पेड़ एक गूढ़ रहस्य बना रहा। एक बार राजा विजयवीर बीमार हो गए। अच्छे से अच्छे इलाज के बावजूद उनका रोग ठीक न हुआ। रानी बहुत परेशान थीं। हर समय रोती रहतीं। एक दिन उन्होंने विजयवीर से कहा—"महाराज, मैं जानती हूं आपने मेरे और प्रताप के प्राण कैसे बचाए थे। यह पेड़ का चमत्कार था। तब फिर आप अपने लिए पेड़ से प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे हैं? कौन सी प्रार्थना की थी आपने?"

महाराजा चुपचाप सुनते रहे। वह महारानी की चिंता समझ रहे थे। लेकिन पेड़ के गुणों के बारे में किसी से कुछ नहीं कह सकते थे। वह पेड़ से अपने को स्वस्थ करने की प्रार्थना भी नहीं कर सकते थे। संन्यासी बाबा कह गए थे कि वह पेड़ से अपनी उम्र नहीं बढ़वा सकेंगे।

उसी दिन राजा ने प्रताप को अपने पास बुलवाया। उसे सदा पेड़ का ध्यान रखने को कहा। इस बार प्रताप ने पेड़ का रहस्य जानने की जिद नहीं की। प्रताप को तो यह विश्वास हो चुका था कि पेड़ में कोई चमत्कार नहीं है। क्योंकि वह अपनी मां के साथ जाकर पेड़ से पिता का जीवन बचाने की प्रार्थना कई बार कर चुका था, पर विजयवीर के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ था।

मृत्यु शैय्या पर पड़े राजा ने प्रताप से कहा—"मैं पेड़ के अंतिम दर्शन करना चाहता हूं। मुझे वहां ले चलो।" सेवकों के सहारे वह पेड़ तक पहुंचे। उन्होंने हाथ जोड़कर आंखें मूंद लीं। वह मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे। रानी और प्रताप ने समझा शायद राजा पेड़ से अपने दीर्घ जीवन की कामना कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं था। राजा तो पेड़ से कुछ और ही मांग रहे थे—'तुम आगे भी इसी तरह रहस्यमय बने रहना। राज्य की रक्षा करना।'

कुछ देर बाद पेड़ के नीचे ही राजा ने प्राण त्याग दिए। उनके होठों पर संतोष की मुसकान थी। •

राजा से कहो

—कदीर जावेद 'प्रेमी'

एक बुढ़िया दो दिन से भूखी थी। घर में खाने को कुछ था नहीं। दो दिन पहले थोड़े-से चावल खाए थे नमक के साथ, पर पेट नहीं भरा था। और उसके बाद से तो पानी का ही सहारा था।

तभी उसने बाहर दो लोगों को बातें करते सुना—"सुना है, पास वाले गांव में अपने राजा आए हुए हैं।"

— "हां, वह बड़े दयालु हैं।"

बुढ़िया सोचने लगी—'काश में राजा से मिल पाती।' वह निराश बैठी थी तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। उसने देखा, बाहर एक सुंदर-सा व्यक्ति खड़ा था।

—"माई, पानी पिला दो।"

बुढ़िया ने उसे पानी पिला दिया। वह व्यक्ति बोला—"सुना है, यहां का राजा बड़ा दयालु है।"

—"जिसके लिए होगा, वह जाने। मैं तो दो दिन से भूखी पड़ी हूं। राजा चैन से तर माल खाता है। उसे मेरे बारे में कुछ पता न होगा।"

— "क्या तुमने कभी राजा को अपना हाल बताया?"

—"मैं भला इतनी दूर कैसे जाती? क्या राजा को पता नहीं कि उसके राज्य में गरीब भी रहते हैं। उसे उनकी खोज-खबर रखनी चाहिए।"

वह आदमी नरम स्वर में बोला—"माई, इतने बड़े राज्य में राजा भला किस-किस की खबर ले।"

—"नहीं ले सकता, तो सिंहासन छोड़ दे।"

वह व्यक्ति कुछ सोचकर बोला—"जो तुमने कहा है, मैं अपने राजा को बताऊंगा।" और चला गया।

बुढ़िया को पता नहीं था कि वह राजा से ही बात कर रही थी। वह गरीबों का हाल-चाल लेने के लिए ही वेश बदलकर निकला था। राजधानी पहुंचकर राजा ने बुढ़िया के पास अनाज और कुछ धन भिजवा दिया। अब वह चैन से रहने लगी। •
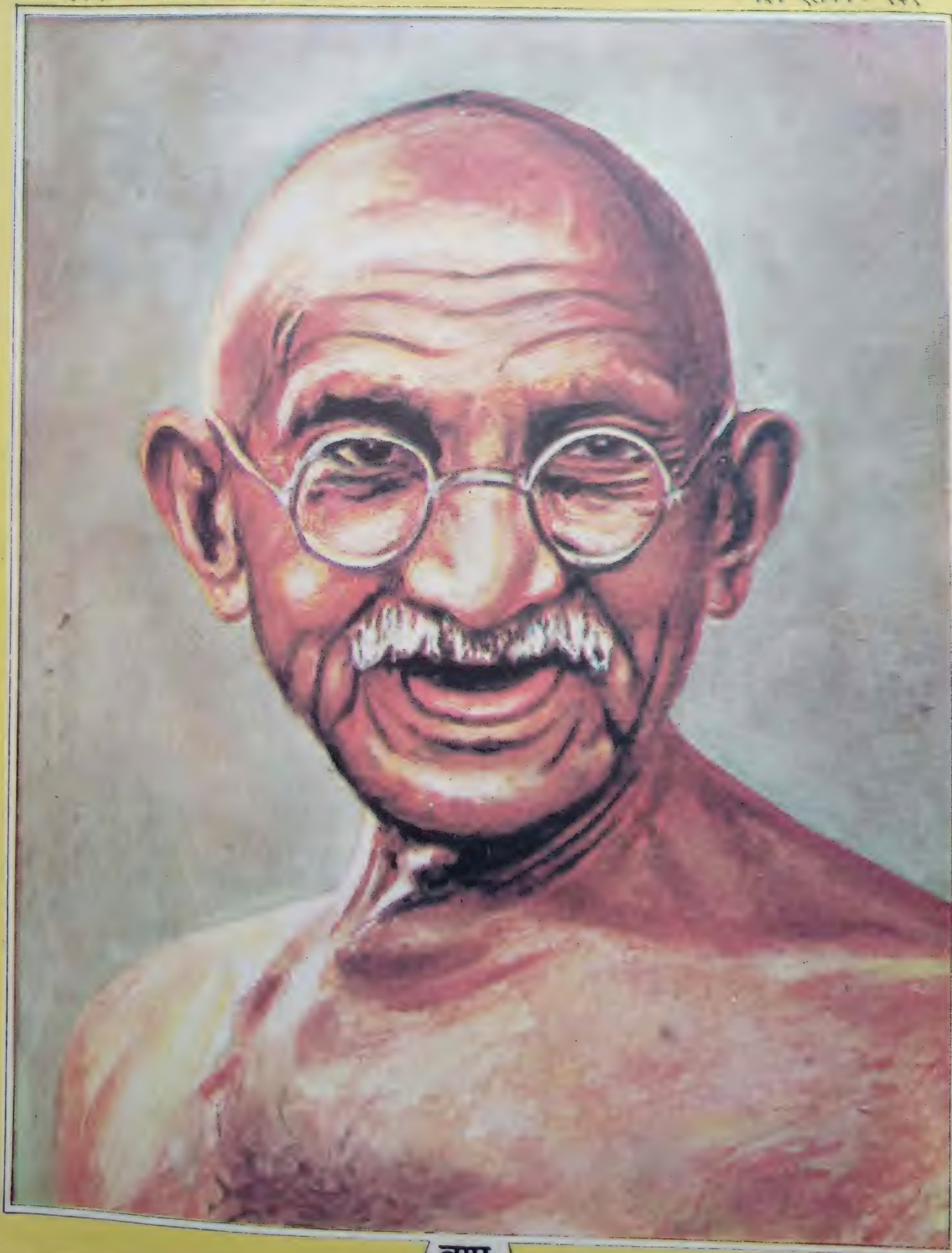
बापू

सागर की बेटी

— रचना कुमार

कृष्ण सागर का तट बहुत सुहाना है । वहां समंदर का पानी अधिक उछल-कूद नहीं करता । ऊंची-ऊंची लहरें शायद कभी भूले से ही उठती होंगी । वहीं पर मछुआरों की बस्ती है । उस बस्ती में हमजा भी रहता था । छोटा-सा घर, घर में माता-पिता और एक भाई— बस । हमजा ने जब से होश संभाला, तभी से सागर को देखने लगा । उसके पिता तथा बस्ती के दूसरे लोग नावों में सवार हो, मछलियां पकड़ने जाया करते । हमजा थोड़ा बड़ा हो गया, तो वह भी पिता के साथ जाने लगा ।

कई बार काफी मछलियां हाथ लग जाती थीं । लेकिन कभी-कभी कोई अटपटी चीज जाल में आ फंसती । न जाने कितने किस्से, किस-किसके किस्से समंदर से जुड़े थे । चांदनी रात में आने वाली जलपरी की कहानी कोई सुनाता, तो कोई जल-राक्षस के बारे में

बताता । लेकिन सभी इतना तो मानते थे कि जल देवता को नाराज नहीं करना चाहिए । तरह-तरह से उसे खुश रखने के उपाय भी बस्ती के लोग करते ।

हमजा अब बड़ा हो गया था । नाव में सवार होकर वह अकेला भी मछलियां पकड़ने जाने लगा था । वह गठे हुए बदन का सुंदर नौजवान था, लेकिन बस्ती के लोगों से कुछ अलग तरह का । कभी किसी से झगड़ा-झंझट न करता । इतना ही नहीं, कोई मुसीबत में होता, तो आगे बढ़कर उसकी मदद किया करता था ।

एक दिन हमजा अपनी पुरानी नाव में बैठकर मछलियां पकड़ने निकला । इधर-उधर काफी भटकता रहा, लेकिन कुछ हाथ न आया । दिन ढलने लगा, तो उसके जाल में एक कछुआ आ फंसा । वहां के लोग मानते थे कि कछुआ मारना पाप है । वह जल देवता का प्रिय जीव है । हमजा ने आव देखा न ताव, उस कछुए को फिर से समंदर में छोड़ दिया ।

हमजा बहुत थक गया था । वहीं छोटे से सुनसान द्वीप पर उसने नाव लगा दी । ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी । हमजा सुस्ताने को लेटा, तो नींद ही आ गई ।

छमा-छम छम -छमा, छम-छम, छम्मक-छम्मक करती हुई एक सजी-धजी युवती पानी से बाहर निकली । उसे बाहर निकलते किसी ने देखा नहीं । कौन देखता वहां । वह हमजा की नाव के पास आई । उसे छुआ, तो टूटी-फूटी नाव जैसे नई-निकोर हो गई । तभी युवती हमजा के पास आ गई । वहीं बैठ गई । उसने धीरे से हमजा को जगाया । हमजा जागा, लेकिन उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह सचमुच जाग गया है । झिल-मिल करती युवती को देख, वह शरमा गया । कुछ डरा भी, लेकिन तभी वह बोली— "हमजा, मैं जल देवता की बेटी हूं । मेरे पिता तुमसे प्रसन्न हैं । तुमने दया करके कछुए को छोड़ दिया । अब तुम मेरे साथ महल में चलो । वहां हरदम सुहावना मौसम रहता है । तुम खूब मौज से वहां रह सकोगे ।" हमजा तो झटपट खड़ा हो गया । युवती ने हमजा का हाथ पकड़ा । उसे अपने साथ ले चली ।

समंदर और मछलियां— इतना ही हमजा जानता था । लेकिन वे दोनों जैसे-जैसे आगे बढ़ने लगे, अनेक मछलियां दिप-दिप करके उनकी राह पर रोशनी करने लगीं । मछलियों के कुछ झुंड उसने देखे—सुनहरी, लाल, पीली तथा सतरंगी मछलियां देखीं । तरह-तरह के ऐसे जीव भी देखे, जो उसने पहले कभी न देखे थे ।

आगे जाकर जल देवता के खजाने थे—कहीं मोती ही मोती दूर तक बिछे थे, तो कहीं नीलम-लाल-पुखराज, तो कहीं सोने का भंडार था । ऐसी अकूत दौलत देखना तो दूर, हमजा की कल्पना से बाहर की बात थी ।

कुछ समय बाद वे महल के द्वार पर पहुंचे । वहां राक्षस जैसे कई जीव पहरा दे रहे थे । शार्क का मुंह खुला हो, इस तरह का बड़ा द्वार था । वे भीतर गए, तो उनके स्वागत में संगीत गूंज उठा । यह संगीत ऐसा मधुर था कि उसे सुनते-सुनते नींद आने लगे । महल के भीतर पहुंचने पर अनेक जल-परियों ने उन्हें घेर लिया । वे तरह-तरह की खाने-पीने की चीजें लिए हुए थीं । हमजा ने खूब डटकर खाया और सो गया । न जाने कब तक सोता रहा । जागा तो जल देवता की बेटी उसके सामने खड़ी थी । वहां उसे सब 'मयना' कहते थे ।

मयना हमजा को अपने पिता के पास ले गई। देवता प्रसन्न होकर हमजा से मिले। उसे आशीर्वाद दिया। उसे महल में रख लिया। हमजा मानो स्वर्ग में रहने लगा। कोई काम-काज नहीं। खाने-पीने को भरपूर, सभी तरह से सुखी। मयना उसे सैर-सपाटे को ले जाती। वह जो चाहता, वही हाजिर हो जाता।

समय बीतता गया,बीतता गया। हमजा को घर की याद सताने लगी। कई बार वह मयना के घर के बारे में बातचीत करना चाहता, तो वह टाल जाती। लेकिन एक दिन उसने जी कड़ा करके, अपने घर जाने की बात कही।

मयना बोली—''जो इस राज्य में आ गया, वह पृथ्वी पर वापस नहीं जा सकता। तुम वह सब भूल जाओ।''

हमजा अपने परिवार को भूल न पाता। उसने किसी तरह मयना को इसके लिए मना लिया कि वह कुछ उपहार अपने घर भेज सके। मयना ने बूढ़े कछुए को इसके लिए तैयार किया, क्योंकि कछुए की कई मछुआरों से दोस्ती थी। मछुआरे हमजा और उसके बाप को जानते थे। इस तरह उसने ढेरों कीमती उपहार भिजवा दिए।

लेकिन घर से बहुत दूर चले जाने पर भी घर की याद बिसरती नहीं। रह-रहकर घर, उसमें रहने वाले लोग और वहां की एक-एक चीज सामने आया करती हैं। आखिर तय हुआ कि मयना बूढ़े कछुए की मदद लेगी। मां अगर आने को तैयार हो गई, तो निर्जन द्वीप तक नाविक उसे पहुंचा देंगे। फिर मयना उसे महल में ले आएगी।

और ऐसा ही हुआ। हमजा की मां भी जल देवता की नगरी में रहने को आ गई। हमजा को इससे कितनी खुशी हुई, कैसे बताए। मां तो मां थी। वह तरह-तरह की चीजें बनाती और सबको खिलाती। मीठे-मीठे गुलगुले बनाए, तो सबने बहुत ही शौक से खाए। जल-देवता, जल-परियां तथा महल के दूसरे कर्मचारी गुलगुलों की खूब प्रशंसा करते रहे। हमजा और उसकी मां अब पराए नहीं समझे जाते थे। वे सबके दुःख-सुख में भागीदार रहते थे। हमजा के यहां भंडारा खुला रहता था। मां काई, शैवाल और पौधों से बहुत-सी खाने की चीजें तैयार करती रहती। कितने ही जीव अब अपने से छोटे जीवों को नहीं मारते थे क्योंकि पेट भरने के लिए उन्हें मां की रसोई में भरपूर खाना मिल जाता। हमजा का स्वभाव था, हर किसी की मदद करना। वहां के निवासी उसे 'दोस्त हमजा' कहने लगे थे।

मछुआरों की जिस बस्ती में हमजा का बचपन बीता था, उसके भी भाग्य जाग गए थे। अब वहां लोग नहीं जानते थे, गरीबी क्या होती है। मयना ने समय-समय पर उनकी खूब मदद की थी। वह बहुत-सी चीजें उनसे मंगवाया करती थी और बदले में कई गुना कीमती सामान भिजवा दिया करती थी।

समय के साथ-साथ जल-देवता बूढ़े हो चले थे। उनका कोई बेटा नहीं था। हमजा को वह बहुत चाहते थे। हमजा ने भी सागर के निवासियों को पूरी तरह अपना बना लिया था। जल-देवता ने तय किया कि वह अपना सिंहासन हमजा को सौंप देंगे। एक इंसान ने अपने कामों से देवता का पद पा लिया था।●

खींचा हाथ

— डा. सुरेंद्रकुमार 'महाचंद्र'

महाराजा भोज के राज्य में एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। वह कभी किसी से कोई वस्तु नहीं मांगता था। बिना मांगे जो मिलता, वह उसी से गुजारा कर लेता था। एक बार कई दिनों तक उसे किसी ने कुछ भी नहीं दिया।

ब्राह्मण भूख से बहुत व्याकुल हो गया। उसने विचार किया कि भीख मांगने से तो चोरी कर लेना अच्छा है। ऐसा विचार कर, ब्राह्मण रात में राज भवन में घुस गया। ब्राह्मण ने वहां देखा— सेवक सो रहे हैं। सोने-चांदी के बर्तन और बहुमूल्य वस्तुएं इधर-उधर पड़ी हैं। उसने सोने का एक बर्तन उठाना चाहा। तभी उसने सोचा— 'स्वर्ण-चोर नरकगामी होता है। सोने की चोरी करना महापाप है।'

ऐसा विचार आते ही ब्राह्मण ने अपना हाथ खींच लिया। वस्त्र, रत्न, पात्र, अन्न आदि जिस वस्तु को वह उठाने की सोचता, उसका शास्त्र ज्ञान उसे उस चीज से सम्बंधित पाप से अवगत करा देता था। इसी उधेड़-बुन में रात बीत गई। मगर वह चोरी नहीं कर सका।

भोर हो गई। अब ब्राह्मण के लिए भागना मुश्किल था। वह पकड़े जाने के डर से भोज के पलंग के नीचे घुस गया।

कुछ देर में रानियां व दासियां सज-धजकर जल की झारी व अन्य वस्तुएं लेकर वहां आ गईं। अनेक स्त्री, पुरुष व परिवार के सदस्य प्रातः कालीन अभिवादन के लिए द्वार पर इकट्ठे होने लगे।

राजा भोज की नींद खुल गई। उन्होंने जन समुदाय पर नजर डाली। वह अपने ऐश्वर्य को देख, मन में इतराने लगे। बोले— "मेरे राज्य में सब कुछ है। धन-सम्पदा का यहां अभाव नहीं है।"

इतना कहकर राजा रुक गए। तभी पलंग के नीचे छिपे ब्राह्मण ने कहा— "नेत्र बंद हो जाने पर सारा वैभव धरा रह जाता है।"

राजा भोज ने यह आवाज सुनी, तो चौंके। उन्होंने सेवकों को पलंग के नीचे से ब्राह्मण को निकालने का आदेश दिया। ब्राह्मण पलंग के नीचे से निकल आया। वह सिर झुकाकर राजा भोज के सामने खड़ा हो गया।

राजा भोज ने उससे राज भवन में चोरी-छिपे आने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने कहा— "महाराज, मैं गरीबी से तंग होने के कारण यहां चोरी करने आया था।" राजा ने पूछा— "फिर तुमने चोरी क्यों नहीं की?"

ब्राह्मण ने कहा— "राजन, मैं जब चोरी करने के लिए हाथ बढ़ाता, तभी मेरा शास्त्र ज्ञान मुझे रोक लेता था। अतः अवसर मिलने पर भी मैं चोरी नहीं कर सका।"

राजा भोज ब्राह्मण के शास्त्र ज्ञान और उसकी सच्चाई से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ब्राह्मण को मालामाल कर दिया। ●

फकीर की दौलत

—हेमचन्द्र जोशी

चांग संगमरमर की खदानों में मजदूरी करता था।

एक दिन खदान में वह अपने साथियों के साथ पत्थर तराश रहा था। तभी वहां से एक फकीर गुजरा। फकीर बहुत प्यासा व थका हुआ था। अतः चांग व उसके साथियों को देखकर उसने लड़खड़ाती आवाज में पूछा—''क्या आसपास कहीं पानी मिल सकता है ? मैं बहुत प्यासा हूं।'' उसने ललचाई निगाहों से उनके पानी के बर्तनों को देखते हुए कहा।

वहां कहीं पानी न था। सभी मजदूर भोजन व पानी अपने घरों से साथ लाते थे। पर कोई भी अपने पास के पानी को फकीर के साथ बांटना नहीं चाहता था। इसलिए कुछ ने तो उसकी बात ही अनसुनी कर दी। बाकियों ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया। पर दयाल चांग से न रहा गया। उसने सोचा, यदि बूढ़े को शीघ्र ही पनी न मिला, तो वह प्यासा मर जाएगा। अतः चांग ने उस बूढ़े को अपने पास बुलाया। फिर उसे भोजन और पानी दिया। बूढ़े फकीर की आत्मा तृप्त हो उठी। उसकी प्यास के साथ भूख भी मिट चुकी थी। उसने खुश होकर कहा—''बेटा, तुम दिल के बहुत धनवान हो। एक दिन पाषाण देवता तुम्हारी निर्धनता को जरूर दूर करेंगे।''

बूढ़े फकीर की बात सुनकर चांग बहुत प्रसन्न हुआ। दिन भर की मेहनत के बाद वह शाम को भूखा-प्यासा अपने घर पहुंचा। उसने पूरी घटना अपनी मां को सुनाई। बातें सुनकर चांग की मां उसकी नादानी पर दुखी हुई। पर वह जानती थी कि चांग दुखियों की सहायता किए बिना नहीं रह सकता।

चांग ने पूछा—''मां, यह पाषाण देवता कौन हैं ?''

मां उसकी बात सुनकर घबरा गई। उसने चांग को ढेर सारी बातें बताईं और कहा—''बेटा, नायूथ-ला के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले निवासियों के इष्ट देवता को पाषाण देवता के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि रूठ जाने पर वह सर्वनाश, और प्रसन्न होने पर धन-धान्य से परिपूर्ण कर देते हैं।''

इस घटना को घटे कुछ दिन बीत गए। एक दिन झुलसती गर्मी में सब लोग काम कर रहे थे। उन्होंने देखा कि पत्थरों के बीच एक पीपल के वृक्ष का ठूंठ खड़ा था। सभी आश्चर्य चकित थे। पहले किसी ने भी वहां कोई पेड़ का ठूंठ नहीं देखा था।

किसी ने इस बारे में ज्यादा नहीं सोचा। किंतु दयालु चांग के मन में विचार आया— 'काश ! यहां पर एक हरा-भरा वृक्ष खड़ा होता, तो हम सब पेड़ के नीचे खाली समय में विश्राम कर सकते थे।' यह सोचकर चांग अब रोज भोजन के बाद कुछ पानी वहां डाल देता। उसको आशा थी कि पानी से पेड़ का ठूंठ एक दिन अवश्य हरा-भरा हो जाएगा।

फिर एक दिन चांग को आश्चर्य हुआ। पीपल के ठूंठ से नन्हे-नन्हे अंकुर फूटने लगे। अब वह अपने साथियों को भी पानी डालने के लिए कहता। चांग के साथी सदैव उसका मजाक उड़ाते थे। पर चांग उनकी बातों में ध्यान न देकर नियमित रूप से पीपल के पेड़ की सेवा करने लगा। वह अपने साथियों के पास का बचा पानी भी पेड़ के नीचे डालता रहता था और एक बूंद पानी की भी बर्बादी नहीं होने देता था।

दिन बीतते गए, किंतु चांग ने अपना क्रम न छोड़ा। फिर एक दिन एक आश्चर्यजनक घटना हुई। चांग पीपल के पेड़ के नीचे पानी डालकर अकेला लौट रहा था। उसे रास्ते में वही फकीर मिला। चांग ने सोचा कि वह आज भी भूखा-प्यासा होगा। उसने फकीर से कहा—"बाबा, आज मेरे पास न तो भोजन है और न ही पानी। मुझे माफ कीजिएगा।"

फकीर ने रहस्यमय मुसकान के साथ कहा—"मैं प्यासा नहीं हूं। मेरी प्यास तो तुम रोज ही बुझाते हो। पर मैं तुमसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं।"

"प्रश्न ! और मुझसे ?" चांग ने आश्चर्य से कहा—"पूछिए, अगर मैं बूझ सकूंगा, तो उत्तर जरूर दूंगा।"

फकीर ने पूछा—"तुम क्यों रोज इस पेड़ के ठूंठ में बचा हुआ पानी डालते हो ?"

चांग ने कहा—"बस, इतनी सी बात ! बाबा मैं चाहता हूं कि यह एक बड़ा-सा, हरा-भरा पीपल का वृक्ष बन जाए, ताकि हम सब झुलसती गर्मी में उस पेड़ के नीचे आराम कर सकें।"

"तुम सब ! मतलब तुम्हारे साथ ये निकम्मे और लालची भी मेरी छाया में विश्राम करेंगे ? मैं ऐसा कदापि नहीं होने दूंगा।" —बूढ़े फकीर ने गुस्से से कहा।

"क्या मतलब बाबा ? मैं कुछ समझ नहीं पाया।" —चांग ने आश्चर्य से पूछा।

"तुम इस बात को छोड़ो। पर इस मेहनत से तुमको क्या फायदा होगा ?" —फकीर ने पूछा।

चांग ने परेशान होकर कहा—"बाबा, मैं ढेर सारे पेड़ों के फल खाता हूं। कितने ही वृक्षों के नीचे मैंने धूप, वर्षा और तूफान में आश्रय लिया है। वे वृक्ष भी तो किसी ने लगाए ही होंगे। एक अच्छा मनुष्य सभी काम सिर्फ अपने फायदे के लिए ही नहीं करता है। मैं सोचता हूं कि एक दिन यह वृक्ष बड़ा हो जाएगा। फिर मेरे साथी और मार्ग से गुजरने वाले यात्री इसके नीचे कभी-कभी विश्राम किया करेंगे।"

बूढ़ा फकीर बड़बड़ाया—"मैं आलसी और स्वार्थी लोगों की सहायता नहीं करना चाहता। पर तुम्हारी बात कुछ और है। लाओ, जरा अपनी झोली फैलाओ।"

चांग ने डरते-डरते अपने सिर में लपेटा गमछा खोला। फिर गमछे को फकीर के सामने फैला दिया। वह बूढ़े की रहस्यमय बातों से भयभीत था। उसकी मां ने उसे कितनी ही बार हिदायत दी थी। उसे बूढ़ी मां की बात याद आ रही थी— 'चांग, संगमरमर की चट्टानों में पाषाण देवता के दूत विचरते हैं।' डर के मारे उसकी आंखें बंद हो गईं।

खन-खन-खन की आवाज के साथ उसने आंखें खोलीं। उसकी झोली में ढेर सारे सोने के सिक्के व जवाहरात पड़े थे। उसने आश्चर्य से चारों ओर देखा। बूढ़ा धीरे-धीरे पेड़ की ओर बढ़ा और पेड़ के अंदर ही जा समाया।

आश्चर्य ! अब वहां पर कोई वृक्ष न था। चांग ने अचकचाकर आंखें मलीं। फिर वह खुशी-खुशी अपने घर लौट गया। फकीर की दी गई दौलत से चांग ने व्यापार किया और ढेर सारी दौलत कमाई। उसने खूब पैसा लोगों में भी बांटा। पर पाषाण देवता की भांति किसी आलसी, लालची व कामचोर की उसने कभी कोई सहायता नहीं की। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट।**

कहानी लिखो : १३१

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे **१० अक्तूबर, १९९४** तक **'कहानी लिखो' नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी।

परिणाम : दिसम्बर '९४

चित्र-पहेली : १३१

'सड़क पर सावधान'— विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना नाम, उम्र और पता साफ-साफ लिखिए। उसे **१० अक्तूबर '९४** तक **नंदन** कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद किया गया चित्र नंदन में छपेगा, पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : जनवरी, १९९५

पहाड़ी बाबा

—किरणकुमारी

बहुत पहले की बात है । उत्तराखंड में भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम पर एक छोटे-से पहाड़ी गांव में मां दुर्गा का एक मंदिर था । शिवांग नामक इस गांव के निवासी किन्नर जाति के थे ।

कड़ाके की ठंड के दौरान जब ऊपरी हिमालय बर्फ से ढक जाता था, तो एक साधु बाबा शिवांग के इस मंदिर में आकर कुछ दिन रहते थे । उनकी उम्र का अंदाजा लगा पाना कठिन था । गांव के बड़े-बूढ़े उनको उसी रूप में अपने बचपन से देखते आ रहे थे । सभी उनको 'पहाड़ी बाबा' कहकर पुकारते थे और उनका बहुत आदर करते थे ।

पहाड़ी बाबा छरहरे शरीर के, गौर वर्ण व्यक्ति थे । उनके अंगों से तेज छलकता था । उनकी सुंदर, लम्बी, सफ़ेद दाढ़ी चांदी की तरह चमकती थी ।

गांव वाले यह देखते थे कि पहाड़ी बाबा जब मंदिर में आते थे, तब गांव में खुशहाली बढ़ जाती । उनके छोटे-छोटे, सीढ़ीनुमा खेतों में फसलें अच्छी होतीं । आलू, सेब तथा अन्य फल भी खूब होते । गांव में बीमारों की संख्या घट जाती और हवन सामग्री की गंध चारों तरफ हमेशा व्याप्त रहती । उनके गांव से जाने के बाद हालात बदल जाते, लेकिन उस गांव में कभी अकाल नहीं पड़ता था ।

एक बार जब साधु बाबा आए, तो गांव का एक छोटा बच्चा उनके पास रोज दोपहर को अपनी बकरियां लेकर आने लगा । जब बाबा अपने ध्यान में मग्न रहते, तो वह उन्हें बैठकर निहारता रहता । जब लगातार कई दिनों तक ऐसा ही हुआ, तो बाबा ने उससे पूछा—''पुत्र, तुम रोज यहां क्यों आते हो ? तुम्हें क्या चाहिए ?''

उस बालक का नाम गणेश था । उसने कहा—''बाबा, कुछ दिन हुए, मेरे माता-पिता,दोनों ही गुजर गए । मैं इस गांव में , अपनी मौसी के पास आ गया । अब मैं उसकी बकरियां चराता हूं । उसके कई बच्चे हैं और कोई पढ़ता नहीं । वह बहुत ही गरीब है । मेरा बोझ भी बढ़ गया है । लेकिन बाबा, मैं इस गांव में नहीं रहना चाहता । मैं पढ़ना चाहता हूं और डाक्टर बनना चाहता हूं । क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं ?''

साधु बाबा चुप हो गए । बोले—''कल आना ।'' और ध्यानमग्न हो गए ।

दूसरे दिन द्वारकाधीश नामक कलकत्ते का एक बहुत बड़ा सेठ पहाड़ी बाबा के दर्शन को पहुंच गया । मां दुर्गा की पूजा-अर्चना की और बाबा का आशीर्वाद लेने उनके सामने खड़ा हो गया । उसने कहा—''बाबा, मां का दिया सब कुछ मेरे पास है । बस, एक पुत्र की कामना रह गई है ।''

बाबा ने प्रेम से उसे बैठने का संकेत दिया । तभी गणेश दौड़ता हुआ वहां पहुंच गया । सुंदर, गोल-मटोल किन्नर बालक की सुंदरता देखकर सेठ द्वारकाधीश का मन उस बच्चे को गोद में लेने को लालायित हो उठा । बाबा ने सेठ के मन की बात जान

ली और कहा—''द्वारकाधीश, यही बालक आज से तुम्हारा पुत्र है । इसे जाकर पढ़ाओ-लिखाओ । यह डाक्टर बनना चाहता है । यह लड़का तुम्हारा यश फैलाएगा । इसकी मौसी बहुत गरीब है । उसकी कुछ मदद जरूर करना ।'' इतना कहकर बाबा फिर ध्यानमग्न हो गए ।

कई वर्ष बीत गए । गणेश पढ़ने में बहुत होशियार निकला । द्वारकाधीश उसे पुत्र के समान पालते-पोसते रहे । बीच-बीच में बाप-बेटा आकर मंदिर में मां दुर्गा के दर्शन करते और साधु बाबा का आशीर्वाद लेकर चले जाते ।

कुछ समय बाद गणेश कलकत्ते का एक मशहूर डाक्टर बना । अपने पिता के नाम पर उसने एक बहुत बड़ा अस्पताल खोला । हर तरह के मरीजों का उसमें इलाज होता था । देश-विदेश के लोग अपनी बीमारियों के इलाज के लिए उस अस्पताल में आते थे । गणेश दोपहर को दो घंटे का समय, जो वह बचपन में पहाड़ी बाबा के साथ गुजारा करता था, अब गरीबों के मुफ़्त इलाज के लिए लगाता था । हर गरीब मरीज को देखने के बाद वह मन ही मन बुदबुदाता—'यह पहाड़ी बाबा के लिए ।' और जब भी कोई कठिन आपरेशन करता , मां दुर्गा और पहाड़ी बाबा को याद कर लेता । उसके कई मित्र इसके लिए

उसका मजाक भी बनाते, लेकिन वह हंसकर टाल देता ।

सेठ द्वारकाधीश अपने पुत्र की कीर्ति सुनकर आनंदित हो उठते । समाज उनकी इज्जत करता और वह खुद भी समाज सेवा में लीन रहते । उनकी अंतिम इच्छा एक सुंदर दुर्गा मंदिर का निर्माण करने की थी । उन्होंने अपने पुत्र से सलाह की और एक भव्य मंदिर का निर्माण शुरू हो गया । अनेक मजदूर दिन-रात काम करके उसे पूर्ण करने में लग गए । सेठ ने गणेश को बुलाकर कहा—''बेटा, मंदिर करीब-करीब तैयार है । तुम पहाड़ी बाबा के पास जाओ । उन्हें इस मंदिर के लिए किस तरह की मूर्ति चाहिए, यह पूछ आओ । उनसे आग्रह करो कि मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा वह स्वयं करें ।''

गणेश शिवांग गया, तो पता चला कि बाबा अभी हिमालय से नहीं आए हैं । वह मंदिर में ही चबूतरे पर आराम करने लगा । यकायक उसको झपकी आ गई और उसने देखा, बाबा उसके सामने खड़े हैं । उन्होंने कहा— 'बेटा, जल्दी निकल जाओ, वरना बर्फ में कई दिनों तक फंस जाओगे । मां की मूर्ति तुम्हें रास्ते में मिल जाएगी । प्राण-प्रतिष्ठा के लिए मैं नहीं आऊंगा, लेकिन एक ज्ञानी पुरुष को भेज दूंगा ।'

गणेश की नींद खुल गई । वह शीघ्र ही मां दुर्गा को मत्था टेक, वापस कलकत्ता के लिए रवाना हो गया । पगडंडी,जिससे उतरकर सड़क तक जाया जाता था, मंदिर की सीध में थी । वह धीरे-धीरे उतर रहा था कि सामने वाली पहाड़ी फट गई और एक बड़ी-सी चट्टान लुढ़कते हुए नीचे आने लगी । सिर्फ एक चट्टान थी । जब गणेश उसके नजदीक गया, तो उसे एक अजीब अनुभूति हुई । उसने पीछे मुड़कर मंदिर की तरफ देखा, तो उसे महसूस हुआ कि एक तेज मंदिर में वापस समा रहा है । सामने पड़ी चट्टान को देखा तो लगा, उसमें मां दुर्गा की आंखें चमक रही हैं । उसने जान लिया कि यही चट्टान मूर्ति का रूप ग्रहण कर लेगी । उसने पत्थर को कलकत्ता भिजवाने का प्रबंध किया । कलकत्ता पहुंचकर अपने पिता को सारी बात

बताई ।

वास्तुकार ने चट्टान देखी और उस पर काम करना शुरू किया । मूर्ति का रूप वैसा ही उभरने लगा, जैसा शिवांग के मंदिर में था । यह देखकर पिता-पुत्र बहुत खुश हुए ।

मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा में अभी एक महीने का समय शेष था, तभी बनारस से एक पंडित आ पहुंचे । सेठ ने उनका स्वागत-सत्कार किया । पंडित ने कहा—"मैं अभी तुरंत अकेले में आप पिता-पुत्र से बात करना चाहता हूं । मुझे पहाड़ी बाबा ने यहां पहुंचने का आदेश दिया है ।"

यह सुनकर डाक्टर गणेश को तुरंत बुला भेजा गया । तब तक पंडित जी भी स्नान-ध्यान कर चुके थे । एकांत में तीनों बैठे । तब पंडित जी ने कहा—"पहाड़ी बाबा ने मुझे स्वप्न में आदेश दिया है कि सेठ द्वारकाधीश द्वारा निर्मित मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा तुरंत करवा दी जाए । सेठ का अंतिम समय आ गया है इसलिए जल्दी-से-जल्दी तैयारी की जाए ।"

आनन-फानन में सारी तैयारियां पूरी कर दी गईं । और दूसरे दिन प्राण-प्रतिष्ठा का यज्ञ सम्पूर्ण हो गया ।

उसी रात मां दुर्गा ने द्वारकाधीश को स्वप्न में कहा—'तेरा कार्य पूर्ण हुआ । अब तू मेरे पास आ जा ।' उन्होंने बेटे को जगाकर सारी बात बताई और समाधि लगाकर बैठ गए । सुबह उनका पार्थिव शरीर मिला ।

उनके अंतिम संस्कार के बाद गणेश को स्वप्न में पहाड़ी बाबा ने कहा—'गरीबों की सेवा करते रहना । मैं उन्हीं में रहता हूं और तुम्हें रोज देखता हूं ।' डाक्टर गणेश को हर बूढ़े मरीज में पहाड़ी बाबा नजर आते थे ।

कैक्टस कैसे-कैसे

कैक्टस कांटेदार होते हैं, फिर भी इतने सुंदर कि सबकी आंखें उन पर टिकती हैं। रंग और आकार तरह-तरह के। कुछ गेंद की तरह गोल तो कुछ सांप की तरह लम्बे लहरदार, तो कुछ नाग के फन की तरह, जिन्हें नागफनी कहते हैं। कुछ में सुंदर फूल भी होते हैं। इतना सख्त जान है यह पौधा कि मजे से मौसम के उतार-चढ़ाव सहता है और अक्सर मुरझाता नहीं।

छाया : इंद्रजीत जुनेजा, अरुण बेसेकर

विश्व की महान कृतियां : कन्नड़

बधाई हो

—के. वी. अय्यर

होइसल के राजा थे विष्णुवर्धन । वह अत्यंत शूरवीर और दयालु थे। उनकी माता का नाम था महादेवी । प्रजा उन्हें राजमाता कहकर पुकारती थी । राजा की दो रानियां थीं—शांतला और लक्ष्मी देवी ।

शांतला राज्य के सेनापति मारसिंगमय्या की बेटी थी । शांतला वीणा बजाने एवं नृत्य करने में कुशल थी । लक्ष्मी शांतला की मुंहबोली सहेली थी । लक्ष्मी के पिता पंडित पेरूमले का दरबार में काफी सम्मान था । लक्ष्मी छोटी ही थी कि उसकी मां का निधन हो गया था ।

एक दिन एक गुप्तचर ने राजा को खबर दी—"महाराज, कुछ पड़ोसी राजा आक्रमण की तैयारी में हैं ।"

यह सुन, महामंत्री बोला—"महाराज, कुछ दिन पूर्व तलवन नगर का व्यापारी केतमल्ल हमारे यहां आकर बस गया है । आपने उसे शरण दी है । लगता है , इसी से वहां का राजा दामोदर नाराज है ।"

यह सुनते ही दरबार में एक युवक खड़ा हो गया। उसने कहा—"महाराज, मैं ही केतमल्ल हूं। दामोदर के अत्याचारों से वहां की प्रजा दुखी है।"

राजा ने कहा—"ठीक है ! हम शरणागत की रक्षा अवश्य करेंगे। तुम्हें देखकर लगता है कि तुम अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ हो। मैं तुम्हें अपनी सेना का दलनायक बनाता हूं।"

सेनापति ने कहा—"महाराज, नगर की सुरक्षा का भार कुंवर विष्णु एवं महामंत्री के पुत्र बोपण्ण को सौंप देना चाहिए।"

कुंवर विष्णु राज्य के पूर्व सेनापति का पुत्र था। राजा और राजमाता ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था।

महारानी शांतला और लक्ष्मी उसे अपना छोटा भाई मानती थीं। विष्णुवर्धन भी उसका पूरा ख्याल रखते थे।

राजा ने कुंवर को बुलाकर कहा—"कुंवर, हम जल्दी ही युद्ध के लिए कूच करेंगे। तुम और बोपण्ण नगर की देखभाल करना।"

राजा ने नगर की सुरक्षा का पक्का इंतजाम कर दिया और युद्ध के लिए चल दिए। होइसल की सेना शत्रुओं को रौंदती जा रही थी। चारों तरफ विष्णुवर्धन का जय-जयकार होने लगा। इस प्रकार तलवनपुर विष्णुवर्धन के अधीन हो गया।

उधर राजा विष्णुवर्धन के वहां न रहने पर कुछ शत्रुओं ने मिलकर नगर पर धावा बोलने की सोची।

गुप्तचर ने यह खबर राजमाता को दी। राजमाता ने कुंवर विष्णु और बोपण्ण को बुलाकर सारी बातें बताईं। विष्णु बोला—"राजमाता ! मुझ पर विश्वास कीजिए। शत्रु बचकर भाग नहीं पाएंगे। हम उन्हें यहां घेराबंदी नहीं करने देंगे। यहां तक पहुंचने से पहले ही हम उन्हें ठिकाने लगा देंगे।"

बोपण्ण की सेना ने मलेपों को घेरकर हरा दिया। उधर कुंवर विष्णु ने कोगों के विरुद्ध मोर्चाबंदी कर ली।

रात गहराते ही कुंवर विष्णु की सेना ने शत्रुओं पर हल्ला बोल दिया। शत्रु हड़बड़ाहट में भाग खड़े हुए। लेकिन शत्रुओं की सेना विशाल थी। इकट्ठे होकर उन्होंने चारों तरफ से कुंवर विष्णु पर हमला बोल दिया।

कोलरा वेंकटेश अय्यर—जन्म सन् १८९८। कोलरा (कर्नाटक)। कन्नड़ के ऐतिहासिक उपन्यासकार। इनके 'शांतला' और 'रूप दर्शी' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। यहां 'शांतला' का कथासार दे रहे हैं। —सं.

राजा विष्णुवर्धन ने अनेक राज्यों को जीता फिर राज्य पर आक्रमण का संदेश पाकर उन्होंने नगर की तरफ प्रस्थान किया। जैसे ही वह महल में आए, दोनों रानियों ने उनका स्वागत किया। राजा ने राजमाता की कुशलता पूछी। शांतला ने कहा—"राजमाता, पूजा गृह में हैं। कुंवर विष्णु शत्रुओं को हराने गया हुआ है।"

राजमाता पूजा कर बाहर निकलीं। तभी एक दासी ने कहा—"राजमाता ! एक सैनिक कुंवर विष्णु का समाचार लेकर आया है।"

दासी ने सैनिक को राजमाता के पास भेज दिया। राजमाता ने कुंवर विष्णु का समाचार उससे पूछा। सैनिक ने युद्ध का सारा हाल बता दिया।

शत्रुओं द्वारा कुंवर विष्णु के घेरे जाने की खबर सुनते ही राजमाता अधीर हो उठीं। बोलीं—'कुंवर, तुम्हें शत्रुओं की सेना ने घेर लिया है।' इतना कहते ही निढाल होकर गिर पड़ीं।

महारानी शांतला ने परेशान राजा को धीरज बंधाया। कहा—"महाराज, आप हिम्मत से काम लें। शत्रुओं से बदला लेना आपका कर्तव्य है।"

राजा के मन में वीरता की लहर दौड़ गई। शाम तक उनकी सेना शत्रु शिविर से कुछ दूरी पर जाकर ठहर गई।

सुबह हुई। विष्णुवर्धन आक्रमण की तैयारी में थे तभी एक सवार उनके पास आकर रुका। उसके हाथ में होइसल की पताका थी। राजा उसे देख, चौंके।

सैनिक ने राजा को प्रणाम किया। बोला—"महाराज, कुंवर विष्णु ने शत्रुओं को खदेड़

दिया है। शत्रुओं की विशाल सेना ने उनके सामने हथियार डाल दिए हैं।" विष्णुवर्धन यह सुन, हैरान थे।

कुछ देर बाद कुंवर विष्णु का रथ महाराज विष्णुवर्धन के सामने आ पहुंचा। राजा ने कुंवर को गले लगा लिया।

होइसल की विजयी सेना राजधानी आ पहुंची। कुंवर विष्णु राजमाता के कक्ष में गया। लेकिन वहां उन्हें न पाकर शांतला को देखा। कुंवर को किसी अनिष्ट की आशंका हुई। उसने कहा—"दीदी! राजमाता कहां हैं? मैं उनके दर्शन करना चाहता हूं।"

शांतला की आंखें भर आईं। किसी तरह से उन्होंने राजमाता के निधन की सूचना कुंवर विष्णु को दी। कुंवर रोते हुए बोला—"राजमाता! यह आपने क्या किया? मेरे अनिष्ट की आशंका मात्र से ही आपने प्राण त्याग दिए।"

कुछ समय बाद की बात है, एक दिन राजा विष्णुवर्धन एकांत में बैठे थे। तभी शांतला वहां आईं। उन्होंने कहा—"महाराज, आज आप इतने उदास क्यों हैं?"

"बैठो देवी।"—कहते हुए राजा गहरी सांस छोड़कर बोले—"मेरे बाद इस साम्राज्य को कौन संभालेगा? यही चिंता मुझे सता रही है।"

शांतला सारी बात समझ गई। बोली—"देव! आप चिंता न कीजिए। छोटी रानी लक्ष्मी आपकी यह चिंता अवश्य दूर करेगी।"

"शांतला, हमारे कुल में पटरानी से उत्पन्न पुत्र ही गद्दी पर बैठता है। पटरानी तुम हो, लक्ष्मी नहीं।"—राजा बोले।

— "देव! आप लक्ष्मी को ही पटरानी बना दीजिए। मुझमें और लक्ष्मी में कोई भेद नहीं है।"

यह सुन, राजा का चेहरा दमक उठा। शांतला ने कहा—"देव! आप एक-दो दिन में लक्ष्मी के साथ वेलापुर के मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करें। मैं कुंवर विष्णु के साथ शिवगंगा धाम की यात्रा पर निकलूंगी।"

कार्यक्रम के अनुसार राजा विष्णुवर्धन वेलापुर को रवाना हो गए। वहां के प्रसिद्ध चेन्नकेशव मंदिर में वह लक्ष्मी के साथ पूजा करने लगे। इधर शांतला कुंवर विष्णु के साथ शिवगंगा धाम की यात्रा पर निकल पड़ी। दोपहर तक वे पहाड़ के निकट पहुंच गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया।

शांतला के मन में भारी उथल-पुथल थी। वह लक्ष्मी से सारी बातें बता देना चाहती थी। पर वह लक्ष्मी को वेलापुर भेजते समय कुछ भी न कह सकी।

शांतला अपना सब कुछ देकर भी होइसल वंश की उन्नति देखना चाहती थी। उसके वहां रहते लक्ष्मी कभी भी पटरानी बनने का प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकती थी। इसी सोच-विचार में वह लड़खड़ाकर गिर गई। उसने पानी-पानी की आवाज लगाई।

कुंवर विष्णु ने शांतला को संभाला। फिर वह पानी लेने चला गया। तभी शांतला उठी। उसने आंखें बंद कर महाराज विष्णुवर्धन और लक्ष्मी को याद किया। भगवान का नाम लिया और नीचे कूद गई।

कुछ देर बाद कुंवर पानी लेकर लौटा, तो उसे शांतला नजर न आई। फिर उसकी नजर खाई में पड़े शांतला के शव पर जा टिकी। यह देखते ही वह होश

खो बैठा। 'दीदी-दीदी' कहते हुए उसने भी छलांग लगा दी।

कुछ देर बाद उधर से गांव वाले निकले। उन्होंने शवों को पहचान लिया। फिर उन्हें राजमहल में पहुंचा दिया।

सब हाहाकार कर उठे। राजा ने देखा, तो वह जड़ हो गए। लक्ष्मी सो रही थी। राजा ने दासी को यह समाचार देने से रोक दिया। बोले—"लक्ष्मी सो रही है, उन्हें सोने दो। यह औषधि उन्हें पिला देना, ताकि देर तक सोती रहें। अन्यथा यह समाचार सुनते ही वह भी अपने प्राण त्याग देंगी।"

दासी ने सोती हुई लक्ष्मी को औषधि पिला दी। रात घिर आई। राजा शोक में डूबे थे। वह उठे। रथ तैयार करवाया। रथ में उन्होंने शांतला का शव रखा, फिर रथ शिवगंगा धाम की तरफ हांक दिया।

कुछ घंटे बाद रथ पर्वत के नीचे पहुंच गया। उन्होंने रथ रोक दिया। शव को कंधे पर रखा। वह धीरे-धीरे पर्वत पर चढ़ने लगे। सहसा एक जगह लड़खड़ाकर गिर गए।

सुबह होते ही राजा के गायब होने का समाचार चारों तरफ फैल गया। अमात्य ने न चाहकर भी सारा समाचार लक्ष्मी को बता दिया। उसे शांतला और कुंवर विष्णु के बारे में पता चल गया। लक्ष्मी गजब की साहसी थी। उसने अमात्य से तुरंत शिवगंगा धाम चलने को कहा।

दोपहर तक वे लोग पर्वत पर पहुंच गए। उन्होंने एक जगह राजा को ढूंढ़ निकाला। वैद्य ने राजा की नब्ज टटोली। फिर बोला—"महारानी जी, महाराज जीवित हैं। आप चिंता न कीजिए।"—कहते हुए उसने राजा के घावों पर पट्टियां बांध दीं। उनके मुख पर पानी के छींटे दिए।

सहसा राजा 'शांतला ! शांतला !' कहते उठ खड़े हुए। लक्ष्मी ने राजा को थाम लिया। राजा को लगा शांतला उनके सामने खड़ी है। लक्ष्मी ने स्वयं को उनके सामने शांतला के रूप में प्रकट किया था।

राजा ने कहा—"शांतला, तुम मुझे छोड़कर कहीं नहीं जा सकतीं।"

"हां देव ! हम दोनों सदा साथ रहेंगे।"—लक्ष्मी बोली।

—"पर शांतला, तुमने तो प्राण त्याग दिए थे। तुम दोबारा कैसे आ गईं ?"

"महाराज, आप ठीक कहते हैं। मैं लक्ष्मी हूं, शांतला नहीं। मेरी मृत्यु हो गई थी। लेकिन भगवान से आपका दुःख देखा न गया। अतः उन्होंने लक्ष्मी के शरीर में ही मेरी आत्मा को प्रविष्ट कर दिया है। अभी तक मैं और लक्ष्मी दो होकर रहती थीं, अब एक हो गई हैं।"

राजा यह सुन,खुशी से झूम उठे। वह लक्ष्मी के साथ नगर को लौट चले।

धीरे-धीरे शोक के बादल छंटने लगे।

एक दिन शत्रु सामंत मल्लिकार्जुन की सेना ने होइसल राज्य की सीमा पर डेरा डाल दिया। राजा विष्णुवर्धन ने शत्रुओं को मार भगाया।

कुछ दिनों बाद विष्णुवर्धन ने अपनी नगरी में प्रवेश किया। प्रजा ने उनका जोरदार स्वागत किया। तभी दासी ने कहा—"महाराज, बधाई हो। महारानी लक्ष्मी ने पुत्र को जन्म दिया है।" यह शुभ समाचार सुन सबके चेहरे खिल उठे।

(प्रस्तुत—डा. नरेंद्र कुमार)

दशहरा

वीरों का त्योहार दशहरा।
दस दिन लीला हुई राम की
फिक्र नहीं स्कूल, काम की,
देता तीर-कमान, खिलौने,
लकड़ी की तलवार दशहरा।

रथ पर सजी सरूप – सवारी,
इधर-उधर घूमें नर-नारी,
चाट-पकौड़ी, खेल-तमाशे,
एक नया बाजार दशहरा।

विजयादशमी प्रेम सिखाती,
सच्चाई की राह दिखाती,
रघुकुल रीति बताने हमको,
आता है हर बार दशहरा।

—मधुर शास्त्री

शौक पुराना

दादा जी का शौक पुराना,
अच्छे कपड़े, अच्छा खाना।
दादा जी का धोती-कुरता,
टोपी, चश्मा वाला बाना।
दादा जी की सबसे पटती,
कभी किसी से बैर न माना।
घर पर नहीं ठहरते ज्यादा,
चलता रहता आना-जाना।
बिना मूंछ के दादा जी का,
मूंछों से बढ़ रौब जमाना!
कभी हंसाता, कभी डराता,
दादा जी का छड़ी घुमाना।
बंद नहीं होते पाया है,
दादा जी का पान चबाना!
तेजी से कुछ कह जाता है,
दादा जी का भौंह नचाना।
गुस्से में होते हैं, तब भी—
नहीं छोड़ते हैं मुसकाना!

—सुरेन्द्र पाठक

तू-तू बाजा

तू, त-त् तू करता आया
तू-तू वाला,
ऐनक ले लो, तू-तू ले लो
आया गुब्बारे वाला।
सुनकर उसकी मीठी बोली,
बच्चे दौड़े, भागे—
खेल छोड़कर उछले-कूदे
कुछ सोए भी जागे।
बच्चों के झुरमुट ने आकर
घेर लिया उसको तब,
ठहरो-ठहरो, पैसे लाते—
जाकर अम्मां से सब।
दौड़-दौड़ सब घर को आए—
मां से पैसे पाकर,
लेने लगे पसंद की चीजें,
आपस में बतलाकर।

कोई घड़ी बांधकर सबको,
समय बताता जाता,
कोई नीली-पीली ऐनक
पहन-पहन इतराता।
कोई गैस भरे गुब्बारे—
खड़ा उड़ाता जाता,
कोई तू-तू तू-तू करके
गूंज उठाता जाता।
देकर ये मनचाही चीजें,
चला गुब्बारे वाला—
आओ-बच्चो, तू-तू ले लो,
आया गुब्बारे वाला!

—कमला ओबराय

एक कटोरी पानी

रोज सवेरे मां रख देती
एक कटोरी पानी,
फुदक-फुदककर तब आंगन में
आती चिड़िया रानी।
डरते-डरते, तकते-तकते
चिड़िया चोंच डुबाती,
हल्की सी आहट पाते ही
झट से वह उड़ जाती।

फड़-फड़ करता बड़ा कबूतर
चुपके नीचे आता,
गुटर-गुटर गूं करता जाता
गर्दन खूब फुलाता।
बार-बार वह गर्दन अपनी
ऊपर-नीचे करता,
कई बार में पानी पीकर
धीरे से उड़ जाता।

कांव-कांव कर काला कौआ
पहले हमें डराता,
फिर आंगन में बड़ी शान से
धप से नीचे आता।
बड़ी चोंच में पानी भरता
मुंह ऊपर कर लेता,
जाते-जाते भरी कटोरी
पानी बिखरा देता।

—डा. शशि गोयल

भूल का फल

—पुष्पेश कुमार 'पुष्प'

मिथिला में एक कवि थे— विद्यापति । वह बड़े सरल थे । पर उनकी पत्नी बड़ी कर्कशा थी । वह भगवान शंकर के भक्त थे । प्रातः पूजा के समय आंखों में आंसू भरकर कहा करते थे— "भगवन ! आपने ऐसी जोड़ी क्यों मिलाई ? इससे अच्छा कुंआरा ही रखते, तो आपका क्या बिगड़ जाता ?" पर भगवान शंकर भी क्या करते ? कर्मों का फल तो भुगतना ही पड़ता है ।

कहते हैं—पूर्वजन्म में विद्यापति ब्राह्मण कुमार थे । वह उद्दंड और वाचाल थे । एक दिन उन्होंने एक बुढ़िया की गागर को अपना निशाना बनाया । गागर फूट गई । पानी गिर गया । बुढ़िया गुस्से से बोली— "लड़के, मैं इस जन्म में तो नहीं, अगले जन्म में तुझे देख लूंगी ।" वही बुढ़िया विद्यापति की इस जन्म में पत्नी बनी ।

एक दिन भगवान शंकर से विद्यापति का दुःख देखा न गया । वह एक गरीब युवक का रूप धर, विद्यापति के सामने उपस्थित हुए । विद्यापति को प्रणाम करके बोले— "पंडित जी, आपका नाम सुनकर बहुत दूर से आ रहा हूं । गरीब आदमी हूं । मुझे आप अपनी सेवा-टहल में रख लीजिए । आपकी बड़ी कृपा होगी । मैं घर और बाहर का सारा काम करूंगा ।" विद्यापति को उस पर दया आ गई । उन्होंने उसका नाम पूछा । युवक ने कहा— "लोग मुझे उगना कहते हैं ।" विद्यापति ने उगना को नौकरी में रख लिया ।

चैत-बैसाख के दिन थे । एक दिन विद्यापति ने सुबह-सुबह उगना से कहा— "आज मुझे नेपाल की यात्रा पर जाना है । तू भी साथ चल ।" उगना सामान का गट्ठर लिए आगे-आगे चल पड़ा । विद्यापति पीछे-पीछे चल रहे थे । कुछ ही दूर गए होंगे कि विद्यापति को प्यास लगी । उन्होंने उगना से गट्ठर रखने को कहा । उगना ने बोझ उतार कर रख दिया, तो उन्होंने अपना कमंडल उगना के हाथों में थमा दिया । कहा— "उगना, मुझे प्यास लगी है । कहीं से थोड़ा पानी ला दे !"

लेकिन वह तो जंगल था । दूर तक न कोई कुआं था और न ही कोई तालाब था । पानी मिले तो कैसे और कहां मिले ! पर भगवान शंकर तो अपनी जटाओं में गंगा लिए फिरते हैं । भला उनके लिए पानी की कमी क्यों होती ?

उगना कुछ दूर जाकर ओट में खड़ा हो गया ।

उसने अपने बाल निचोड़े। देखते ही देखते कमंडल गंगा जल से भर गया। उगना जल भरा कमंडल लेकर विद्यापति के पास पहुंचा। बोला— "पंडित जी, मैं पानी ले आया।" विद्यापति ने उगना की ओर देखते हुए उसके हाथ से कमंडल लिया और मुंह से लगा लिया। पानी बहुत ठंडा और मीठा था।

विद्यापति जल की एक घूंट पीते ही सोचने लगे— अरे, यह तो गंगा जल है। इस जंगल में उगना को यह जल कहां मिला?' उन्होंने युवक से पूछा— "उगना, यह जल तुझे कहां मिला? यह तो गंगा जल है। सच-सच बता, यह जल तुझे कैसे मिला?" उगना उत्तर दे तो क्या दे? वह बातें बनाने लगा।

विद्यापति के मन में संदेह जाग उठा। उन्होंने पूछा— "उगना, सच-सच बता तू कौन है? यदि सच नहीं बताएगा, तो मैं प्राण दे दूंगा।" यह सुन उगना बने भगवान शंकर संकट में पड़ गए। आखिर उन्हें भेद खोलना पड़ा। वह बोले—"पंडित जी, मैं उगना के रूप में शंकर हूं। मुझसे आपका दुःख देखा नहीं गया। मैं उगना के रूप में आपकी सेवा करने के लिए आ गया। जब तक आप इस भेद को किसी से नहीं कहेंगे, तब तक मैं आपकी सेवा करता रहूंगा।" यह सुन विद्यापति दंग रह गए। पर अंदर-ही-अंदर उन्हें दुःख था कि उनके कारण भगवान शंकर को ऐसी चाकरी करनी पड़ रही है। विधि का विधान मान वह मौन हो गए।

एक दिन विद्यापति पूजा में बैठे थे। उगना वहां नहीं था। पंडिताइन को उगना से कोई काम कराना था। पंडिताइन ने उगना को पुकारा तो वह वहां दौड़ा आया। उसके आते ही पंडिताइन उस पर बरस पड़ी। यहां तक कि उसने चूल्हे की जलती हुई एक लकड़ी उगना पर फेंक दी। पूजा में मग्न विद्यापति की आंखें खुल गईं। वह उगना को बचाने दौड़े और बोले— "देवी, बस-बस रहने दे, उगना तो साक्षात् भगवान शंकर हैं।" विद्यापति का यह कहना था कि उगना रूपी भगवान शंकर गायब हो गए। उनकी पत्नी मौन खड़ी थीं। अब वे दोनों पछता रहे थे। ●

बन गया मंदिर

— चंद्रदत्त 'इन्दु'

गांव के बाहर एक छोटी-सी बगिया थी। बीच में एक कुआं था। कुएं के पास ही साधु की कुटिया थी। कुटिया के पास तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले थे।

बाबा कहीं कुछ मांगने नहीं जाते थे। गांव वाले उन्हें भोजन भी खुद पहुंचाते थे और दूध-दही भी। बाबा के पास कई बार दूसरे साधु-संत भी आ जाते थे। तब कई दिनों तक कुटिया में खूब चहल-पहल रहती थी। गांव का मुखिया बाबा का बड़ा ही भक्त था। मुखिया की बड़ी इच्छा थी कि बगिया में कुएं के पास एक मंदिर भी बने, मगर बाबा अपनी ही धुन में मस्त रहते थे। मुखिया मंदिर बनाने की बात छेड़ता, तो बाबा कह देते–'ठीक है, भगवान जब चाहेंगे, मंदिर भी बन जाएगा।'

इसी तरह दिन बीतते गए। एक दिन. फटेहाल एक आदमी बाबा के पास आया। बहुत भूखा था।

बाबा को उसकी दीन दशा पर दया आ गई। उन्होंने बगिया में उसके रहने के लिए एक झोंपड़ी बनवा दी। अब भगवा कपड़े पहनकर वह भी वहीं रहने लगा। सुबह उठकर बहुत-से काम करता था। असल में वह एक दूर गांव का रहने वाला बुरी संगत वाला आदमी था। पुलिस उसके पीछे पड़ी, तो भागकर यहां आ छिपा। फिर यहां रहकर उसका वेश ही बदल गया था। साधुओं के कपड़े, लम्बी दाढ़ी-मूंछें।

फिर भी उसके मन की बुराई मिटी नहीं। वह खुद असली दूध पीता। बाबा के दूध में आधा पानी मिलाकर उन्हें पिलाता। बाबा दूध का स्वाद चखकर ही पहचान गए थे कि दाल में कुछ काला जरूर है। एक दिन उन्होंने उसे दूध में पानी मिलाते हुए देख भी लिया था, मगर चुप रहे। बाबा ने उसे शरण दी थी, अब गांव वालों के आगे कैसे कहते कि वह बुरा

आदमी है ।

बाबा समझ गए कि इसे चोरी करने और झूठ बोलने की आदत है । वह उसे भगा सकते थे, मगर उन्होंने विचार किया कि इसके मन से बुराइयों का जहर निकालना ही चाहिए ।

बाबा ने जानबूझकर उसका नाम भोला बाबा रख दिया था । एक दिन बाबा ने कहा—"देखो, भोले बाबा, मुझे तीर्थ यात्रा पर जाना है । यह बगिया, यह कुटिया तुम्हारे हवाले कर रहा हूं। धूनी जलाए रखना । बगिया की देखभाल करना । गांव वालों की नजरों में तुम्हारा त्याग-तपस्या कम न होने पाए ।" भोले बाबा को इतना समझाकर बाबा तीर्थ यात्रा पर चले गए ।

बाबा के जाने के बाद चेला बड़ा परेशान । बाबा थे, तो उनकी छत्रछाया में उसकी हेरा-फेरी और ढोंगीपन आसानी से चल रहे थे । अब झंझट आ पड़ा । उसे बाबा बनकर यहां रहना पड़ रहा था । मन में दुष्कर्म पनप रहे थे, मगर दिखावे के लिए उसे पूजा-पाठ करना पड़ता था । गांव वालों की नजर में अच्छा जो बनना था ।

एक दिन दो आदमी वहां से गुजरे । उस ढोंगी बाबा को देखकर वे चौंके । उनमें से एक बोला—"अरे बिरजू, तू यहां बाबा बना बैठा है । हम समझे कि तू कहीं मर-मरा गया है ! भई, खूब मिला । तेरे तो मजे आ रहे हैं । कमाल है, चोर से बाबा बन गया !"

ढोंगी बाबा ने उन्हें चुप रहने को कहा । फिर कुटिया में ले जाकर सारी बात बताई । बिरजू के साथियों ने कहा—"भई, तू सही जगह आ गया । अब हम भी तेरे चेले बनकर यहां आया-जाया करेंगे । चोरी करके हम लाएंगे । चोरी का माल तू अपनी कुटिया के पीछे जमीन में दबाकर रखना । किसी को शक भी नहीं होगा । एक तिहाई हिस्सा तुझे मिलेगा । जब बहुत सारा माल इकट्ठा हो जाएगा, तो तीनों कहीं दूर भाग चलेंगे । फिर मौज-मस्ती से कटेगी जिंदगी ।"
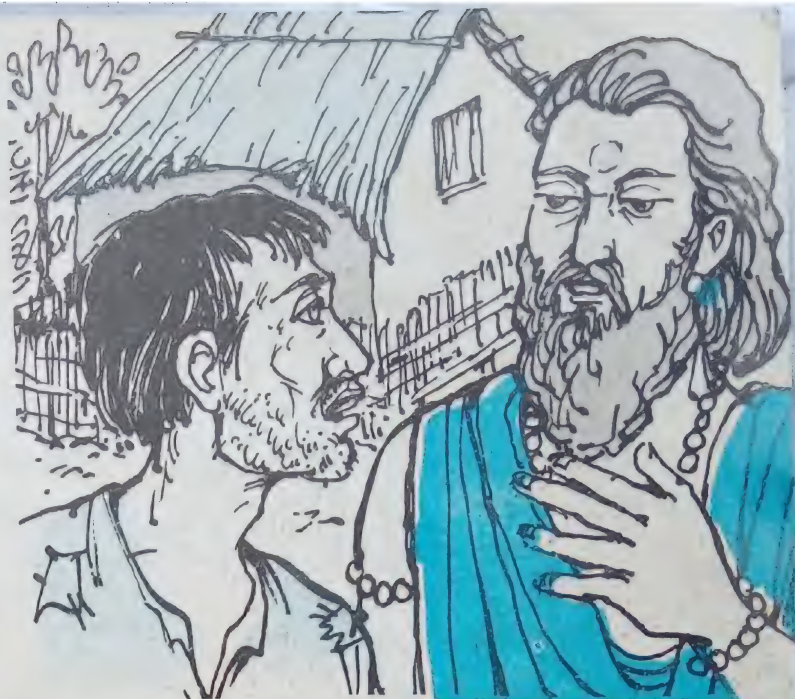
अब नया धंधा इसी गांव से शुरू हुआ । वे दोनों साधु के वेश में बगिया में धूनी रमाने लगे । गांव में रात को लगातार चोरियां होने लगीं । सभी परेशान ।

उसी गांव में एक पंडित जी थे । बड़े ही धार्मिक और सज्जन । वह पूरे गांव के पुरोहित थे । ज्योतिष विद्या भी जानते थे । गांव में चोरियों का तांता लगा, तो गांव वाले पंडित जी के पास गए । बोले—"पुरोहित जी, आप ही बताइए कि चोर किस दिशा से आते हैं ?"

बात गहरी थी । पंडित जी काम चलाऊ ग्रह-नक्षत्र देख लेते थे । चोर कहां से आते हैं, बताना मुश्किल था । फिर भी गांव वालों के विश्वास को वह तोड़ना नहीं चाहते थे । बोले—"ठीक है । जल्दी ही हिसाब लगाकर बताऊंगा ।"

पंडित जी सुबह-सवेरे उठ जाते थे । नित्य कर्म से निबटकर बगिया की ओर आते । कुल्ला-दातौन करके वहां से पूजा के लिए फूल तोड़कर लाना उनका नियम था ।

उस दिन भी वह बगिया के कुएं पर आए । उन्हें कुटिया के पीछे खुसर-पुसर की आवाज सुनाई दी । पंडित जी चौंके । एक झाड़ी के पीछे छिपकर देखने लगे । कुटिया के पीछे दो लोग मिट्टी खोदकर कुछ दबा रहे थे । उनके पास भोले बाबा खड़े थे । कुछ देर बाद उन दोनों ने अपने कपड़े उतारकर साधु वाले

कपड़े पहन लिए । नकली दाढ़ी भी लगा ली । पंडित जी उन्हें पहचान गए । ये दोनों भोले बाबा के पास ठहरे साधु ही थे ।

पंडित जी ने जाकर मुखिया को सारी बात बताई । मुखिया सोच में पड़ गया । फिर दोनों ने एक योजना बनाई ।

दूसरे दिन मुखिया ने भोले बाबा से जाकर कहा—"बाबा जी, आज मेरे घर कथा है । आप तीनों मेरे घर भोजन करें ।" भोले बाबा ने खुशी-खुशी बात मान ली । निश्चित समय मुखिया का आदमी उन्हें भोजन कराने ले गया ।

यह सब मुखिया की योजना थी । इसी बीच मुखिया ने बगिया में आकर कुटिया के पीछे की जमीन खोद डाली । वहां एक घड़े में बहुत-से आभूषण छिपाकर रखे गए थे । मुखिया देखते ही समझ गया कि यह चोरी का माल है । उसने घड़े को उठाकर झाड़ी के पीछे छिपा दिया । भोले बाबा और उसके साथियों के लौटने की इंतजार करने लगा । योजना के अनुसार पंडित जी भी वहां आ गए ।

भोले बाबा अपने साथियों के साथ लौटकर कुटिया में आया । मुखिया को वहां देखकर तीनों चौंके । भोले बाबा ने कहा—"आप यहां !"

मुखिया ने हंसकर कहा—"प्रभु की लीला अपरम्पार है । मुझे आपकी कुटिया के पीछे ये आभूषण मिले । क्या आप इनके बारे में कुछ जानते हैं ? मुझे लगता है कि चोर इन्हें यहां दबाकर भाग गए होंगे । पुलिस को बुलाकर सारी बात बता देनी चाहिए ।"

पुलिस का नाम सुनते ही भोले बाबा का चेहरा पीला पड़ गया । उसके दोनों साथी भागने की तैयारी करने लगे, मगर मुखिया के आदमी वहां थे । दोनों को पकड़कर कुटिया में बंद कर दिया गया । आखिर तीनों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया ।

भोले बाबा मुखिया और पंडित जी के चरण पकड़कर बोला—"हमें माफ कर दो । पुलिस को न बुलाओ ।"

—"ठीक है, एक दूसरा उपाय भी है । यह धन जिसका है, उसे वापस कर दूंगा । हां, मेरी बड़ी इच्छा है कि यहां एक मंदिर बने । गांव वालों से चंदा इकट्ठा करके मैं मंदिर बनवाऊंगा । मंदिर तुम तीनों को बनाना होगा ।"

"मगर हमें यह काम नहीं आता ।"—तीनों ने कहा ।

मुखिया ने कहा—"मंदिर तो कारीगर बनाएंगे । तुम तीनों को मजदूर बनकर यहां काम करना पड़ेगा । यही तुम्हारी सजा है । यह मंजूर नहीं, तो जेल जाने की तैयारी करो ।"

मरता क्या न करता । तीनों मान गए । मंदिर का काम शुरू हो गया । तीनों सुबह से शाम तक कारीगरों के साथ काम करने लगे ।

मंदिर पूरा होने में कई महीने लगे । मंदिर की मजदूरी का काम करते हुए उनका मन भी बदल गया । अब उन्हें काम करने की आदत पड़ गई थी । मंदिर में मूर्तियों की स्थापना धूमधाम से हुई । पूरा गांव वहां इकट्ठा था । तभी भीड़ चिल्लाई—"धूनी वाले बाबा आ गए ।" लोगों ने बाबा के लिए रास्ता छोड़ दिया । भीड़ में खड़ा बिरजू बाबा को देखकर अपने को रोक नहीं पाया । दौड़कर उनके चरणों पर गिर पड़ा । बोला—"बाबा, मुझे क्षमा कर दो । मैंने तुम्हारी कुटिया को अपवित्र बना दिया ।"

बाबा ने उसे उठाकर गले से लगा लिया ●

अजय गायब

स्कूल की आधी छुट्टी हुई । बच्चे हंसते-कूदते कक्षाओं से बाहर आए । अपनी-अपनी मनपसद चीजें खरीदकर खाने लगे । सोनू और सोनल भाई-बहन थे । सोनू था दस वर्ष का और सोनल सात वर्ष की । वे भी आइसक्रीम खाते-खाते पेड़ के नीचे खड़े हो गए ।

तभी सोनल ने सोनू से कहा—"अरे, देखो ! अजय आधी छुट्टी में ही स्कूल से जा रहा है । इसके साथ जो आदमी हैं, इनमें से एक तो वही है, जो कुछ दिन पहले तक चूरन बेचा करता था । मगर इन्होंने अजय को गोदी में उठाया हुआ है ?"

सोनू बोला—"मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है । चलो, इनका पीछा करते हैं ।" स्कूल से कुछ दूर चाय की दुकान थी । वहां एक कार खड़ी थी । चूरनवाला बाहर ही रहा । दूसरा आदमी अजय के साथ कार में बैठ गया ।

सोनल बोली—"भइया, मुझे लगता है, अजय बेहोश है,वर्ना वह शोर जरूर मचाता । हमें शोर मचाना चाहिए ।" सोनू ने कहा—"इससे हमारी जान को खतरा हो सकता है । देखो, चूरन वाला अंदर गया है । मैं कार का नम्बर नोट कर लेता हूं । तुम स्कूल में जाकर मैडम से कहो ।"

तभी कार चल पड़ी । चूरन वाला दुकान में अंदर था । सोनू दुकान के बाहर खड़ा देख रहा था । चूरन वाले के पास एक दाढ़ी वाला बैठा था ।

सोनल ने स्कूल में आकर मैडम से कहा । पुलिस को तथा अजय के घर फोन किया गया । सुनकर उसके माता-पिता बहुत परेशान हुए । मैडम स्कूल के दरबान और चपरासी के साथ चाय की दुकान पर आईं ।

दुकान पर बैठे दोनों आदमी खतरा समझ गए । दाढ़ी वाले ने चाकू निकाल लिया । दोनों भागे । स्कूल के दरबान ने उसके पैरों पर लाठी मारी । दाढ़ी वाला गिर पड़ा । चूरन वाले को भीड़ ने पकड़ लिया ।

तभी पुलिस की गाड़ी आ गई । दोनों अपराधी पकड़े गए । इंस्पेक्टर ने मैडम से कहा—''बहन जी, आपने समय पर ठीक काम किया ।''
मैडम ने कहा—'' बच्चों ने हमें सतर्क किया ।''

पुलिस दोनों को थाने लाई । उनके हाथ-पैर बांध दिए गए । पहले तो उन दोनों ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया, मगर पुलिस ने उन दोनों की खूब पिटाई की ।

आखिर चूरन वाले ने हाथ जोड़कर कहा—"मुझे पता नहीं, वे लड़के को कहां ले गए हैं । स्कूल से उसे चाय की दुकान तक लाने के पांच हजार रुपए मिले मुझे ।और मुझे कुछ पता नहीं ।

इंस्पेक्टर ने पूछा—"अजय तुम्हारे साथ कैसे चला आया ? वह दूसरा आदमी कौन था ?" उसने कहा—"मैं स्कूल के बाहर चूरन बेचा करता था । बच्चे मुझे जानते हैं । मैंने अजय को चटपटे चूरन की पुड़िया दी। उसमें बेहोशी की दवा थी । खाते ही वह बेहोश हो गया । मैं उसे उठा लाया ।"

पुलिस को अभी भी उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ । इस बार दाढ़ी वाले की पिटाई हुई, तो उसका मुंह खुल गया । उसी ने चूरन वाले को रुपए लाकर दिए थे । वही बच्चे उठाने वाले गैंग का सदस्य था ।

पुलिस दोनों को थाने लाई । उनके हाथ-पैर बांध दिए गए । पहले तो उन दोनों ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया, मगर पुलिस ने उन दोनों की खूब पिटाई की ।

आखिर चूरन वाले ने हाथ जोड़कर कहा—''मुझे पता नहीं, वे लड़के को कहां ले गए हैं । स्कूल से उसे चाय की दुकान तक लाने के पांच हजार रुपए मिले मुझे ।और मुझे कुछ पता नहीं ।

इंस्पेक्टर ने पूछा—''अजय तुम्हारे साथ कैसे चला आया ? वह दूसरा आदमी कौन था ?'' उसने कहा—''मैं स्कूल के बाहर चूरन बेचा करता था । बच्चे मुझे जानते हैं । मैंने अजय को चटपटे चूरन की पुड़िया दी। उसमें बेहोशी की दवा थी । खाते ही वह बेहोश हो गया । मैं उसे उठा लाया ।''

पुलिस को अभी भी उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ । इस बार दाढ़ी वाले की पिटाई हुई, तो उसका मुंह खुल गया । उसी ने चूरन वाले को रुपए लाकर दिए थे । वही बच्चे उठाने वाले गैंग का सदस्य था ।

पुलिस ने दाढ़ी वाले के बताने पर भागदौड़ की । गैंग का सरदार और दो लोग होटल में पकड़े गए । गैंग के सरदार ने अमीरों के कई बच्चे उठाकर काफी पैसा बनाया था ।

पुलिस ने जब सख्ती से पूछताछ की तो सारा भेद खुल गया । अजय को उन्होंने झुग्गी-झोंपड़ी बस्ती में बंद करके रखा था । अजय के पिता ठेकेदार थे । अपहरण करने वालों का ख्याल था—उन्हें फिरौती में कम से कम दस लाख रुपए मिलेंगे ।
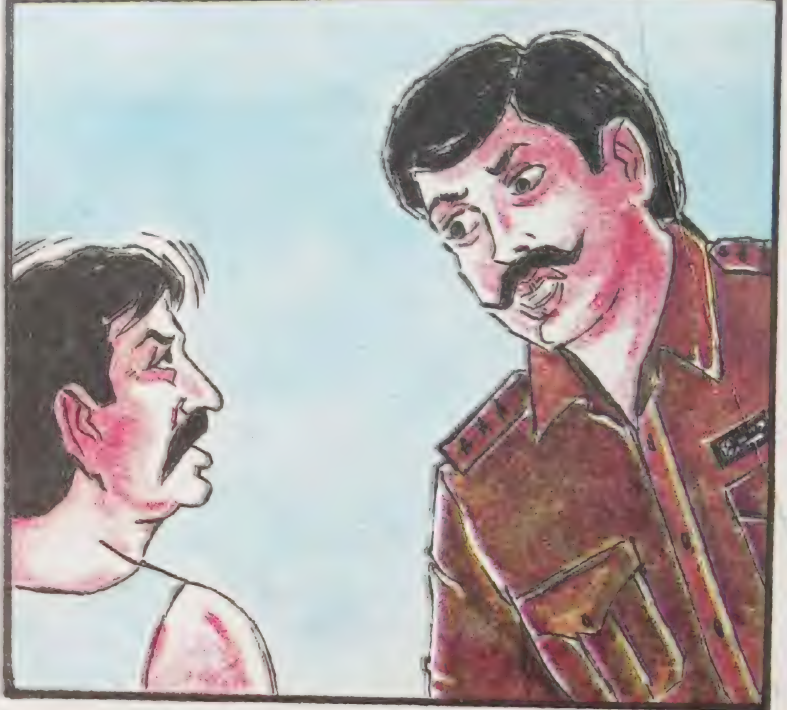
पुलिस कमिश्नर ने सोनू और सोनल को उनकी सूझ-बूझ और बहादुरी के लिए पुरस्कृत किया । स्कूल की मैडम को निर्देश दिया कि वह स्कूल के बाहर खाने-पीने का सामान बेचने वालों का पता नोट करें । उन्हें स्कूल का परिचय-पत्र दें । जिसके पास परिचय-पत्र न हो,उसे वहां न आने दें ।

गिरोह के सारे सदस्य पकड़े गए । पुलिस ने अजय के अपहरणकर्ताओं को अदालत में पेश किया । अदालत ने गैंग के सरदार को आजीवन कारावास की सजा दी । दूसरे लोगों को छह-छह वर्ष की सजा मिली ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३० अंक : १२, अक्तूबर' ९४ नई दिल्ली; आश्विन-कार्तिक, शक सं. १९१६

घर-घर के देवता जर्मनी में

कोलोन । जर्मनी में लोग चकित थे । कोई मोटे, कोई छोटे, पशु-पक्षी, गाय, बैल, घोड़ा, काली, दुर्गा, धातु के बने छोटे-छोटे कुल देवता । हजारों लोग यह देखकर चकित थे कि ये छोटी-छोटी मूर्तियां घर सजाने के काम नहीं आतीं बल्कि घर-घर, गांव-गांव पूजी जाती हैं । इन्हें जिमाया जाता है । कपड़े पहनाए जाते हैं और फूल-फल चढ़ाकर आशीर्वाद मांगा जाता है ।

प्रदर्शनी का नाम था— भारत के घरों में पाए जाने वाले देवता। भारत में तैंतीस करोड़ देवता माने जाते हैं । लेकिन पश्चिमी देशों में ऐसी मूर्तियों को देखना एक अनोखा अनुभव था । जर्मनी की कोर्नेलिया मालब्रेन ने यह कमाल कर दिखाया था । कोर्नेलिया लगातार तीन साल महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उड़ीसा के गांव-गांव घूमीं ।

जब भी वह गांव वालों से उनके देवताओं के बारे में पूछतीं, उन्हें ले जाना चाहतीं, तो वे उन पर विश्वास न करते । पर धीरे-धीरे लोग उन पर विश्वास करने लगे । धीरे-धीरे कोर्नेलिया का भंडार बढ़ने लगा । उनके पास चार सौ मूर्तियां जमा हो गईं । उनमें से कोई भी मूर्ति साठ से.मी. से ऊंची नहीं थी । ये ज्यादातर आदिवासियों के देवी-देवता थे । कोलोन में लगी प्रदर्शनी में इन्हीं में से, दो सौ इकहत्तर मूर्तियों को रखा गया था । इस प्रदर्शनी को देखकर ही लोग समझ सके कि भारत में कैसी एक से एक अनोखी प्रथाएं और रीति-रिवाज हैं ।

लम्बी उम्र का राज

नई दिल्ली । शाकाहार सोसाइटी द्वारा एक गोष्ठी की गई । इसमें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डा. वजीर ने भाग लिया । उनका कहना था कि शाकाहारी लोग रोगी कम होते हैं । शाकाहारी भोजन करने वालों की उम्र भी ज्यादा होती है ।

सागरिका

नई दिल्ली । भारतीय वैज्ञानिक नई मिसाइल बना रहे हैं— सागरिका । इस मिसाइल को समुद्र में पनडुब्बी से छोड़ा जा सकेगा । यह मिसाइल तीन सौ किलोमीटर तक मार कर सकेगी ।

त्रिनिडाड में हिंदी समारोह

पोर्ट ऑफ स्पेन । हिंदी कक्षाओं का दीक्षांत समारोह भारतीय हाई कमीशन परिसर में हुआ । इस अवसर पर त्रिनिडाड-टोबैगो सरकार की सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती विलियम यूली जोंस ने ५० विद्यार्थियों को डिग्रियां तथा पारितोषक दिए । इन विद्यार्थियों में श्री जगन्नाथ बिसून ७० वर्ष के विद्यार्थी हैं, तो कुमारी अस्तामल ७ वर्ष की बालिका । छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किए गए । छोटे-छोटे बच्चों ने 'हम होंगे कामयाब' गीत गाया । श्री मंगल पटेसर ने सितार वादन किया । उच्चायुक्त प्रो. लक्ष्मणन् ने समारोह की अध्यक्षता की ।

लंदन । जाने-माने उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवास बिरला का यहां निधन हो गया । वह ८५ वर्ष के थे । उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में लगभग दो दर्जन पुस्तकें लिखीं । उनकी अनेक कहानियां 'नंदन' में छपी हैं । लक्ष्मी और सरस्वती के इस वरद पुत्र को नमन !

बच्चों की तीन पुस्तकें

नई दिल्ली । "पिछले तीस वर्षों में बच्चों के लिए काफी श्रेष्ठ पुस्तकें बाजार में आई हैं । ऐसी रचनाएं लिखी गई हैं जो विश्व के श्रेष्ठ बाल-साहित्य की श्रेणी में आती हैं।" ये शब्द नंदन के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने कहे । वह बच्चों की तीन पुस्तकों का विमोचन कर रहे थे । इनमें डा. दिविक रमेश की दो पुस्तकें— 'फूल भी और फल भी' तथा 'अगर खेलता हाथी होली' और रमेश कौशिक की पुस्तक 'महर्षि अरविंद' थीं ।

भारत-रूसी साहित्यिक क्लब की ओर से यह समारोह हुआ । राजधानी के साहित्यकार, पत्रकार और प्रकाशक बड़ी संख्या में मौजूद थे । संयोजक थे-प्रेम जनमेजय ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

नंदन बाल समाचार

जो खुद को सच लगे वही बात कहनी चाहिए। — **महात्मा गांधी**

सुनहरे नाम—रूपाली और तानिया

आज सोने की कलम चाहिए। दो बेटियों के नाम लिखने हैं— रूपाली और तानिया सचदेव। रूपाली (१२ वर्ष) बम्बई के कामगार की बेटी है। अंग्रेजों की इंग्लिश चैनल पार करने वाली वह सबसे कम उम्र की लड़की है। यह करिश्मा उसने १५ अगस्त को दिखाया। उसने १६ घंटे ७ मिनट तैरकर चैनल पार की। इस बीच ऊंची-ऊंची लहरें भी उसे ललकारती रहीं। उसके पिता चाहते हुए भी खुद खिलाड़ी न बन सके लेकिन रूपाली का उत्साह हमेशा बढ़ाते रहे। साधन न होने पर भी वह रुकी नहीं। सफलता का ध्वज उसने फहराया।

सात वर्ष की तानिया सचदेव ने भी इंग्लैंड में बेजोड़ सफलता पाई। शतरंज में उसने ढेर सारे इनाम समेट लिए। वह दिल्ली की है। अगले अंक में रंगीन चित्र के साथ तानिया से बातचीत पढ़िए। प्रचार बहुत है कि बेटे-बेटियों में भेदभाव होता है। लेकिन वे माता-पिता धन्य हैं जो बेटी को आगे बढ़ाते हैं।

आसमान में मोटरसाइकिल

ड्रेसडेन। एल्बे नदी के आरपार पचास मीटर ऊपर एक रस्सी बांधी गई। उस रस्सी पर अल्बर्टो ने मोटरसाइकिल चलाई। मोटर साइकिल के नीचे एक झूला लटका था जिसमें अल्बर्टो की बहन रमोना बैठी थी।

महंगे मोजे

लंदन। महारानी विक्टोरिया के मोजों की नीलामी की गई। काले रंग के ये मोजे ग्यारह सौ पौंड (करीब बावन हजार रुपए) में बिके। इन्हें एक प्रकाशन संस्थान ने खरीदा है।

मुसीबत मोल ली

एंकोरेज (अलास्का)। यहां आस्ट्रेलिया की एक पर्यटक ध्रुवीय भालू के साथ अपना चित्र खिंचवाना चाहती थी। वह भालू के पिंजरे के ऊपर चढ़ गई। चिड़ियाघर के अधिकारियों ने उसे बहुत रोका, मगर वह न मानी। भालू गुस्से में था। उसने महिला को घायल कर दिया।

नन्हा सेही

नई दिल्ली। दिल्ली चिड़ियाघर में पहली बार सेही का बच्चा जन्मा। शिशु सेही का वजन डेढ़ सौ ग्राम और लम्बाई छह इंच थी। सेही बहुत तेज दौड़ता है और एक साथ कई दुश्मनों को हरा सकता है।

सिलाई-कढ़ाई और लड़के

ओरावा। जापान के बहुत-से स्कूलों में लड़के और लड़कियां घर को ठीक तरह से चलाने के तरीके सीख रहे हैं। लड़के खाना बनाना, सिलाई, कढ़ाई आदि कामों में खूब दिलचस्पी लेते हैं।

पानी पुरस्कार

स्टाकहोम। जापान के वैज्ञानिक ताकशी कुबो को 'स्टाकहोम वाटर पुरस्कार' दिया गया है। यह सम्मान उन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में योगदान के लिए दिया गया है। स्वीडन के सम्राट कार्ल गुस्ताफ ने एक समारोह में कुबो को डेढ़ लाख डालर प्रदान किए।

जैक्सन की मदद

बुडापेस्ट। बेला फारकस नामक लड़के के लिए मशहूर गायक माइकेल जैक्सन देवदूत बनकर आया। बच्चे के जिगर में खराबी है। इस आपरेशन पर सवा लाख डालर खर्च होने थे, जो बच्चे के माता-पिता के लिए सम्भव नहीं था। जैक्सन ने कहा कि बच्चे के इलाज का पूरा खर्चा वह उठाएगा।

अदरक ही अदरक

नई दिल्ली। भारत में दुनिया में सबसे अधिक अदरक उगाया जाता है। भारत अदरक का सबसे बड़ा निर्यातक देश है। भारत में भी केरल में अदरक की पैदावार सबसे अधिक होती है।

माता-पिता को खर्च दो

सिंगापुर। बच्चों को अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए। सिंगापुर में ऐसा कानून बनाया जा रहा है। इस कानून के तहत बच्चों को अपने बेसहारा माता-पिता को खर्चा देना होगा।

मांसाहार पर रोक

पुरी। जगन्नाथ मंदिर के आसपास मांसाहार की बिक्री पर रोक लगा दी गई है। यह रोक नगर परिषद ने लगाई है। मंदिर के आसपास मांसाहारी भोजन नहीं परोसा जाएगा। फिल्म संगीत भी नहीं बजेगा। दुकानदारों को भजन बजाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

विमान सेवाओं में हिंदी

बम्बई। निजी विमान सेवाओं के लिए नए निर्देश जारी किए हैं। नागरिक विमान पत्तन निदेशालय के अनुसार अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इसलिए मंगलवार के दिन इन विमान सेवाओं में हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

दूध में कीटनाशक

नई दिल्ली। भारत में दूध को अमृत माना जाता है। इंडियन काउंसिल आफ मेडीकल रिसर्च ने एक सर्वेक्षण किया। पता चला कि आजकल बहुत-से दूध बेचने वाले दूध में जहरीले कीटनाशक मिलाते हैं। वे समझते हैं कि उनसे दूध खराब नहीं होता। ये कीटनाशक शिशुओं के लिए बेहद खतरनाक हैं। कीटनाशकों की उपस्थिति के कारण अमृत जैसा दूध जहर समान हो जाता है। कीटनाशक मिले दूध के प्रयोग से गुर्दों का खराब होना, दिल की बीमारियां आदि हो सकती हैं। सरकार को दूध में कीटनाशकों को मिलाने वालों के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिए।

खुदाई में खजाना

मास्को। यहां खुदाई में सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के बहुत-से चांदी के सिक्के मिले हैं। यही नहीं, नदी किनारे बारहवीं सदी के जहाज, धातु और चीनी-मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं।

दीवार की मदद

बीजिंग। चीन की दीवार की इन दिनों मरम्मत चल रही है। हजारों कि.मी. लम्बी इस दीवार की मरम्मत करने के लिए करोड़ों रुपए चाहिएं। चीन ने विदेशी लोगों से अनुरोध किया है कि वे इस दीवार को बनाने में मदद करें।

चट्टानों में मैमथ

वेंटुरा। डा. राकबैल चट्टानों का अध्ययन कर रहे थे। अचानक उनके हाथ दुनिया की सबसे अनोखी चीज लगी। यह था छोटे मैमथ का पूरा कंकाल। छोटे मैमथ का दुनिया भर में यह पहला कंकाल है। डा. राकबैल का कहना है कि करोड़ों रुपए मिलने से भी उन्हें इतनी खुशी न होती, जितनी इस कंकाल को पाकर हुई।

चौबीस घंटे सेवा

ओसाका। रात के वक्त जापान में हवाई अड्डों को बंद कर दिया जाता है। जिससे कि शहरी लोग आराम से सो सकें। जहाजों का शोर उन्हें तंग न करे। ओसाका के पास एक कृत्रिम द्वीप बनाया गया। उस पर एक हवाई अड्डा बनाया गया है। यह देश का चौबीस घंटे काम करने वाला हवाई अड्डा होगा।

माल गाड़ी चल दी

चिकमंगलूर। बिरूर जंक्शन पर मालगाड़ी रुकी। ड्राइवर, स्टेशन मास्टर के साथ चाय पीने गया कि अचानक मालगाड़ी चल दी। ड्राइवर एक अन्य वाहन पर बैठकर भागा। आगे जाकर पता चला कि कडूर स्टेशन के पास पहुंचकर गाड़ी अपने आप रुक गई थी।

कुत्ते-बिल्लियों का परिवार

भुवनेश्वर। यहां एन.पी. पाणिग्रही रहते हैं। उनके परिवार में बत्तीस सदस्य हैं। ये सदस्य मनुष्य नहीं बल्कि कुत्ते-बिल्लियां हैं। दस वर्ष पहले एक घायल कुत्ते को देखकर पाणिग्रही बहुत दुखी हुए। तब से जब भी कोई लावारिस कुत्ता-बिल्ली उन्हें मिलता है, उसे वह घर ले आते हैं। उनका कहना है कि देसी कुत्ते बहुत अच्छे और वफादार होते हैं।

सोने की छत

ल्हासा। तिब्बत का जोकहांग मंदिर बारह सौ वर्ष पुराना है। इसकी छत पर सोने की नक्काशी है। यह मंदिर आठवीं सदी में तिब्बत के राजा और चीनी राजकुमारी के विवाह के अवसर पर बनवाया गया था। चीनी राजकुमारी अपने साथ बुद्ध की सोने की मूर्ति लाई थी। यही मूर्ति मंदिर में प्रतिष्ठित है। मंदिर बहुत टूट-फूट गया था। अब इसकी मरम्मत की गई है। इस काम में चार साल लगे।

नन्हे समाचार

□ इटली में एक सैलानी फिसलकर ज्वालामुखी के मुंह में जा गिरा। उसे चोट तो आई, पर हेलीकाप्टर के सहारे सुरक्षित निकाल लिया गया।

□ दिल्ली के पास नोएडा में एक उपग्रह भू-केंद्र का निर्माण होगा।

□ बंगलूर में सैकड़ों बच्चों ने एक मूर्तिकार के साथ मिलकर विशाल प्रतिमा बनाई है, उसका नाम रखा है— आशा। ऐसी और प्रतिमाएं भी बनाई जाएंगी।

□ आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रांत में स्कूल पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा को शामिल किया गया है।

□ इंग्लैंड में बागवानी के शौकीन एक आदमी ने अपने मकान के बाहर लगी झाड़ियों को काट-छांटकर रेलगाड़ी का रूप दिया है।

□ मद्रास का ए. मरान जब भोजन करने बैठता है तो लोग हैरान रह जाते हैं, क्योंकि मरान चावल, रोटी नहीं, रेत, ईंट-पत्थर खाता है। आज तक वह कभी बीमार नहीं पड़ा। उसकी जांच करने वाले डाक्टर भी चकित रह जाते हैं।

□ इटली से जन्मदिन का बधाई कार्ड ३९ वर्ष पहले अमरीका भेजा गया, पर पाने वाले के पते पर हाल ही में पहुंचा। जिसके नाम कार्ड भेजा गया था, उसकी मृत्यु हुए भी ३७ वर्ष हो चुके हैं।

□ पश्चिम बंगाल और मैसूर में करेंसी नोट छापने के कारखाने बनाए जा रहे हैं।

□ दक्षिण अफ्रीका में एनी नौकरानी से रानी बन गई है। पिछले दिनों उसका मालिक डेविड फाइन देश छोड़कर आस्ट्रेलिया गया तो अपनी कोठी, घर— सब कुछ एनी को दे गया। फाइन फिर से लौट आया है, पर एनी को जो कुछ दे दिया है, उसे वापस लेने का उसका कोई इरादा नहीं।

सचित्र समाचार

इंग्लिश चैनल तैरकर पार करने वाली सबसे कम उम्र (१२ वर्ष) की छात्रा रूपाली। वह बम्बई में रहती है। रूपाली के पिता पैसे वाले नहीं हैं, फिर भी उन्होंने खूब उत्साह बढ़ाया।

के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से घनश्यामदास बिड़ला पुरस्कार पद्मनाभन बलराम को। श्री पद्मनाभन भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलूर में प्रोफेसर हैं।
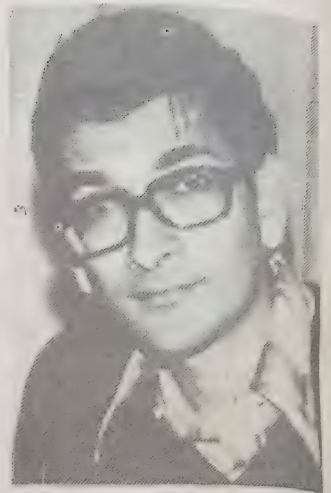
स्विटजरलैंड के हरगिसविल नगर में कांच के सामान की प्रदर्शनी : कांच के बाजों से हवा का संगीत सुनते बच्चे।

अठारह साल का बौना मोहम्मद अली : लम्बाई सिर्फ दो फीट चार इंच।

हम तीनों ही एक टब में बैठकर मजे से नहा सकते हैं। चीते हैं तो क्या हुआ!

सौर ऊर्जा से चलने वाली साइकिल : बिना थकावट के यात्रा।

दरबार की शोभा

राजा विशाखदत्त वत्स देश के युवराज थे। पिता के बाद वह राजा बने। उनके पिता के दरबार में संगीतकारों और कवियों का बहुत सम्मान था। किंतु विशाखदत्त के राजा बनते ही उनके दरबार में कवियों के आदर-सम्मान की परम्परा महामंत्री ने बंद करवा दी। राजा को पता चला, तो बहुत खिन्न हुए। रानी के साथ महल में विचार करने लगे।
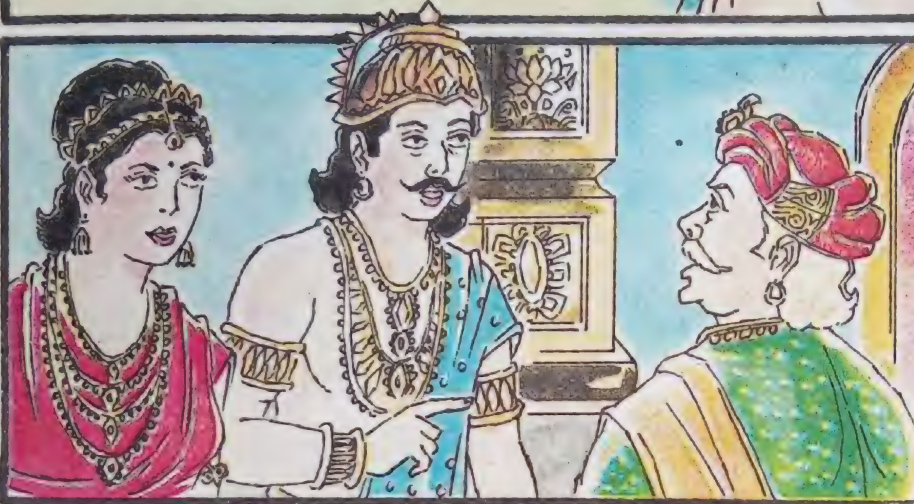
महामंत्री मंजुनाथ राज्य का स्वामिभक्त समझा जाता था। विशाखदत्त नहीं चाहते थे कि मंत्री की बात को काटा जाए, मगर यह जरूर चाहते थे कि कवि और संगीतकार दरबार की शोभा बनें। एक दिन राजा ने महामंत्री को बुलवाया। रानी भी राजा के पास बैठी थीं।

राजा ने कहा—"संगीतकारों और कवियों को सम्मान देना हमारे पुरखों की परम्परा रही है। आपने इसे बंद क्यों करा दिया।" मंत्री बोला—"महाराज, कवियों और संगीतकारों को राजाश्रय देने से राजकोष पर व्यर्थ का बोझ पड़ता है। भला, इन्हें दरबार में रखने से राज्य का क्या भला होता है।"

राजा ने राजपुरोहित को बुलवाया। पूछा—"क्या दरबार में कवि और संगीतकारों का अभाव आपको नहीं खलता?" पुरोहित बोले—"महाराज, इनसे दरबार की शोभा तो है, मगर लाभ कुछ नहीं। महामंत्री ठीक कहते हैं।" मंजुनाथ ने पुरोहित को भी अपनी ओर मिला लिया था।

राजा बाग में टहल रहे थे । तरह-तरह के सुगंधित फूल महक रहे थे । राजा ने गुलाब का एक फूल रानी को देते हुए कहा—''महारानी, बाग की शोभा तरह-तरह के वृक्षों और फूलों से बढ़ती है । ऐसा ही दरबार में होना चाहिए ।'' रानी समझ गई कि दरबार में कवियों का अभाव राजा को खल रहा है ।
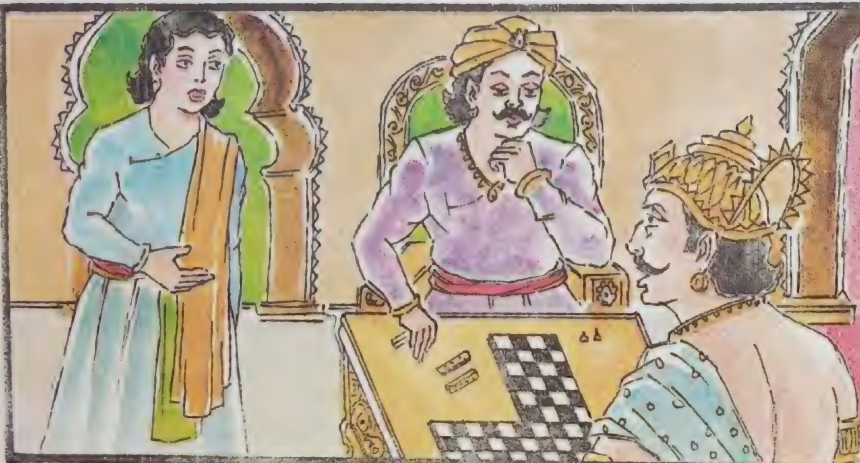
एक दिन चांद्रायण नामक एक युवा कवि राजा से मिलने आया । राजा उस समय महल में चौपड़ खेल रहे थे । राजा ने उसे बुलाया । कवि ने कहा—''महाराज, मैं सुधाकर भट्ट का पोता हूं । मेरे दादा आपके पूज्य दादा जी के दरबारी कवि थे । मैं भी कविता करता हूं । हमारी आर्थिक दशा ठीक नहीं ।''

दूसरे दिन चांद्रायण दरबार में आया । राजा ने उसे कविता सुनाने को कहा । चांद्रायण का कंठ सुरीला था । उसकी कविता सुनकर राजा ने महामंत्री से कहा—''युवक में प्रतिभा है । वैसे भी यह प्रसिद्ध राजकवि सुधाकर भट्ट का पोता है । इसे दरबार में रख लें, तो अच्छा रहेगा ।''

मंजुनाथ ने तीखी नजरों से चांद्रायण की ओर देखा । फिर राजा से कहा—''हां, कविता अच्छी करता है । इसे कुछ पुरस्कार दे दिया जाए । इसे दरबारी कवि बनाने पर कोष पर बेकार का भार पड़ेगा महाराज ।''

चतुर मंत्री ने बात टालते हुए कहा—''महाराज, आपके विश्राम का समय हो रहा है। आप महल में पधारिए। आपने जो कहा है, ठीक है। वैसे किसी भी युवक को दादा-परदादा का नाम लेकर अपनी स्वार्थसिद्धि नहीं करनी चाहिए। यह युवक कविता रचना छोड़कर कोई और काम क्यों नहीं करता।''

मंत्री ने चांद्रायण को दूसरे दिन अपने घर बुलवाया। वह आया, तो मंत्री उपेक्षा से बोला—''तुम हट्टे-कट्टे हो। राजकवि जैसी आराम की नौकरी ही क्यों चाहते हो?'' चांद्रायण बोला—''मंत्री जी, मुझे नौकरी चाहिए, कोई भी हो। राजकवि बनने में मेरी रुचि इसीलिए थी कि मैं राजकवि के खानदान से हूं।''

मंत्री ने हंसकर कहा—''ठीक है। मैं तुम्हें नौकरी देता हूं।'' इसके बाद मंत्री ने घुड़साल के दारोगा को बुलवाया। कहा—''इसे अस्तबल की सफाई के काम पर लगा दो।''

राजा को बात पता चली, तो मंत्री को बुलाकर कहा—"आपने एक प्रतिभाशाली कवि को घुड़साल की सफाई का काम देकर अच्छा नहीं किया । इससे हमारी बदनामी होगी । भला, उसने इस काम को स्वीकार क्यों किया ?" मंत्री बोला—"महाराज, यही तो उसकी चाल है । वह आपको बदनाम करना चाहता है ।"

अगले दिन मंत्री को साथ लेकर राजा स्वयं घुड़साल में गए । वे दोनों दूर खड़े देख रहे थे । चांद्रायण बड़ी लगन से अपना सफाई का काम कर रहा था । राजा ने घुड़साल के दारोगा से पूछा, तो वह बोला—"महाराज, यह बहुत ही मेहनती है ।"

एक दिन राजा ने चांद्रायण को बुलवाया । उससे पूछा कि मंत्री जी उसके बारे में जो सोच रहे हैं, क्या वह ठीक है ? उसने विनम्रता से कहा—"महाराज, मंत्री जी का सोचना गलत है । लोग यह भी तो कह सकते हैं कि महाराज के राज्य में एक मामूली कर्मचारी इतनी अच्छी कविता कर सकता है, इससे आपकी प्रतिष्ठा को चार चांद लग जाएंगे ।"

इसके बाद राजा ने चांद्रायण को दरबार में बुलाया । अपने हाथों से उसके गले में मोतियों की माला पहनाई । उसे राजकवि की पदवी से सम्मानित किया । सभी दरबारी प्रसन्न थे, मगर मंजुनाथ का चेहरा उतरा हुआ था । उसी दिन से दरबार में संगीतकारों और कवियों के सम्मान पर लगा प्रतिबंध हटा लिया गया ।

नकली राजकुमारी

— रेणु नारायण

जीतगढ़ी एक छोटा-सा खुशहाल राज्य था। वहां के राजा जीतसिंह, पराक्रमी एवं प्रजावत्सल थे। उनकी एक बेटी थी, जिसका नाम गिरिजा था। वह बहुत ही प्यारी, नेकदिल और भोली बच्ची थी। चारों तरफ हंसी-खुशी और शांति थी।

राजा सब तरह से प्रसन्न एवं निश्चिंत थे। गिरिजा को देखकर राजा-रानी फूले न समाते। गिरिजा जितनी सुंदर थी, उतनी ही बुद्धिमती भी थी।

एक दिन गिरिजादासियों के साथ बाग में खेलने गई। खेलते-खेलते राजकुमारी थोड़ी दूर नदी की तरफ निकल गई। दासियां थोड़ा पीछे छूट गईं। उसी समय उधर से एक जादूगरनी निकली। वह बहुत सालों बाद उस तरफ आई थी। उसने सुंदर कपड़ों में सजी राजकुमारी को देखा, तो देखती ही रह गई। उसे लगा कि काश, वह भी राजकुमारी होती तो कितनी सुखी होती।

तभी उसे अपने जादू का ख्याल आया। कुछ समय के लिए वह किसी का भी रूप धारण कर सकती थी। जादूगरनी ने राजकुमारी के बाल पकड़ लिए और एक मंत्र फूंक दिया। देखते ही देखते राजकुमारी चिड़िया बन गई। फिर जादूगरनी राजकुमारी की पोशाक में सज गई। देखने में वह बिल्कुल राजकुमारी गिरिजा लग रही थी। चिड़िया बनी राजकुमारी को उसने उड़ा दिया।

इधर जब दासियों ने देखा कि राजकुमारी आस-पास नहीं है, तो वे इधर-उधर ढूंढ़ने लगीं। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वहीं पहुंच गईं, जहां राजकुमारी बनी जादूगरनी खड़ी थी। दासियों को देखते ही जादूगरनी चीखकर बोली—"तुम लोग कहां चली गई थीं?"

दासियों ने पहले कभी राजकुमारी की इतनी कर्कश आवाज नहीं सुनी थी। वे एकदम चौंक गई, परंतु मुंह से तो कुछ बोल नहीं सकती थीं।

पेड़ पर बैठी चिड़िया बनी राजकुमारी यह सब देख रही थी। परंतु वह विवश थी, कुछ कर नहीं सकती थी। सब उसे पता था, लेकिन आवाज उसकी चिड़ियों जैसी थी। वह भी पालकी के पीछे-पीछे उड़ चली। राजमहल के पीछे वाले बाग में आ गई।

जादूगरनी राजकुमारी की जगह महल में पहुंच गई। उसके मन की मुराद पूरी हो गई थी। वह जब जो चाहती खाती, जब जो चाहती पहनती। किसी की परवाह नहीं करती थी। दासियों पर तो उसका सबसे ज्यादा गुस्सा निकलता था।

राजा-रानी को भी राजकुमारी का व्यवहार कुछ अटपटा-सा लगने लगा था। पहले गिरिजा राजा को देखकर दौड़कर आती थी, उनके साथ मीठी-मीठी बातें करती थी। लेकिन अब वह महल में आते, तो उन्हें राजकुमारी के रोने, चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़तीं। दासियों की शिकायतें भी उन तक पहुंचने लगीं।

रानी का मन उदास होता, तो वह महल के पीछे वाले बाग में जा बैठतीं। एक दिन चिड़िया बनी राजकुमारी उड़कर वहीं आ गई। रानी को देखकर वह उनके कंधे पर आ बैठी। रानी ने इतनी सुंदर चिड़िया पहले कभी नहीं देखी थी। रानी का मन चिड़िया को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। अब तो वह सुबह-शाम रोज वहां जाने लगीं।

चिड़िया के विषय में रानी की उत्सुकता बढ़ी। उसने माली से पुछवाया कि वह चिड़िया कब और कहां से आई ? माली ने उत्तर दिया— ''रानी साहिबा, पहले कभी इस तरह की चिड़िया इधर नहीं देखी। इस चिड़िया के लिए इतना दाना डाला, परंतु यह कुछ खाती नहीं है।''

रानी का मन भारी हो गया। उसने चाहा कि चिड़िया को पिंजरे में रखकर अपने कमरे में ले चले, फिर यह सोचकर कि अगर यह मुक्त रहेगी तो खुश रहेगी, विचार त्याग दिया। रानी को गिरिजा के बदले व्यवहार पर आश्चर्य होता था। वह सोचती रहती— 'आखिर यह बदलाव क्यों ?'

रात के समय रानी राजकुमारी के विषय में राजा को बताने लगी— ''राजकुमारी का व्यवहार दिनोंदिन बदलता जा रहा है। इसके लिए किसी योग्य गुरु की खोज कीजिए।'' राजा स्वयं भी ऐसा ही सोच रहे थे।

तभी उन्हें एक चिड़िया का करुण क्रंदन सुनाई दिया। आवाज बहुत तेज थी। राजा ने दासी को भेजा कि रात के समय कौन पक्षी रो रहा है ? साथ ही राजा-रानी बाग की तरफ चल पड़े। रानी ने चिड़िया की बात राजा को पहले ही बता दी थी।

राजा बाग में पहुंचे तो चिड़िया का रोना एकदम बंद

हो गया। वह राजा के आसपास मंडराने लगी। राजा को भी इतनी सुंदर चिड़िया देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। राजा ने अगली सुबह बहेलिए को बुलाया। चिड़िया को दिखाकर उसके विषय में पूछा। बहेलिया भी इतनी विचित्र और सुंदर चिड़िया देखकर बहुत चकित था। कहने लगा कि उसने इतनी सुंदर चिड़िया इससे पहले कभी देखी ही नहीं। राजा ने चिड़िया की देखभाल व सुरक्षा के प्रबंध कर दिए। एक माली को चिड़िया की देखरेख पर नियुक्त कर दिया।

गिरिजा की चर्चा धीरे-धीरे शहर में भी होने लगी। वह अब हर किसी का अपमान करने लगी थी। उसके आचरण से पूरा महल त्राहि-त्राहि कर उठा था।

राजा ने हारकर अपने कुलगुरु के पास संदेश भिजवाया। कुलगुरु अभी देशाटन करके लौटे ही थे। उनकी इच्छा एक महायज्ञ करने की थी। इसके लिए स्वयं भी राजा से मिलना चाहते थे। राजा, रानी के साथ कुलगुरु के आश्रम की ओर चल पड़े।

गुरु के चरणों में प्रणाम कर राजा-रानी आसन पर बैठ गए। कुलगुरु ने राजा के चेहरे पर चिंता की गहरी रेखा देखी, तो बोले— ''राजन, कहो क्या चिंता है ? आप दो महीने में ही कहीं अधिक बूढ़े दिखाई दे रहे हैं।''

राजा ने धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया— ''महर्षि, मैं अपनी पुत्री के बदले व्यवहार से अत्यधिक दुखी हूं। मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि मेरी पुत्री इतनी उद्दंड व अन्यायी बन जाएगी। उसकी आयु छोटी ही है, लेकिन उसका उत्पात बहुत बढ़ गया है। यदि आप उसे अपने आश्रम में रखकर कुछ दिन शिक्षा दें, तो वह अवश्य ही सुधर जाएगी।''

गुरु भी राजा की बात ध्यान से सुन रहे थे। वह जानते थे कि राजा अत्यधिक प्रजावत्सल एवं न्यायप्रिय हैं। उनकी अपनी ही पुत्री इसके विपरीत आचरण करेगी तो वह स्वीकार नहीं कर पाएंगे। उन्होंने राजा को आश्वासन दिया कि वह महल में स्वयं देखने आएंगे।

महर्षि के आश्वासन से प्रसन्न राजा-रानी महल में

लौट आए। उनके मन में अगले दिन गुरु के आने व सब ठीक हो जाने का संतोष था।

अगले दिन प्रातः ही महर्षि महल में आ पहुंचे। राजा-रानी स्वागत के लिए पहले से ही तैयार खड़े थे। गुरु जी ने आसन ग्रहण किया। राजा ने स्वयं उनके चरणों को धोया। उनके सम्मुख हाथ जोड़कर बैठ गए। गुरु जी मन ही मन राजा के भक्ति भाव से प्रसन्न हो, उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे। फिर उन्होंने राजकुमारी गिरिजा से मिलने की इच्छा प्रकट की।

राजा ने राजकुमारी को सभा में उपस्थित होने का संदेश भिजवाया। लेकिन राजकुमारी किसी के कहने से कहां मानने वाली थी। इच्छा के विरुद्ध तो उससे कोई भी कार्य नहीं कराया जा सकता था। दासियों को उसने मारपीट कर भगा दिया। शोर सुनकर राजा स्वयं राजकुमारी के पास पहुंचे और उसे किसी तरह गुरु जी के पास ले आए। कुलगुरु ने राजकुमारी को देखा, तो मुसकराकर कहा— "चलो बेटी, आज से तुम्हारी शिक्षा का दायित्व मुझ पर है। अब कुछ दिन तुम्हें तपोवन में रहना होगा।"

राजा तो यही चाहते थे। लेकिन राजकुमारी बनी जादूगरनी ने जब यह सुना, तो वह आंखें तरेरकर गुस्सा करने लगी, रूठने का उपक्रम चलने लगा। लेकिन जैसे ही महर्षि ने उसका हाथ पकड़ा, वह शांत हो गई। एक जिद्दी लेकिन भयभीत बच्चे की तरह उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। दास-दासियों ने तो उस दिन उत्सव की खुशी का आनंद लिया। राजा-रानी भी चिंता मुक्त हो गए। राजा को लग रहा था जैसे कुलगुरु ने उनका बोझ हल्का कर दिया हो। उन्हें पूरा विश्वास था कि अब गिरिजा का आचरण सुधर जाएगा।

इधर जादूगरनी जैसे ही तपोवन में पहुंची, उसका जादू नहीं टिक सका। वह गुरु के चरणों में लोटने लगी और सब कुछ सच-सच बता दिया। उसने कहा— "मैं काले पर्वत के जादूगर की बेटी हूं। मैंने ही राजकुमारी गिरिजा को चिड़िया बना दिया और स्वयं उसकी जगह ले ली।"

महर्षि ने कहा— "तुमने बहुत गलत किया, लेकिन अब राजकुमारी को उसका रूप लौटा दो। तुम अपने पिता के पास लौट जाओ।"

जादूगरनी बोली— "मैंने राजकुमारी को चिड़िया बना तो दिया, लेकिन मुझे उसको मुक्त करना नहीं आता। इसके लिए तो मेरे पिता को ही आना पड़ेगा।"

महर्षि ने उसके पिता को बुलवाया। महर्षि का बुलावा मिलते ही काले पर्वत का जादूगर दौड़ा चला आया। "मुझे किसलिए याद किया ऋषिवर?"— यह कहते हुए हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

महर्षि ने उसे सारी बात बताई कि कैसे उसकी बेटी ने जादू के बल पर राजकुमारी को चिड़िया बना दिया था और स्वयं राजकुमारी बनकर रहने लगी।

सुनते ही जादूगर आग-बबूला हो गया। उसने अपनी बेटी को बहुत डांटा और कहा— "मैंने तुम्हें जादू गलत काम के लिए नहीं सिखाया था। तुम इसके योग्य नहीं हो।" उसने समस्त जादू वापस ले लिया। जैसे ही जादूगर ने अपनी विद्या वापस ली, वैसे ही चिड़िया बनी राजकुमारी अपने असली रूप में आ गई और जादूगर की लड़की अपने रूप में। राजा-रानी एवं प्रजा अपनी राजकुमारी को पाकर बहुत प्रसन्न हुए। ●

निकली आग से

—प्रतिमा पांडेय

द्वापर-युग में आर्यावर्त भरतवंशी कुरुओं का राज्य था। इन्होंने गंगा तट पर बसे हस्तिनापुर को अपनी राजधानी बनाया था। कुरुओं के राज्य के समान ही 'पांचाल' था, जहां द्रुपदराज शासक थे।

कौरव एवं पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य थे। आचार्य द्रोण ने ही इनको धनुर्विद्या की शिक्षा दी थी। आचार्य द्रोण पांचाल नरेश द्रुपदराज के बचपन के मित्र थे।

एक बार की बात है, आचार्य द्रोण संकट में थे। वह सहायता के लिए द्रुपदराज के पास गए। उन्होंने मित्रता की बात कही। राजा ने परिहास किया—"मित्रता तो बराबर वालों से होती है। आप भिखारी ब्राह्मण और मैं पांचाल नरेश! हमारी आपकी कैसी मित्रता?" बात द्रोण को लग गई।

समय बीतता रहा। बाद में कुरुओं की राज-सभा में उन्हें स्थान मिल गया। कौरवों एवं पांडवों को उन्होंने शस्त्र-शिक्षा देनी शुरू की। द्रुपदराज से मिले अपमान को वह कभी नहीं भूल सके।

गुरु को गुरु-दक्षिणा देने का समय आ गया। गुरु ने अपनी दक्षिणा मांगी। गुरु द्रोण को वर्षों पूर्व हुए अपने अपमान का बदला लेना था। उन्होंने अपने शिष्यों से राजा द्रुपद को बांध कर लाने को कहा।

पांडवों के लिए द्रुपदराज को जीतना कोई बड़ी

एक रूप दो नाम

—हरदेव कृष्ण

गंगा के किनारे एक गांव था। उस गांव में रामदीन नामक एक मेहनती किसान रहता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा—"काम करते-करते सारी उम्र बीत गई। अब भजन करना चाहिए।"

"मैं तो हर रोज शिवजी का नाम जपती हूं।"—पत्नी बोली।

"विष्णु भगवान का नाम लिया करो। वह सबसे महान हैं।"—रामदीन बोला।

दोनों में बहस छिड़ गई।

उन्हीं दिनों उस गांव में एक महात्मा जी पधारे। गंगा किनारे उन्होंने अपनी कुटिया बनाई।

रामदीन और उसकी पत्नी ने उन्हीं के पास जाने का निश्चय किया। महात्मा जी उनकी बात सुनकर हंस दिए। कहा—"मैं तुम्हारी समस्या का हल आज नहीं, कल करूंगा। तुम लोग सुबह इसी जगह आ जाना।" दोनों ने महात्मा जी को प्रणाम किया और अपने घर चले गए।

दूसरे दिन रामदीन अपनी पत्नी के साथ महात्मा जी के पास पहुंचा। "आ गए तुम लोग?"—महात्मा जी बोले।

"जी!"—रामदीन ने हाथ जोड़कर कहा। महात्मा जी ने गंगा के एक किनारे की ओर इशारा करते हुए कहा—"तुम लोग वहां स्नान करके आओ। फिर मैं तुम्हारी शंका का समाधान करूंगा।" महात्मा जी की बात सुन, पति-पत्नी स्नान करने चले गए।

कुछ देर बाद वे लौट आए। महात्मा जी ने पूछा—"कैसा महसूस कर रहे हो?"

"बिलकुल तरोताजा महात्मा जी।"—रामदीन बोला।

"लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं हुई। ऐसा करो, वह जो सामने घाट दिखाई दे रहा है, वहां जाकर स्नान करो।"—महात्मा जी ने कहा।

बात नहीं थी। अर्जुन जैसा वीर धनुर्धर उनका सबसे प्रिय शिष्य था। देखते-देखते अर्जुन द्रुपदराज को जीत कर बंदी बना लाए।

आचार्य द्रोण ने पराजित द्रुपद से कहा—"याद करो वह दिन, जब मैं सहायता के लिए तुम्हारे पास गया था। तुमने मेरा अपमान किया था। कह दिया था कि मित्रता तो बराबर वालों में होती है। आज तुम्हारे पास कुछ नहीं है। तुम मेरी दया पर हो। मैं तुम्हें पांचाल का आधा राज्य देकर अपने समान बना रहा हूं। क्यों अब तो हम मित्र हो गए न ?"

राजा द्रुपद सिर झुकाए आचार्य द्रोण के व्यंग्य बाण सहते रहे। और कोई उपाय भी नहीं था। लेकिन उन्होंने मन ही मन इस अपमान का प्रतिशोध लेने का निश्चय कर लिया।

आखिर बहुत सोच-विचार के बाद द्रुपद ने तप करने का निश्चय किया। तपस्या के बल पर वे एक ऐसा बलवान पुत्र प्राप्त करना चाहते थे, जो द्रोण को मारने में सफल हो सके। इसके लिए उन्होंने तप करके कश्यप ऋषि के वंशज उपयाज को प्रसन्न किया। उन्हें संतुष्ट कर उनसे और याज ऋषि से पुत्र प्राप्ति हेतु यज्ञ करवाया।

विधिवत यज्ञ पूरा हुआ। उसकी पूर्णाहुति पर अग्नि से एक तेजस्वी पुरुष प्रकट हुआ। ब्राह्मणों ने कहा—"यह पुत्र अग्नि से पैदा हुआ है। अग्नि से उत्पन्न होने के कारण इसमें आचार्य द्रोण के वध की योग्यता है। यही उसमें सफल होगा। अतः इसका नाम 'धृष्टद्युम्न' रखा जाए।'

उसके बाद होम की वेदी से एक कन्या का भी जन्म हुआ। कन्या का जन्म प्रतिशोध के लिए किए गए यज्ञ की वेदी से हुआ, इसीलिए ब्राह्मणों ने उसका नाम रखा—'याज्ञसेनी।' पांचाल नरेश को पुत्री एवं पुत्र, दोनों की प्राप्ति यज्ञ से ही हुई थी। बाद में द्रुपदराज की यही पुत्री पांचाली, द्रोपदी, कृष्णा, श्यामा कई नामों से जानी गई। ●

पति-पत्नी ने वहां जाकर स्नान किया।

उन्हें आया देख महात्मा जी बोले—"नहीं, अभी तुम्हारा शरीर शुद्ध नहीं हुआ है। तुम उस दूसरे घाट पर जाकर स्नान करो।" वे दोनों तीसरी बार स्नान करने चले गए।

कुछ देर बाद जैसे ही वे लौटे, महात्मा जी ने फिर उनके स्नान में खोट निकाल दिया। बेचारे पति-पत्नी बार-बार स्नान करके उकता चुके थे।

महात्मा जी ने कहा—"इस बार तुम गंगा पार वाले घाट पर जाकर स्नान करो। वह घाट सबसे पवित्र है। तुम्हें उसका लाभ अवश्य मिलेगा।"

रामदीन ने विनम्रता पूर्वक कहा—"महात्मा जी, गंगा मैया तो एक ही है। चाहे इस घाट पर नहाएं चाहे उस घाट पर।"

उसकी बात सुन महात्मा जी ठठाकर हंस पड़े। बोले—"देखा, तुमने अपनी उलझन खुद ही सुलझा ली।"

रामदीन हैरान हो गया। बोला—"कैसे महात्मन् ?"

महात्मा जी फिर हंसे। कहने लगे—"जिस तरह गंगा मैया की महिमा सभी घाटों पर एक ही है, उसी तरह परमेश्वर की शक्ति भी सभी जगह एक जैसी है। विष्णु और शिव एक ही शक्ति के दो नाम हैं।"

रामदीन और उसकी पत्नी की समझ में सारी बात आ गई। ●

पेड़ में धन

—शांता ग्रोवर

एक युवक अपनी धुन में चला जा रहा था। शाम होने को थी। अचानक उसने देखा—एक जगह आग के गोले उठ रहे थे। एक व्यक्ति पीपल की ओर जैसे ही बढ़ता, तो धरती आग के गोले उगलने लगती थी। उसके पीछे हटते ही आग बुझ जाती थी।

युवक को यह देख, भारी आश्चर्य हुआ। उस व्यक्ति के पास जाकर बोला—"नमस्ते भाई।"

वह व्यक्ति डर गया। उसने पलटकर देखा, अपनी घबराहट पर काबू पाते हुए वह बोला—"नमस्ते भाई, कौन हो तुम ?"

युवक बोला—"मेरा नाम शेरसिंह है। मैं पास के गांव रामपुर में रहता हूं।"

वह व्यक्ति बोला—"मेरा नाम बलभद्र है। मैं दीनापुर गांव का रहने वाला हूं। तुम कहां जा रहे हो ?"

"कुछ दिनों बाद मेरी बहन की शादी है। उसी के लिए धन कमाने शहर जा रहा हूं। लेकिन यहां उठ रही आग ने मेरा ध्यान खींच लिया। मैं ठिठक कर खड़ा हो गया। वह कैसी आग थी भाई ?" —शेरसिंह बोला।

बलभद्र बोला—"दोस्त, मेरे पिता मरते समय सारा धन पीपल की कोटर में रख गए थे। धन की तंगी के कारण यहां आया था। लेकिन मैं धन निकालने को आगे बढ़ता हूं, तो इस पेड़ के आस-पास की धरती आग के गोले उगलने लगती है।"

शेरसिंह बोला—"बलभद्र, मुझे तुम्हारी मदद करनी चाहिए। मैं धन लाने की कोशिश करता हूं।"

शेरसिंह पेड़ की तरफ गया। ज्योंही वह कोटर की ओर हाथ बढ़ाने लगा, आग के गोले उठने लगे।

बलभद्र बोला—"शेरसिंह, लौट आओ।"

शेरसिंह इशारे को अनदेखा कर, पेड़ के एकदम करीब पहुंच गया। दूसरी तरफ आग थी। आग के बाहर कुछ दूरी पर बलभद्र खड़ा था। आग के गोले शेरसिंह को छूकर बुझ रहे थे। शेरसिंह डरकर भागा नहीं, बल्कि वहीं खड़ा रहा। कुछ देर बाद आग बुझ गई।

शेरसिंह ने धन निकालने के लिए कोटर में हाथ डाला। उसे लगा वहां धन नहीं है बल्कि कुछ और ही है। उसने भीतर झांका। अंदर का दृश्य देखकर, वह हैरान रह गया। वहां दो बौने रस्सियों से बंधे हुए थे। शेरसिंह ने उन्हें बाहर निकाला।

शेरसिंह ने बौनों से पूछा—"कौन हैं आप ? यहां कैसे आ गए ?"

"हम बौनों की नगरी के राजदूत हैं पर हमने भारी अपराध किया था। दंडस्वरूप हमारे राजा ने हमें यहां बांध रखा है।" —बौने बोले।

"कैसा अपराध ?" —शेरसिंह ने पूछा।

"पड़ोसी राजा ने हमारे राज्य पर आक्रमण करने का पत्र भेजा था। हमारी सेना उनके मुकाबले कमजोर थी। इसलिए हमारे राजा ने हमें तुरंत उसके पास संधि का संदेश देने भेजा। हम जब जा रहे थे, तो रास्ते में

एक जगह बहुत रसीले फल लटके नजर आए । हम फल खाकर सुस्ताने लगे । नींद आ गई । सुबह हमारी नींद खुली । हमें पता चला कि पड़ोसी राजा ने हमारे देश पर हमला कर दिया है ।

"राजा ने क्रोधित होकर हमें यहां बंदी बना दिया । इस पेड़ के आसपास आग का घेरा बना दिया । उन्होंने कहा कि जब कोई वीर पुरुष आग के घेरे को लांघकर तुम्हें बंधन मुक्त करेगा, तभी तुम राज्य में प्रवेश पा सकोगे ।"

"अच्छा, तो इसीलिए आग जल उठती थी ।" —शेरसिंह बोला ।

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि बौनों का राजा वहां प्रकट हुआ । बौनों से पूछने लगा—"किसने आग का घेरा लांघने की हिम्मत की है ?"

बौनों ने झुककर अपने राजा को प्रणाम किया । वे शेरसिंह को आगे करते हुए बोले—"महाराज, इसने ।"

"क्या नाम है तुम्हारा ?" —राजा ने पूछा ।

"जी, मेरा नाम शेरसिंह है ।" —शेरसिंह ने कहा ।

—"हम तुम्हारी वीरता से बहुत प्रसन्न हैं । बोलो, क्या इनाम चाहिए तुम्हें ? तुम्हारे ही कारण इन दोनों को कैद से छुटकारा मिल सका है ।"

शेरसिंह बलभद्र की ओर इशारा करके बोला—"बलभद्र के पिता इस पेड़ में धन रख गए थे । वह जब भी यहां धन लेने आता था, तब यहां आग जल उठती थी । वह भयभीत होकर भाग खड़ा होता था । आज भी ऐसा ही हुआ । उसका धन यहां से लेने के लिए ही मैं इस तरफ आया हूं ।"

राजा ने कोटर में हाथ डाला । वहां नीचे सचमुच एक गठरी पड़ी थी । उसने वह गठरी निकालकर शेरसिंह को दे दी । बोला—"इस धन के वास्तविक अधिकारी तुम हो । कायर को कुछ नहीं मिलना चाहिए ।" पर शेरसिंह ने धन लेने से मना कर दिया ।

राजा शेरसिंह की वीरता और निःस्वार्थ स्वभाव को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । उसने अपने गले में पड़ी मोतियों की माला निकालकर शेरसिंह को दे दी । कहा —"शेरसिंह, यह हमारी तरफ से उपहार समझकर रखो ।"

शेरसिंह ने राजा का उपहार स्वीकार कर लिया । राजा बौनों को लेकर लौट गया ।

शेरसिंह बलभद्र के पास जाकर बोला—"मित्र, अपनी यह अमानत संभालो ।"

बलभद्र बोला—"दोस्त, यदि तुम हिम्मत कर आग को पार न करते, तो मेरा धन हमेशा वहीं पड़ा रहता । इसे तुम ही रखो ।"

"मित्र, मैंने तुम्हारी सहायता की है । यह धन तुम्हारा है और तुम्हारा ही रहेगा ।" —यह कहते हुए शेरसिंह ने गठरी बलभद्र के हाथों में रख दी ।

बलभद्र की आंखों में आंसू थे । गठरी उसे थमाकर शेरसिंह अपने रास्ते चल दिया । •
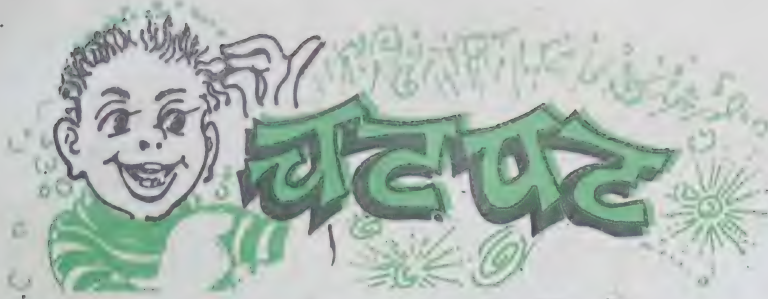
□ अध्यापक—सोहन, तुम इतने छोटे-छोटे अक्षर क्यों लिखते हो ?
सोहन—सर, इससे स्याही और कागज दोनों की बचत होती है।

□ एक मित्र—आज तुमने बड़ी खराब घड़ी पहनी है।
दूसरा मित्र—हां, क्योंकि आजकल दुकान पर इससे भी ख़राब घड़ियां बनने को आ रही हैं।

□ एक महिला—बहन जी, आप बार-बार टॉमी के बारे में क्यों पूछ रही हैं ?
दूसरी महिला—क्योंकि उसके यहां रहते मेरा आपके घर में घुसना मुश्किल है।

□ एक खिलाड़ी—यह खेल कब खत्म होगा ?
दूसरा खिलाड़ी—जब मैं रेफरी को सीटी लौटा दूंगा।

□ किराएदार—भाई साहब ! दरवाजों की मरम्मत कब होगी ?
मकान मालिक—जब तुम लकड़ी के चूल्हे की जगह गैस का चूल्हा इस्तेमाल करने लगोगे।

□ धोबी—साहब, पिछली सर्दी में आपने सूट धुलवाया था। उसका अभी तक पैसा नहीं मिला है।
ग्राहक—अरे, याद आ गया। उस सूट में धुलाई के रुपए रखे थे। लगता है सूट धोते समय तुमने उन रुपयों को भी धो दिया।

□ मां—बेटा, तुम इस बार बहुत कम नम्बरों से पास हुए हो ?
बेटा—हां मां, इस बार सारे पर्चे मैंने अपने दिमाग से हल किए थे।

□ एक पहलवान-वकील साहब, आप मेरा केस लड़ सकते हैं ?
वकील—केस तो लड़ सकता हूं। पर फीस के लिए तुमसे लड़ाई कौन करेगा ? तुम कोई दूसरा वकील ढूंढ़ लो।

□ ग्राहक—चीनी में चींटें बहुत हैं, मैं ऐसी चीनी नहीं लूंगा।
दुकानदार—भाई साहब, लेकिन मैं तो आपसे सिर्फ चीनी का ही दाम ले रहा हूं।

□ राम—लगता है,रमेश ने तुम्हारे दांत तोड़ दिए हैं।
विनय—तोड़े तो हैं, पर असली नहीं। असली दांत तो मैंने जेब में रख लिए थे।

□ अधिकारी—तुम्हारे कपड़े तो बहुत साफ-सुथरे हैं। तुम किससे कपड़े धुलवाते हो ?
कर्मचारी—पड़ोस में धोबी का घर है। वही रोज धुले-धुलाए कपड़े दे जाता है।

□ अध्यापक—सुरेश, अच्छा बताओ कुत्ता भौंकते समय काटता क्यों नहीं ?
सुरेश—सर, एक समय वह दो काम कैसे कर सकता है ?

□ पिता—पिंकी, तुमने पांच सौ रुपए की कुर्सी तोड़ दी ?
पिंकी—पिता जी, मुझे कुर्सी की कीमत मालूम नहीं थी। नहीं तो मैं बिल्ली को मारने के लिए इतनी महंगी कुर्सी क्यों फेंकती।

□ एक मित्र—तुम अपनी कार में हमेशा दो-तीन आदमियों को क्यों बैठा लेते हो ?
दूसरा मित्र—बरसात का मौसम है। कार पानी में फंस जाए तो निकालने के लिए मैं आदमियों को कहां ढूंढ़ता फिरूंगा !

□ अध्यापक—मच्छर अधिकतर गंदे स्थानों पर रहते हैं।
छात्र—क्योंकि लोग उन्हें भगाने के लिए उन स्थानों पर कम ही जाते हैं।

□ ग्राहक—मैं आपके यहां से घड़ी ले गया था। वह चार दिन चली। उसके बाद खराब हो गई।
दुकानदार—ताज्जुब है, घड़ी चार दिन चली कैसे ? दुकान में तो वह चुपचाप पड़ी रहती थी।

□ मेजर—तुम कितनी गोलियां खा सकते हो ?
जवान—आप जितनी चाहेंगे, उतनी गोलियां खा सकता हूं। बस,वे थोड़ी अधिक मीठी होनी चाहिएं।

तेनालीराम (३१८)

दिन में अंधेर

विजयनगर में एक स्थान पर बांध बनना था । बांध के घेरे में एक गांव की जमीन भी आती थी । पर गांव वाले वह जमीन छोड़, दूसरी जगह बसने को तैयार नहीं थे । गांव में हजार वर्ष पुराना एक मंदिर था । गांव वालों का कहना था, बांध कहीं और बनना चाहिए ।

राजा के कारिंदे गांव वालों पर जोर-जबरदस्ती करने लगे । उन्होंने महाराज से मिलकर अपना कष्ट कहना चाहा, पर उन्हें राजधानी नहीं जाने दिया गया । आखिर गांव वालों ने कुछ लोगों को गुपचुप तेनालीराम के पास मिलने भेजा ।

एक रोज महाराज कृष्णदेव राय रथ में कहीं जा रहे थे । एक स्थान पर राजा ने कुछ लोगों को खड़े देखा । उन सबके हाथों में जलती हुई मशालें थीं । देखकर राजा हैरान रह गए । उन्होंने तेनालीराम से पूछा —''दिन में मशालें क्यों ? ये लोग मूर्ख हैं ?''

तेनालीराम ने कहा —''नहीं अन्नदाता, ये शायद कह रहे हैं —विजयनगर में दिन में भी अंधेर है ।''

''पूछो, इनसे क्या बात है ? बुलाओ ।'' —राजा ने आदेश दिया ।

गांव वालों को राजा से अपना कष्ट कहने का मौका मिल गया । राजा ने तुरंत आदेश दिए कि बांध की पूरी योजना की जानकारी उन्हें दी जाए । और गांव वालों को आश्वासन दिया कि उनकी समस्या हल की जाएगी ।

गांव वालों ने तेनालीराम को धन्यवाद दिया, तो राजा समझ गए । ध्यान आकर्षित करने का तरीका तेनालीराम ने ही उन्हें बताया था । उन्होंने तेनालीराम से पूछा तो बोला —''महाराज, उन्होंने मशालें फेंक दी हैं । उन्हें न्याय मिल गया ।'' राजा कृष्णदेव राय मुसकराने लगे ।

धीरे धीरे
आता
जाड़ा
चित्र : हेमंत चौहान
सर्वेश

दिखावे से दूर

— जयप्रभा

गांधी जी तब अफ्रीका में थे। उनके सत्याग्रह की खबरें सारी दुनिया में फैल चुकी थीं। उन्हीं दिनों वह लंदन गए। यह खबर वहां पढ़ने वाले भारतीय छात्रों को भी मिली। उन्होंने गांधी जी से कहा तो गांधी जीं उनके जलसे में भाषण देने को तैयार हो गए।

भाषण से पंहले खाने-पीने का प्रबंध था। वे युवक तैयारियों में लगे हुए थे। कोई रसोई बना रहा था। कोई बरतन साफ कर रहा था। इन लोगों के साथ एक दुबला-पतला आदमी भी काम कर रहा था। था वह हिंदुस्तानी ही। उसे वहां कोई जानता पहचानता नहीं था।

शाम हो गई। लोग जमा होने लगे। उन लड़कों को फिक्र हुई। वे सोचने लगे कि यदि गांधी जी न आए तो क्या होगा?

तभी एक नेता वहां आए। उन्होंने युवकों के बीच काम करने वाले आदमी को आदर से नमस्कार किया। दोपहर से गांधी जी उनके साथ दावत का इंतजाम करने में लगे थे।

युवकों ने बार-बार क्षमा मांगी। कहने लगे—"हमने आपको पहले नहीं देखा था। नहीं तो आपको कष्ट न करने देते।"

लेकिन गांधी जी न माने। वह उसी तरह काम में लगे रहे। उन्होंने मेज पर बरतन लगाए। भोजन भी परोसा। जब सब खा चुके तब सभापति बन गए और भाषण दिया।

गांधी जी में झूठा बड़प्पन नाम को भी न था।

ऐसे थे हमारे बापू
प्रेरक प्रसंग

चित्र : रमाकांत शर्मा

बालक का उपहार

गांधी जी को सारा देश प्यार करता था। वह लोगों के प्यार का बड़ा मान करते थे। खास तौर से बच्चों के प्यार में तो जैसे वह अपने को भूल ही जाते।

एक बार वह बंबई गए। वहां मारवाड़ी स्कूल में ठहरे। स्कूल के बहुत से बालक आकर उनसे बातें करते रहे। कुछ बच्चों ने प्यार से चीजें भेंट कीं।

गांधी जी के चलने का समय हो गया। वह अपना सामान बांधने लगे। सामान पूरा बंध चुका था लेकिन वह कुछ ढूंढ़े जा रहे थे। काका कालेलकर ने पूछा—"आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?"

बापू ने कहा—"एक पेंसिल थी। वह नहीं मिल रही है।" काका कालेलकर ने कहा—"आप मेरी पेंसिल ले लीजिए।"

बापू ने वह पेंसिल न ली। बोले—"वही पेंसिल मिलनी चाहिए। उसे खोने का मुझे हक नहीं है। मद्रास में एक लड़का मुझे प्यार से अपनी पेंसिल दे गया था। वह मेरे पास बहुत दिनों से है।"

सब लोगों ने मिलकर ढूंढ़ी तो मिल गई। पेंसिल दो इंच से भी छोटी थी। बापू ने उसे संभालकर रख लिया। तब कहीं चलना हो सका।

बापू प्यार की कीमत जानते थे।

पूरा चांद

— डा. उषा सिंहल

सैकड़ों साल पुरानी बात है । उन दिनों चीन का गोबी रेगिस्तान दूर-दूर तक फैला था । सब जगह रेत ही रेत था, न पेड़, न झाड़ी । और तो और, कहीं कोई छोटा पौधा तक दिखाई न देता था । कहीं पर पानी की एक बूंद तक न थी ।

सनवेई पहाड़ की तलहटी के पास थोड़ी-सी हरियाली थी । वहीं पर कुछ लोग रहते थे । खेती करके गुजर-बसर करते थे ।

एक साल बहुत भारी अकाल पड़ा । कुओं का पानी सूख गया । पेड़ों के पत्ते झड़ गए । खेतों में एक दाना तक न हुआ । लोगों पर भारी विपदा आ पड़ी । बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे । यह देखकर माता-पिता की आंखों से आंसू झरने लगे ।

एक दिन की बात है । सफेद बादलों वाली परी उस रास्ते से गुजर रही थी । अचानक उसे लोगों के जोर-जोर से रोने की आवाज सुनाई दी । वह थोड़ा नीचे उतरी । लोगों की हालत देखी । रोते-बिलखते परिवारों को देखकर उसके दिल में दुःख भरी टीस उठी । पर वह एकदम लाचार थी ।

नागराज अथवा मेघराज की कृपा के बिना वह उनकी कोई सहायता न कर सकती थी । इसी कारण उसकी आंखों में आंसू आ गए । टप-टप करके जमीन पर गिरने लगे । जमीन पर गिर रहे आंसू एक झरने के रूप में बदल गए ।

पानी एकदम साफ, मोती की तरह चमकदार । पानी बहने की आवाज ऐसी मीठी कि जैसे कोई मधुर स्वर में गाना गा रहा हो । लोगों ने जब यह आवाज सुनी, तब वे खुशी से झूम उठे । ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए झरने के पास पहुंचे । नमस्कार की मुद्रा में अपने दोनों हाथ जोड़कर उन्होंने आकाश की ओर देखा । उन्हें सफेद बादलों वाली परी दिखाई दे गई ।

ऐसा लगा जैसे भगवान बुद्ध स्वयं परी के रूप में उनकी सहायता करने आए हों । उन्होंने वहां एक बौद्ध मंदिर बनाने का संकल्प किया । जब मंदिर बनकर तैयार हो गया, तब भगवान बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की । सबके चेहरे खुशी से दमक रहे थे । उनके हाथों में धूप-बत्तियां थीं । चहल-पहल ऐसी मानो कोई त्योहार मनाया जा रहा हो ।

सनवेई पहाड़ के इलाके पर रेत देवता का साम्राज्य था । वह ठीक उसी दिन पश्चिम की यात्रा से लौटा था । उसने देखा कि उसका मंदिर एकदम सूना पड़ा है। चारों ओर घुप्प अंधेरा । किसी ने वहां एक दीया तक न जलाया था । यह देखकर वह सारी बात समझ गया । उसे बहुत गुस्सा आया । धरती पर जोर से पैर पटकते हुए कहा—"ओ सफेद बादलों वाली परी, तेरी इतनी हिम्मत कि मेरे इलाके में आकर लोगों को मेरे विरुद्ध उकसाए । अपनी शक्ति पर इतना गर्व ! मैं तुझे अच्छी तरह देख लूंगा । तुझे ऐसा दंड दूंगा कि जिंदगी भर याद रखेगी । इस इलाके के लोगों को भी बता दूंगा कि मेरी उपेक्षा करने का क्या परिणाम होता है ।"

यह कहकर उसने एक मुट्ठी रेत उठा, झरने पर छिड़कते हुए कहा—"उठो !" देखते ही देखते झरने के बीचोंबीच रेत का बहुत ऊंचा ढूह खड़ा हो गया । ढूह क्या था, रेत का पहाड़ ही था । पानी बहना बंद हो गया । दूर-दूर तक पानी की एक बूंद भी न थी ।

रेत देवता की करतूत के कारण लोगों के जीवन में एक बार फिर दुःख के काले बादल मंडराने लगे। उन्होंने रेत देवता को जी भरकर कोसा। सफेद बादलों वाली परी को सहायता के लिए बार-बार पुकारा। लोगों की पुकार सुनकर परी उन्हें देखने आई। झरने की जगह रेत के पहाड़ को देखकर वह समझ गई कि यह काम रेत देवता का ही हो सकता है—उसी रेत देवता का जो उससे ईर्ष्या करता है।

सफेद बादलों वाली परी ने रेत देवता को मन ही मन खूब धिक्कारा। यहां तक कहा कि निरीह और निरपराध लोगों के साथ बुरा व्यवहार करने वाले को अपने किए की सजा जरूर मिलती है। उसे मालूम था कि वह स्वयं उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। रेत देवता अपने इलाके में सर्वशक्तिमान था। वहां किसी दूसरे की एक न चलती थी। यह विचार आते ही परी सोच में पड़ गई। उसने अपने माथे पर हाथ रखा। मन ही मन कोई योजना बनाई, फिर आकाश में ऊपर ही ऊपर उड़ चली।

परी उड़ते-उड़ते स्वर्ग जा पहुंची। उसने स्वर्ग की रानी से मिलने का निश्चय किया। स्वर्ग की रानी चांद की देवी के नाम से प्रसिद्ध थी। रानी ने परी को महल के भीतर बुला लिया। कहा—''मैं जानती हूं कि तुम बहुत जरूरी काम पड़ने पर ही स्वर्ग आती हो। बताओ, आज किसलिए आई हो? मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकती हूं?''

यह सुनकर परी चुप रही। रानी ने फिर कहा—''तुम बड़ी घबराई-घबराई लग रही हो। डरो मत। अपनी परेशानी बेधड़क होकर कहो। किसी प्रकार का संकोच मत करो।''

रानी के इस प्रकार अनुरोध करने पर परी बोली—''रानी जी, आपके सामने संकोच कैसा! मैं आपसे चांद उधार मांगने आई हूं।''

रानी ने पूछा—''तुम चांद का क्या करोगी?'' परी ने विनम्रता पूर्वक कहा—''गोबी रेगिस्तान में पहाड़ की तलहटी में रहने वाले लोग बहुत गरीब और दुखी हैं। रेत देवता उन पर लगातार अत्याचार करता रहता है। जब मैंने इन गरीब लोगों की दयनीय दशा देखी, तब उनकी मदद के लिए एक झरना बना दिया। इससे उनकी परेशानियां कम हो गईं। रेत देवता मुझसे नाराज हो गया। बदला लेने और नीचा दिखाने की भावना से उसने झरने को रेत से भर दिया। रेत का पहाड़ ही खड़ा कर दिया। मैं चांद उधार लेकर रेत देवता का मुकाबला करना चाहती हूं। लोगों के दुःख-दर्द दूर करके उन्हें खुशहाल बनाना चाहती हूं।''

रानी बोली—''तुम बहुत अच्छा काम कर रही

हो। अच्छा काम करने वालों की सहायता करना मेरा कर्तव्य है। लेकिन एक परेशानी है। चांद तो अभी केवल पांच दिन का ही है।''

परी बोली—''आप इसकी चिंता न करें। मेरा काम बाल चंद्र से ही चल जाएगा।''

रानी ने उसे चांद ले जाने की अनुमति दे दी। परी ने रानी को धन्यवाद दिया।

उसने चांद को अपने दोनों हाथों में पकड़ा और गोबी रेगिस्तान की ओर चल दी। रेगिस्तान में पहुंचने तक परी के हाथों में चांद पूर्ण हो गया। वह रेत के टीले के भीतर छिपे झरने के पानी को अपनी ओर आकर्षित करने लगा। धीरे-धीरे रेत बह गई। झरने का पानी फिर से बहने लगा। पानी इतना साफ और चमकदार था कि उसमें अपने चेहरे का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता था। जब लोगों ने पानी बहने की आवाज सुनी, तब वे खुशी से नाच उठे।

रेत देवता के कानों में भी पानी बहने और लोगों के खुशी से नाचने की आवाज पहुंची। वह गुस्से से पागल हो उठा। अपनी जादुई शक्ति से झरने वाली जगह पर रेत का पहाड़ खड़ा करने की कोशिश की।

चांद की देवी यानी रानी ने स्वर्ग से ही रेत देवता की नीयत भांप ली। रानी ने पहले आहिस्ता से, फिर जोर से अपने दोनों हाथ हिलाए। हाथ हिलाते ही हवा चली। रेत नीचे बैठने की जगह ऊपर ही ऊपर उड़ चला। सनवेई पहाड़ पर जाकर इकट्ठा होने लगा।

यह देखकर रेत देवता बहुत जोर से दहाड़ा। जोर-जोर से पैर पटके। भरपूर कोशिश की कि रेत आसमान से उड़कर पहाड़ पर एकता होने की जगह, झरने वाली जगह पर जाकर इकट्ठा हो जाए, पर चंद्रमा की देवी के आगे उसकी एक न चली। उसे बार-बार मुंह की खानी पड़ी।

यह देखकर, सफेद बादलों वाली परी बड़ी खुश हुई। उसने मन ही मन चंद्रमा की देवी को प्रणाम किया। समय पर दी गई सहायता के लिए आभार माना। लोगों ने मंदिर में जाकर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। ●

पुरस्कृत कथाएं

राम और राजा

एक गांव में राम और राजा नाम के दोस्त रहते थे। वे एक ही कक्षा में पढ़ते थे। दोनों की आपस में पक्की दोस्ती थी।

एक बार उनके गांव में देवी दुर्गा का जागरण किया जा रहा था। पुजारी नवदुर्गा की शक्ति, उनके मंदिरों तथा उनके दर्शन के लाभ के बारे में ग्राम वासियों को बता रहे थे। राम और राजा भी कथा को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। जागरण समाप्त हुआ। सभी लोग अपने-अपने घरों को चले गए। जागरण में मां दुर्गा के कई रूपों की चर्चा सुनकर, उनके मन में देवी के दर्शन करने की इच्छा हुई।

दोनों ने तय किया कि सुबह होते ही वे नैना देवी के दर्शन करने जाएंगे। प्रातः काल उठकर लोहे की एक-एक छड़ हाथ में लेकर वे चल दिए। उनके गांव और देवी के मंदिर के बीच एक सुनसान जंगल पड़ता था। जंगल में उन्हें एक घर दिखाई दिया। देखने में वह घर एक झोंपड़ी जैसा था, लेकिन अंदर से वह किसी महल से कम नहीं था। वे दोनों उस घर के अंदर गए।

वहां बहुत-से कमरे थे। उन कमरों में से एक कमरे में उन्हें रोशनी दिखाई दी। वे उस ओर गए। कमरे में पहुंचने पर उन्हें एक कोने में बहुत बड़ी सुरंग नजर आई। वे उस सुरंग में आगे बढ़ने लगे। लेकिन यह क्या! थोड़ी ही दूर चले होंगे कि सुरंग का मुंह बंद हो गया। राम और राजा डरकर इधर-उधर देखने लगे। तभी उन्हें बहुत सारे लोगों की सिसकियों की आवाजें सुनाई दीं।

उन्होंने रोने का कारण पूछा, तो पता चला कि उन सबको एक भयानक राक्षस ने पकड़ रखा है । अभी वे बातें कर ही रहे थे कि इतनी देर में वह राक्षस आ धमका । राक्षस ने उन दोनों को भी पकड़कर, उन व्यक्तियों के बीच पटक दिया । राक्षस पर उन्हें बड़ा क्रोध आया । लेकिन वे कर भी क्या सकते थे । लोग सिसकियां भर रहे थे । दोनों बालक कभी उन्हें देख रहे थे, तो कभी एक-दूसरे को । राम और राजा ने मिलकर एक योजना बनाई ।

अब सिसकियां एकाएक बंद हो गईं । वातावरण मातमी नजर आ रहा था । राम और राजा आपस में खुसुर-पुसुर कर रहे थे । तभी राक्षस वहां आ गया । वह बारी-बारी से कभी राम और राजा की ओर देखता, तो कभी दूसरे लोगों की ओर । राक्षस दबे पांव राम और राजा की ओर बढ़ा । वह उन तक पहुंचने ही वाला था कि राम और राजा ने बिजली की फुर्ती से राक्षस पर आक्रमण कर दिया । बाकी और लोग भी राक्षस पर टूट पड़े । राक्षस चीखता-चिंघाड़ता वहीं ढेर हो गया । सभी लोग राक्षस की कैद से आजाद हो गए ।

राम और राजा जंगल पारकर देवी मां के मंदिर की ओर चल दिए । वहां पहुंचकर उन्होंने देवी की मूर्ति के आगे सिर झुकाकर दंडवत किया और मां का आशीर्वाद लेकर खुशी-खुशी अपने घर को वापस आ गए ।

—सौरभ कौशिक, दिल्ली

यहीं रह जाओ

एक गांव में पति-पत्नी—विक्रांत और रोहिणी रहते थे । वे दयालु और मेहनती थे किंतु उनके कोई संतान नहीं थी । खेती से उनके दिन आराम से गुजर रहे थे ।

एक रात अचानक 'बाढ़ आ गई, भागो, दौड़ो' का शोर हुआ । पानी में सचमुच सामान बहने लगा था । अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था । जिसे जिधर रास्ता मिला, उधर ही दौड़ने लगा । विक्रांत और रोहिणी भी दौड़ते-दौड़ते एक अनजाने गांव में जा पहुंचे । बहुत थक गए थे और रात भी थी, अतः वे एक घर के बाहर सीढ़ियों पर बैठ गए । बैठते ही उन्हें गहरी नींद आ गई ।

अगली सुबह जल्दी ही विक्रांत की आंख खुल गई । उसने रोहिणी को भी उठाया । ठंडी हवा चल रही थी । पास के पेड़ पर पक्षी कलरव करने लगे थे, लेकिन अभी तक घरों के दरवाजे बंद थे, शायद कोई उठा नहीं था । उन्होंने कुएं से पानी निकालकर पिया । तभी सामने की झोंपड़ी से एक सुंदर-सा बालक निकला । गांव में अनजाने दम्पत्ति को देख, उसने स्नेहपूर्वक उनसे वहां आने का कारण पूछा । उन्होंने बालक को सारी बात बताई ।

बालक उन्हें अपनी झोंपड़ी में ले गया । वहां कोई और नहीं था । बालक ने बताया—"मेरा नाम रोहित है । मैं अकेला रहता हूं । मेरे माता-पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई । गांव वाले बहुत अच्छे हैं । मेरा एक खेत और एक बगीचा है । मैं बगीचे में फल-सब्जियां उगाकर अपनी जीविका कमाता हूं । बड़ा होने पर मैं खेत पर भी काम करूंगा ।"

रोहित और रोहिणी ने मिलकर भोजन बनाया । आज रोहित को भोजन बहुत अच्छा लगा । वह भी साथ बैठकर भोजन करने लगा । उसे अपने माता-पिता की याद आ गई । वह बोला—"आप मेरे माता-पिता बनकर यहीं रह जाइए ।" उसका प्यार भरा अनुरोध सुन, विक्रांत और रोहिणी ने उसे गले लगा लिया । उन्हें भी एक पुत्र मिल गया था । कुछ ही दिनों में वह गांव उन्हें अपना-सा लगने लगा । वे खेत पर भी काम करने लगे ।

इस तरह फिर से तीनों की नई खुशहाल जिंदगी शुरू हुई ।

—शीतलश्री, हुरड़ा (भीलवाड़ा)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : जे. प्रेक्षा जैन, मद्रास ; यश निगम, इंदौर ; मेनका कपूर, फैजाबाद ।

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अम्मां,— मुझे मेला दिखाएंगे न! (बाबा/बापू)

२. देखो, धीरे-धीरे चली आ रही है—। (गाड़ी/गाय)

४. मुझे नाटक में— नहीं बनना मास्टर जी! (भालू/भाई)

८. — ने दशहरे पर बड़ा कमाल दिखाया भैया! (मैना/मैकू)

९. — भागकर चिट्ठी दे आ। (ले/तू)

११. — होते तो मैं बन जाता नभ का राजकुमार! (शंख/पंख)

१२. सितार बजाने में इनके कमाल का क्या कहना!

ऊपर से नीचे

३. मिस्त्री को बुलाओ, आकर— ठीक करे। (घंटी/टोंटी)

५. आ-आ तोते,— खा! (चना/दाना)

६. क्या तुम— पर भी कविता लिख सकते हो? (रात/रानी)

७. अच्छा, तो इस— का क्या करोगे रहमान चाचा? (ऊंट/टाट)

१०. एक मिठाई खोए की!

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१०

नाम ____________________

उम्र ______ पता ____________________

____
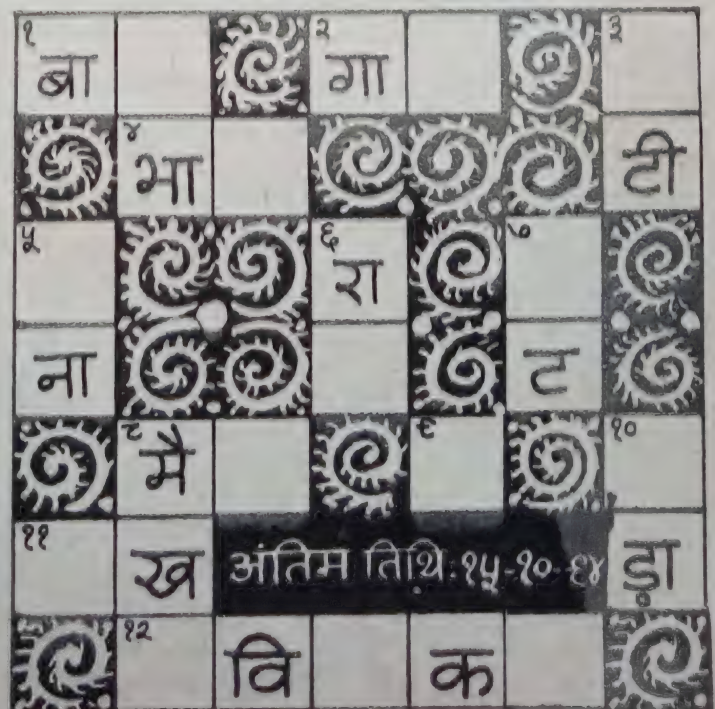
नं॰ ज्ञा॰ प॰ ३१०

हमारी धरोहर
पीढ़ी दर पीढ़ी
एकता
स्वतंत्रता
सामाजिक न्याय
davp94/236
48वाँ स्वतंत्रता दिवस

चुप राजकुमार

— संगीता भार्गव

कंचनपुर के राजा विमलदेव न्यायप्रिय और प्रजापालक थे। उनके कोई संतान न थी। राजा-रानी एक बार तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। जगह-जगह मंदिरों में दर्शन करते। संत महात्माओं की सेवा करते, उनका आशीर्वाद लेते और आगे चल पड़ते।

आखिरी पड़ाव में महात्मा चिन्नूर उनकी सेवा-भक्ति से प्रसन्न हुए। उन्होंने पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद दे दिया। आशीर्वाद देने के बाद महात्मा ने ध्यान लगाया, तो अपनी भूल पर पछताए क्योंकि राजा-रानी के भाग्य में संतान-योग ही न था। अब क्या करें ? दिया हुआ वचन वापस भी नहीं लिया जा सकता था।

महात्मा चिन्नूर ने राजा-रानी को अपनी गलती के बारे में बताया,तो राजा विमलदेव ने कहा—''महात्मा जी, संतों का जीवन परोपकार के लिए होता है। इसलिए हम बड़ी आशा के साथ आपके पास आए थे और अब खुशी-खुशी घर लौट रहे थे। ऐसा कहकर आप हमें संतान-सुख से वंचित न करें।''—कहते-कहते राजा का गला भर आया।

राजा के विनती भरे बोल सुनकर महात्मा निरुत्तर हो गए। दृढ़तापूर्वक बोले—''अच्छा, जाओ, मेरा वचन सत्य होगा।'' राजा-रानी के लौट जाने पर महात्मा चिन्नूर ने समाधि ले ली, शरीर त्याग दिया और राजा के घर दूसरा जन्म ले लिया।

राजकुमार के जन्म लेने पर हर तरफ खुशियां छा गईं। राजकुमार का नाम आनंद रखा गया। लेकिन यह क्या ! राजकुमार जन्म से गूंगा था। सब तरह की चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न हुआ। धीरे-धीरे वह युवा हो गया। एक गूंगा व्यक्ति राजा कैसे बनेगा, यह सोचकर राजा-रानी एक बार फिर गहरे विषाद में डूब गए।

राजा ने अपने सभासदों के साथ विचार-विमर्श किया। सभी ने राजकुमार में और कोई कमी न होने के कारण उसे ही राजा बनाने की सलाह दी। उसके लिए योग्य मंत्री के चुनाव की बात कही।

अचानक एक दिन राजमहल से रानी की आभूषण-मंजूषा से नौलखा हार चोरी हो गया। राजा ने मुनादी करा दी कि जो भी चोर को पकड़ेगा,उसे राजकुमार के राज्याभिषेक के समय राज्य का मंत्री नियुक्त किया जाएगा।

मुनादी सुनकर विनय कुमार नाम के एक युवक ने चोर को पकड़ने का बीड़ा उठाया। उसने सोचा—'राजमहल में चोरी वही कर सकता है जो यह जानता हो कि रानी अपनी आभूषण-मंजूषा कहां रखती हैं ! फिर पेशेवर चोर केवल एक हार ही क्यों चुराता ? वह तो पूरी मंजूषा ही ले उड़ता। हो न हो, यह काम राजमहल के ही किसी व्यक्ति का है।' उसने राजमहल में रानी के कक्ष में आने-जाने वाले सभी नौकर-चाकरों की ज़ासूसी की। उनके घरों की तलाशी ली,पर सफलता न मिली।

राजकुमार आनंद प्रतिदिन सुबह शिव मंदिर में दर्शन के लिए जरूर जाता था। एक दिन विनय कुमार ने राजकुमार को मंदिर जाते देखा, तो वह भी कुछ सोचकर चुपचाप उसके पीछे हो लिया।

मंदिर में पहुंचकर राजकुमार शिव-प्रतिमा के सम्मुख जाकर धीरे से बोला—"हे प्रभु ! मुझे शीघ्र सांसारिक बंधनों से मुक्ति दो।" विनय कुमार राजकुमार को बोलता सुन, हैरान रह गया। वह राज दरबार में पहुंचा और बोला—"महाराज ! राजकुमार आनंद बोल सकते हैं।"

राजा ने शीघ्र राजकुमार को दरबार में लाने के लिए सिपाही भेजे, लेकिन राजकुमार फिर खामोश। बहुत पूछने पर भी वह कुछ न बोला। अब राजा ने गुस्से में आकर कहा—"इस झूठे, मक्कार को कारागार में डाल दो। इसकी चोर पकड़ने की मियाद भी अब खत्म हो गई है।"

सिपाही जैसे ही विनय कुमार को पकड़ने के लिए बढ़े, विनय कुमार ने कहा—'मैं चोर का पता नहीं लगा पाया, इस बात के लिए बेशक मुझे सजा मिलनी चाहिए, लेकिन राजकुमार के मामले में मैं निर्दोष हूं। राजकुमार की खामोशी का राज तो मैं नहीं जानता, लेकिन भगवान शिव से मुक्ति मांगने वाला, भला ऐसा पाप कैसे कर सकता है ? मैंने शिव मंदिर में स्वयं राजकुमार को बोलते हुए सुना है।"

तब राजकुमार आनंद ने हाथ से इशारा करके सिपाहियों को रोक दिया, फिर राजा के पास जाकर बोला—"पिता जी ! यह ठीक कहता है, मैं बोल सकता हूं। आपको चित्रूर की याद होगी। मैं ही चित्रूर हूं। यह मेरा दूसरा जन्म है। आपकी संतान की इच्छा और मेरा वचन, दोनों पूरे हो चुके हैं। इसलिए मैं मोह-माया के बंधनों से मुक्त होने का प्रयास कर रहा हूं। मैं गूंगा इसलिए बना रहा कि इस कमी के कारण
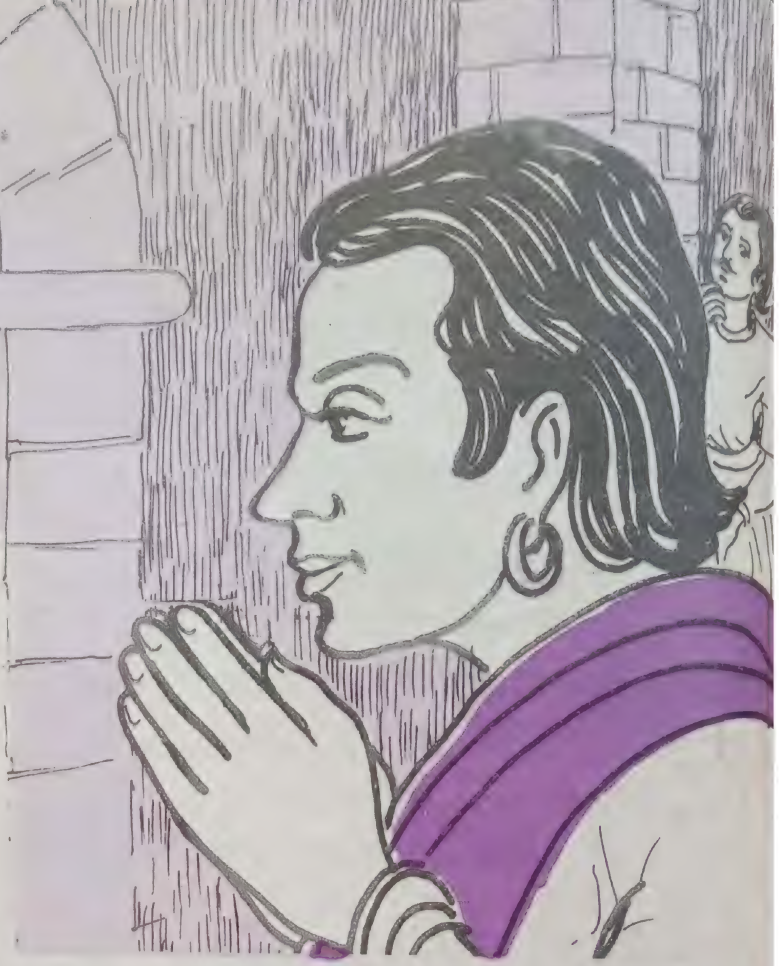
आप मुझे राजा नहीं बनाएंगे, लेकिन यह तरकीब सफल नहीं हुई। तब मैंने ही रानी मां का नौलखा हार आभूषण-मंजूषा से निकाला था। फिर छिपाकर रख दिया। चोरी का नाटक इसलिए किया क्योंकि कोई सुयोग्य, निडर और बुद्धिमान व्यक्ति ही मुझ तक पहुंच सकता था। ऐसे सुपात्र के मिल जाने पर उसे मंत्री के स्थान पर नियुक्त करने की बजाए राजा बना देने की इच्छा थी मेरी।"

राजा-रानी ने राजकुमार को बहुत रोका, लेकिन राजकुमार ने कहा—"मेरा जीवन तो परोपकार और तप को समर्पित हो चुका है। मैं इतने साल आपका पुत्र बन कर आपके पास रहा। आपके लिए इससे बढ़ कर खुशी की बात क्या हो सकती है ? दुनिया में सब कुछ सभी को नहीं मिलता। अब आप खुशी-खुशी मुझे जाने की अनुमति दें। विनय कुमार मेरे पीछे चोर की तलाश में आया था। इसलिए उसकी बुद्धिमानी पर शक नहीं किया जा सकता। वह दंड का पात्र नहीं है।"

कुछ दिनों के बाद विनय कुमार को राजा बनाकर राजा-रानी भी वन में तपस्या करने चले गए।●

चीटू-नीटू

हमेशा बड़ा बनने की चाह थी, लो आज यह ग्रंथ हाथ लग गया। स्कूल की किताबें बाद में, पहले इसे खरीदूंगा
बड़ा कैसे बनें
गणित

बड़ा बनने के तीन गुर बताए हैं- हमेशा बड़ा सोचो, बड़ा काम करने की हिम्मत पैदा करो, बड़े लोगों के विचार पढ़ो
अब तो इन्हीं का पालन...

खुशखबरी! पिताजी तुम्हें साइकिल दिलाने को मान गए
या तो 'मोपेड', नहीं तो साइकिल भी नहीं, बड़ी बात ही सोचनी चाहिए

आण्टी दोनों मटके नहीं उठा सकतीं छोटा तुम...
बड़ा मुझे उठवा दो, हमेशा बड़ा काम करने की हिम्मत पैदा करनी चाहिए
अब भरो पैसे

कल गणित की परीक्षा है और तुम...
बड़े लोगों के विचारों की पुस्तक हाथ लग गई... पहले इसे...
चीटू, गणित में तुम्हें जीरो मिला
बड़ा बनने के चक्कर में मैं तो छोटा भी नहीं रहा
0/100
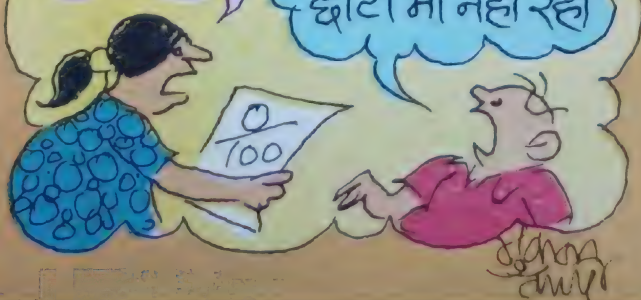
शीर्षक बताइए

हुई न वही बात, जो मैंने कही थी । इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं । आप भी सोचिए कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक । उसे पोस्ट कार्ड पर लिखकर १५ अक्तूबर, १९९४ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली ११०००१** के पते पर भेज दीजिए । चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

परिणाम—दिसम्बर '९४

पुरस्कृत चित्र

जयप्रकाश हेम्ब्रम, १४ वर्ष, ग्राम-सरैया, पो. चुल्हिया ; प्रखंड, मोहनपुर ; जि. देवघर (बि.)।

इनके चित्र भी पसंद आए—

मनीषा, करनाल ; सायमा अली, गोरखपुर रश्मि चौहान, जयपुर ; संजय कुमार, ५६ ए.पी.ओ.

अजब-अनोखी दुनिया

चीर-फाड़ के लिए मशीनी हाथ : बीमारों की चीरफाड़ यदि मशीनें करने लगें तो कैसा रहे ? मशीनी मानव (रोबोट) यह काम कर सकते हैं। दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी के प्रो. एस. के. गुहा ने एक मशीनी हाथ बनाया है। इसकी मदद से खतरनाक बीमारियों के रोगियों की चीर-फाड़ बिना हाथ लगाए की जा सकती है। प्रो. गुहा द्वारा तैयार की गई ऐसी ही मशीन की जांच, एक बड़े अस्पताल में की जा रही है।

साफ-सुथरी रहेंगी अब दीवारें : चुनाव का चक्कर हो या साबुनों के विज्ञापन। घरों की बाहरी दीवारें रातों-रात रंग दी जाती हैं। पोस्टर चिपका दिए जाते हैं। रात भर कोई दीवारों की पहरेदारी करने से तो रहा। अब अमरीका की एक कम्पनी ने इसका हल निकाला है। उसने ऐसा पेंट (वार्निश) तैयार किया है जिसे दीवार पर पोतने के बाद कुछ भी लिखना कठिन है। लिखावट का रंग सिमटकर बूंदों में बदल जाता है। कपड़ा फेरते ही लिखावट साफ।

सहजन के बीजों से साफ पेयजल : दुनिया की अस्सी फीसदी बीमारियों की जड़ है गंदा पानी। कई रोगों के कीटाणु पानी से ही फैलते हैं। करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी लोगों को शुद्ध पानी नहीं मिल पाता।

एक जर्मन वैज्ञानिक डा. सानिया ए. जान का कहना है—'सहजन (ड्रमस्टिक) की फलियों के सूखे बीजों से पानी शुद्ध किया जा सकता है।' इंडोनेशिया में हुई जांच से पता चला है कि एक पाव पानी को शुद्ध करने के लिए २०-२५ बीजों का चूर्ण काफी है। सूखे बीजों का चूर्ण हैजा और दस्त के कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। सहजन के बीज पानी को एक से दो घंटे के बीच ९० से १०० प्रतिशत तक साफ कर देते हैं।

थर्मोकोल की गोलियों से मच्छरों की रोकथाम : आदमी और मच्छरों की लड़ाई सदियों से चल रही है। मच्छरों पर कीटनाशी दवाओं का उपयोग बेअसर सिद्ध हो रहा है। उलटे कीट नाशकों का बुरा असर आदमियों पर पड़ रहा है।

दिल्ली के मलेरिया अनुसंधान केंद्र का कहना है कि थर्मोकोल की फूली हुई गोलियों से मच्छरों के अंडे देने वाले स्थानों को ढका जा सकता है। ये गोलियां हलकी होने के अलावा गीली भी नहीं होतीं। पानी की सतह पर फैलकर उसको ढक लेती हैं। इससे मच्छर अंडे नहीं दे पाते। यदि पानी में लार्वे और प्यूपे हों तो वे भी आक्सीजन न मिलने से मर जाते हैं। थर्मोकोल में कोई जहरीलापन भी नहीं होता।

कांच की स्लेट : पत्थर की स्लेट अब आसानी से नहीं मिलती। वह भारी और कमजोर भी होती है। उसके स्थान पर टीन और गत्ते की स्लेटें बाजार में आईं। वे भी ज्यादा नहीं चल पाईं। जल्दी खराब होने के कारण उन्हें फेंकना पड़ता है। अब कलकत्ता के सेंट्रल ग्लास एंड सिरेमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट ने ऐसी विधि निकाली है कि टीन की सतह पर चीनी मिट्टी और कांच की पतली पर्त चढ़ाई जा सके। ये स्लेटें मजबूत और सस्ती हैं।

— बृजमोहन गुप्त

मैं हूं रांगिया

— हर्षमोहन कृष्णात्रेय

बहुत वर्षों बाद राजा के घर एक लड़की ने जन्म लिया। उसी दिन राज की पशुशाला में हथिनी ने सफेद बच्चे को जन्म दिया। राजकुमारी जब बड़ी हुई, तो सफेद हाथी से खेलना बहुत पसंद करती थी। छोटा हाथी प्रायः राजकुमारी को अपनी पीठ पर चढ़ाकर घुमाया करता था। धीरे-धीरे यह दोस्ती बढ़ती गई। इसी प्रकार दोनों बड़े हो गए।

अब हाथी विशालकाय हो गया था। जब वह चलता, तो जमीन कांपती। जानवर डर-डरकर भागते। उसकी चिंग्घाड़ से पूरे जंगल के पशु-पक्षी कांप उठते।

एक दिन हाथी राजकुमारी को अपनी पीठ पर चढ़ाए बहुत दूर निकल गया। वन में न जाने उसने कौन-सी जड़ी-बूटी खा ली कि अचानक वह पागल हो गया। पागल होते ही उसकी शक्ति सौ गुनी बढ़ गई। राजकुमारी के पीछे चल रहे कर्मचारी भी उसे नहीं संभाल पाए। हाथी ने आस-पास के सभी लोगों को कुचलना शुरू कर दिया। सूंड में उठा-उठाकर सिपाहियों को पटकने लगा। फिर वह राजकुमारी को लिए अनजान दिशा की ओर भागने लगा। डर से राजकुमारी चीख रही थी। थोड़ी ही देर में हाथी राजकुमारी सहित आंखों से ओझल हो गया।

राजकुमारी को खोजने की जब सभी तरकीबें बेकार हो गईं, तो राजा ने घोषणा कराई— जो राजकुमारी को ढूंढ़कर ला सकेगा, उसे आधा राज्य दिया जाएगा और राजकुमारी से विवाह भी होगा।

उस समय पड़ोस के एक राज्य में दो भाई रांगिया और भुतुया रहा करते थे। रांगिया बहुत बलशाली और नरम स्वभाव का खूबसूरत युवक था। बड़ा भाई भुतुया भी यूं तो कम बलशाली नहीं था, लेकिन ईर्ष्यालु और क्रोधी स्वभाव का था। जब दोनों के कान में राजा की घोषणा पड़ी, तो उन्होंने राजकुमारी को

रही थीं। कई दिनों तक लगातार युद्ध चलता रहा। अंत में हाथी मारा गया। रांगिया ने देखा कि राजकुमारी दूर पहाड़ पर खड़ी है। न जाने क्यों हाथी ने राजकुमारी को जिंदा रखा था। राजकुमारी इस युवक की ताकत देख, मुग्ध थी। उसी समय भुतुया भी वहां पहुंच गया था और अपनी ताकत और कौशल का बखान करने लगा। राजकुमारी को भुतुया बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

लौटते समय तीनों को रात होने की वजह से एक भयानक वन में रुकने को मजबूर होना पड़ा। भुतुया की दृष्टि एक घर पर पड़ी। उसने वहीं रुकने का सुझाव दिया। तीनों उस घर में पहुंचे। उस मकान में उन्होंने हड्डियों का बहुत बड़ा ढेर देखा। फिर भी उन्होंने वहीं रात गुजारने का निर्णय किया।

तलाशने का निर्णय ले लिया।

दोनों भाई राजकुमारी की तलाश में निकल पड़े। रांगिया को इस काम के बदले कुछ चाह नहीं थी, जबकि भुतुया की नजर राजा के आधे राज्य एवं राजकुमारी पर थी।

कई दिन तक चलते हुए उन्हें जंगल में हाथी के पैरों के निशान दिखाई दिए। जैसे-जैसे वन घना होता गया, वैसे-वैसे ही पैरों के निशान स्पष्ट होते गए। हाथी के इतने बड़े पैरों के निशान देखकर, भुतुया डर गया। उसने अपने भाई से लौट चलने के लिए कहा, लेकिन रांगिया ने हिम्मत न हारी और अपने भाई में जोश पैदा किया।

पहाड़ पार करके अंत में उन्हें हाथी की चिंग्घाड़ सुनाई दी। हाथी की आवाज सुनकर, बड़ा भाई भुतुया डरकर एक पेड़ पर चढ़ गया। रांगिया हिम्मत करके वहीं खड़ा रहा। दोनों भाइयों ने देखा कि एक विशालकाय सफेद हाथी ऊंचे पहाड़ पर खड़ा है।

रांगिया को देखते ही हाथी उसे कुचलने के लिए दौड़ा। रांगिया ने एक बड़ा-सा पत्थर उसके सिर पर दे मारा। हाथी बौखला उठा। दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ गया।

जंगल के पेड़-पौधे,तहस-नहस होने लगे। रांगिया की बलशाली भुजाएं हाथी से जमकर मुकाबला कर

जब वे लोग आराम करने की जगह ढूंढ़ ही रहे थे कि तभी उन्होंने कुछ लोगों की आवाजें सुनीं। रांगिया ने देखा कि एक लड़की सहित चार-पांच लोग उसी घर की ओर बढ़ रहे हैं। रांगिया ने पास जाकर पूछा— "तुम लोग कौन हो और कहां से आए हो ? यह लड़की क्यों रो रही है ?"

उनमें से एक ने बताया— "यह वन 'चकबाइया' नामक राक्षसी के कब्जे में है। हम सब उसकी प्रजा हैं। उस राक्षसी ने धमकी दी है कि यदि हर रोज उसे एक व्यक्ति खाने के लिए न दिया, तो वह हम सबको खा जाएगी। आज इस लड़की की बारी है। इसीलिए हम इसे यहां लाए हैं।"... कहते-कहते वह रो पड़ा।

रांगिया और राजकुमारी को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। भुतुया राक्षसी का नाम सुनते ही डरने लगा। सभी लोग उस मजबूर लड़की को राक्षसी के लिए उसी घर में बांधकर चले गए। लड़की भय और दुःख से रो रही थी। रांगिया उसका दुःख देख न पाया। उसने वायदा किया कि वह उसे राक्षसी से मुक्ति दिलाएगा।

रात बहुत बीत चुकी थी। दोनों लड़कियां और भुतुया भीतर बैठे थे। रांगिया बाहर पहरा दे रहा था। रात को राक्षसी चकबाइया आई। वह बहुत भूखी

थी। पहाड़-से शरीर वाली उस राक्षसी के दो दांत बाहर निकले हुए थे। उसके दोनों सींग बहुत पैने थे। वह रांगिया को देखते ही गुर्राई— "कौन है तू ? घर के भीतर ये कौन-कौन हैं ?" रांगिया ने कहा— "मैं रांगिया।"

यह सुनते ही राक्षसी डरकर भाग खड़ी हुई। रांगिया द्वारा सफेद हाथी की मौत वाली घटना कहीं से उसके कानों में पड़ चुकी थीं। रांगिया जैसे बहादुर से लड़ने की उसमें हिम्मत नहीं थी। कुछ देर बाद वह फिर आई। उसने सोचा था कि रांगिया जा चुका होगा। तब तक रांगिया सो चुका था। उसने भुतुया को यह कहकर बैठा दिया था कि राक्षसी के आने पर वह भीतर से ही बोल दे कि रांगिया जगा हुआ है।

राक्षसी ने आकर फिर पूछा— "भीतर कौन है ?"

भुतुया ने गुस्से में कहा— "मैं भुतुया।"

उसने ईर्ष्या वश अपने भाई का नाम न लेकर अपना नाम बोल दिया।

यह सुनते ही राक्षसी घर का दरवाजा तोड़, गुस्से में लाल हो, भीतर घुसी। भुतुया से राक्षसी भिड़ गई। भुतुया भी यूं तो कम न था, राक्षसी से जमकर लड़ने लगा। राक्षसी दोनों लड़कियों और भुतुया को उठाकर जंगल में ले आई। मकान के एक हिस्से में सो रहे रांगिया को इसकी भनक नहीं लगी। न ही चकबाइया ने रांगिया को देखा।

इसी बीच रांगिया की नींद टूटी। वह दौड़कर जंगल की ओर भागा। उसने रास्ते में बेहोश पड़े अपने भाई को देखा। जंगल की कुछ जड़ी-बूटियों की सहायता से उसने थोड़ी ही देर में अपने भाई को ठीक कर दिया।

कुछ ही देर में उसने चकबाइया को ढूंढ़ लिया। वह दोनों लड़कियों को उठाए एक गुफा की ओर बढ़ रही थी। रांगिया ने दूर से पुकारा— "नीच राक्षसी, हिम्मत है तो रांगिया से मुकाबला कर।"

रांगिया का नाम सुनते ही राक्षसी दोनों लड़कियों को छोड़, गुफा में घुस गई। रांगिया भी गुफा में घुस गया। गुफा में घमासान युद्ध शुरू हो गया। मौका देख, कुटिल भाई भुतुया ने गुफा के मुंह पर एक भारी पत्थर रख दिया।

उसने दोनों लड़कियों को राजा के सामने पेश कर, आधे राज्य का दावा किया। राजकुमारी रो पड़ी। उसने जब असलियत राजा को बतानी चाही, तो भुतुया ने कहा— "महाराज, आप खुद ही चलकर गुफा में देख लें। राक्षसी और रांगिया मर चुके हैं। मैं बहुत बहादुरी से लड़ा। मेरा भाई राक्षसी के हाथों मारा गया। मैंने राक्षसी को मारकर, अपने भाई की मौत का बदला लिया है। आपकी बेटी को उस दुष्ट के चंगुल से आजाद किया है।"

तभी रांगिया राज दरबार में पहुंच गया। वह राक्षसी को मारकर और गुफा का पत्थर हटाकर, वहां पहुंचने में सफल हो गया था। उसे जीवित देखा, तो भुतुया घबरा गया। राजकुमारी बहुत खुश हुई क्योंकि वह उस बहादुर नौजवान को पसंद करने लगी थी। पूरी सच्चाई राजा के सामने आ गई।

भुतुया को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने अच्छा बनने की कसम खाई। रांगिया ने उसे माफ कर दिया। सचमुच भुतुया एक अच्छा आदमी बन गया। राजा ने राजकुमारी की शादी रांगिया से और दूसरी लड़की की शादी भुतुया से करवा दी। वे सभी सुखपूर्ण जीवन गुजारने लगे। ●
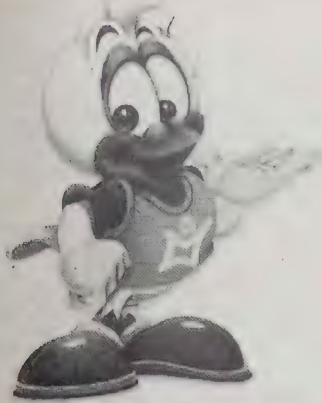
बारहवें एशियाई खेल

चलो हिरोशिमा

— योगराज थानी
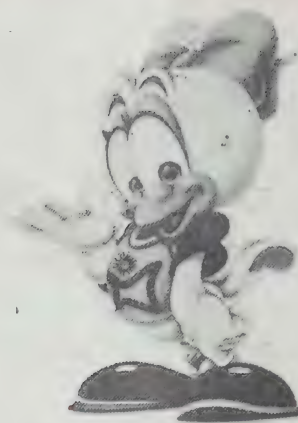
भारत एशियाई खेलों का जन्मदाता है। प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन दिल्ली में हुआ था— ४ मार्च, १९५१ के दिन। उस दिन ग्यारह सौ कबूतर पिंजरों से निकालकर आकाश में मुक्त छोड़ दिए गए। रंगबिरंगे गुब्बारों ने आकाश में जैसे इंद्रधनुष बना दिया।

अफगानिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, मलाया और भारत ने एथलेटिक्स, तैराकी, फुटबाल, बास्केटबाल, साइक्लिंग और भारोत्तोलन की प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। बारहवें एशियाई खेल २ अक्तूबर से १६ अक्तूबर, १९९४ तक जापान के प्रसिद्ध नगर हिरोशिमा में हो रहे हैं।

'हिरोशिमा जो था गवाह कल तक बरबादी के इतिहास का, आज केंद्र बना है देखो मूर्तिमान उल्लास का।'

हर चार वर्ष बाद होने वाले एशियाई खेल उस देश की राजधानी में होते आए हैं। लेकिन हिरोशिमा में यह परम्परा टूटी है।

दूसरे एशियाई खेल फिलीपींस की राजधानी मनीला में १९५४ में हुए थे। और तब से यह सिलसिला लगातार चला आ रहा है। हर चार वर्ष बाद एशियाई देशों के चुने हुए खिलाड़ी अपना कौशल दिखाते हैं। अपना और अपने देश का नाम ऊंचा करते हैं।

एशियाई खेलों का नारा है— 'आगे और आगे...' इनका उद्देश्य भी वही है जो ओलम्पिक तथा दूसरे बहुराष्ट्रीय खेलों का है— परस्पर मैत्री, सहयोग और भाईचारा। एशियाई खेल थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में तीन बार (१९६६, १९७० और १९७८) और दिल्ली में दो बार (१९५१ और १९८२) हो चुके हैं।

ग्यारहवें एशियाई खेल बीजिंग में हुए थें। चीन ने पहली बार तेहरान में हुए सातवें खेलों में भाग लिया। बीजिंग में एक विकलांग खिलाड़ी ने भाग लिया था।

एक सड़क दुर्घटना में एक युवक की दोनों टांगें कट गई थीं। वह एक खिलाड़ी था। उसका इलाज हुआ। ठीक होने के बाद उसे व्हील चेयर पर बैठाकर घर लाया गया। वह बहुत अच्छा तीरंदाज था। नाम था वांग पिन सुंग। सुंग ने मन-ही-मन सोचा— 'मुझे व्हील चेयर पर बैठाकर घर लाया गया है।मैं यहां से खेल के मैदान में भी जा सकता हूं।' बस, उसने नियमित अभ्यास जारी रखा। वह रोज खेल के मैदान में जाता, कड़ी मेहनत करता। दो साल में ही वह राष्ट्रीय चैम्पियन बन गया। सुंग ने १९९० के बीजिंग खेलों में भाग लिया था।

कहा जा रहा है कि हिरोशिमा नया इतिहास रचेगा। वहां चौंतीस खेल प्रतियोगिताओं में ३३७ पदकों के लिए कड़ा संघर्ष होने जा रहा है। बेसबाल, मुक्केबाजी, कबड्डी, आधुनिक पेंटाथलन, सेपक तकरा, कुश्ती और ताइक्वांडो में केवल पुरुष खिलाड़ियों के मुकाबले होंगे।

जिस देश में इन खेलों का आयोजन होता है, वहां का लोकप्रिय पशु या पक्षी का बच्चा खेलों का शुभंकर बनता है। हिरोशिमा में पोपो (नर) और कुक्कू (मादा) सारी दुनिया को 'खेल सिखाए मेल' का संदेश दे रहे हैं। हमें अपने खिलाड़ियों से बहुत आशाएं हैं।

शीर्षक बताइए

परिणाम

ढेर सारे शीर्षक आए। 'नंदन' अगस्त '९४ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए —

देखो बाजे का जादू, रानी बन गई राजू।
— प्रशांत शरदचंद्र खेतान, गांधी रोड, खेतान गली, पो. अकोला, जि. अकोला, (महा.)।

बच्चो आओ, नाचो-गाओ, मेरे साथ धूम मचाओ।
— रजनीशकुमार, पृथ्वीनाथ प्रसाद, (तुर्की निवास) परती टोला, छाता बाजार, मुजफ्फरपुर (बि.)।

बजा ड्रम ढम-ढम-ढम, नाचो बच्चो छम-छम-छम।
— मनजीतपाल सिंह, सरदार हरचरणसिंह, ए. सी. ई. ओ. आफिस, विकास भवन, फाजिल्का, जि. फिरोजपुर (पं.)।

छुट्टी के दिन ड्रम बजाना, यह है मेरा शौक पुराना।
— दीपककुमार, जी. आर. आर्य, कार्यालय अधीक्षक, सांख्यकीय अनुभाग, कृषि भवन, लखनऊ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : सुपर्णाकुमारी मोहंती, भद्रक (उड़ीसा); बलमीतसिंह छाबड़ा, इंदौर (म. प्र.); नरेंद्रसिंह बरोली, शालीमार बाग, दिल्ली; राजू बादल, पान बाजार, गुवाहाटी।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. छाते का हैंडिल सफेद हो गया है।
२. अटैची के ऊपर रखे पर्स का हैंडिल गायब है।
३. दाईं तरफ के घर में पांच की जगह चार खिड़कियां हैं।
४. घरों के पीछे दीखती बुर्जी का आकार बदल गया है।
५. सामान लाते आदमी की कमीज का कालर उठा हुआ है।
६. कार की डिक्की में सामान रखती महिला की स्कर्ट लम्बी है।
७. उसका कुंडल दिखाई नहीं दे रहा।
८. दाईं तरफ दो चिड़ियां उड़ रही हैं।
९. पेड़ के नीचे खड़े आदमी ने टोप पहन रखा है।
१०. बच्चे के टोप का आकार बदल गया है।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०८

परिणाम

पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। लेकिन कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आ सका। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

एक गलती : तीन : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. सोहनसिंह जाखड़, सीकर; २. राजकिशोर, मुंगेर; ३. सौरभ गुप्ता, मंगलौर (हरिद्वार)।

दो गलती : दस : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. अरुणकुमार, नई दिल्ली; २. मनंजयकुमार, सारण; ३. मिलन थापा, देहरादून कैंट; ४. इंदु पांडे, जोधपुर; ५. प्रिया जोशी, उज्जैन; ६. ऋचा वर्मा, देहरादून; ७. तनवीर आलम, जहानाबाद; ८. अभयकुमार गुप्ता, बाजपुर (नैनीताल); ९. मुकेशकुमार कुहाड़, आहौर; १०. विनय परमार, खड़गपुर (प. बं.)।

पाठकों/लेखकों से

- *नंदन कंप्यूटर पर कम्पोज होता है अतः टाइप की हुई रचनाएं भेजिए।*
- *रचना के साथ डाक टिकट लगा और नाम-पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें।*
- *जिस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हों, उसका नाम लिफाफे पर अवश्य लिखें।*

रचनाएं भेजने का पता है— सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

पकड़े गए

— रंजन स्वरूप

रामू धोबी के दो गधे थे। एक का नाम था कल्लू और दूसरे का नाम था भोला। दोनों गधों से रामू जमकर काम लेता था। फुरसत के क्षणों में दोनों आपस में बातचीत किया करते थे। रामू और भोला में एक खूबी थी— दोनों खुद को बेहद चतुर समझते थे। कल्लू उनसे कुछ चाहता, तो वे अपनी ओर से भी कुछ करने का प्रयास करते थे। इसमें वे अक्सर कुछ न कुछ गलती कर देते थे, जिसके चलते रामू उन्हें पीटा करता था।

पिछले दिनों कल्लू ने गलती से कुछ धुले हुए कपड़े नदी के किनारे गिरा दिए थे। रामू ने उसकी वहीं पर पिटाई कर दी थी। और कोई अवसर होता तो कल्लू को बुरा न लगता, पर अन्य गधों के सामने पीटा जाना उसे बहुत बुरा लगा था। उसने घर छोड़ने का मन बना लिया था और एक दिन घर से भाग गया था। मगर रामू ने उसे नदी के तट पर पकड़ लिया था और बुरी तरह से पीटा था। कल्लू नदी के किनारे खड़े गधों से अपनी वीरता की बड़ाई कर रहा था कि रामू वहां पहुंच गया था और उसे पकड़ लिया था।

इस घटना के बाद रामू दोनों गधों के पैरों में रस्सी बांधकर रखने लगा था। कल्लू यह समझ गया था कि अब भाग पाना आसान नहीं है, पर उसे अपनी बुद्धिमत्ता पर पूरा विश्वास था।

एक दिन भोला और कल्लू टहल रहे थे। कल्लू बोला— "भोला भाई, क्या तुम्हारा मन यहां से भागने का नहीं करता है ? दिन भर खटो और मालिक की फटकार सुनो। यहां तो जीना मुश्किल हो गया है।"

भोला बोला— "कल्लू भाई, भागने का मन तो करता है, पर आपके साथ जो हुआ है, वह देखकर भागने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता हूं।"

यह सुन, कल्लू का खून खौल उठा। लेकिन उसने फिर भी कहा— "उस वक्त अकेला था मित्र। अगर दोनों मिल गए, तो भागने में सफलता जरूर मिलेगी।" भोला ने उसकी हां में हां मिला दी थी।

कुछ दिन बाद कल्लू और भोला एक-दूसरे से मिले, तो कल्लू बोला— "मित्र, मैंने भागने का उपाय सोच लिया है। तुम मेरी रस्सी काट देना, मैं तुम्हारी रस्सी काट दूंगा।"

उन्होंने सात दिन बाद भागना निश्चित किया। सातों दिन दोनों अलग-अलग बात सोचते रहे। कल्लू सोच रहा था कि अगर एक बार भाग निकलूं, तो इस भोला का साथ छोड़ कहीं दूर निकल जाऊंगा। उधर भोला सोच रहा था कि एक बार कल्लू मेरी रस्सी खोल दे, उसके बाद मैं उसकी रस्सी खोले बिना ही भाग जाऊंगा।

होते-होते भागने का दिन आ गया। दोनों ही अपने मन में खुराफात सोच रहे थे। भोला बोला— "कल्लू, जल्दी मेरी रस्सियां चबा, ताकि मैं भी तेरी रस्सियां जल्दी चबा सकूं।"

कल्लू ने जल्दी-जल्दी भोला की रस्सियां चबा दीं। जैसे ही कल्लू ने रस्सियां चबाईं, भोला योजना के अनुसार सरकने लगा। यह देख, कल्लू सतर्क हो गया। उसने उचककर भोला का रास्ता रोक लिया और चिल्लाने लगा।

कल्लू के रेंकने की आवाज सुन, रामू दौड़ा आया। भोला को भागते देख, उसने उसे पकड़ा और जमकर पीटा। जब उसने रस्सियां चबाई हुई देखीं, तो सब समझ गया। भोला को बांधने के बाद उसने कल्लू को भी पीटा। और हंसते हुए बोला— "गधा गधा ही रहेगा !" और चला गया।

बाल-सभा

संजीव

रजनीश शर्मा

गौतम आनंद

प्रदीप

नेहा

प्रभाकर

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. रोहतासकुमार, १३ वर्ष, सी/१८ मजनूं का टीला, दिल्ली; २. रामबहादुर भारतीय, १६, ग्रा.+पो. फुरसत गंज, राय बरेली; ३. संदीपकुमार श्रीवास्तव, ११, साकेत विहार श्रीवास्तव, हरदिया चौक, नरकटिया गंज; ४. नवनीत मुटेजा, १६, ए. डी. मुटेजा, पी. एन. बी., चम्बा (हिमा.); ५. अभिषेक बरगोटी, १५, एफ ८३/२४ तुलसी नगर, भोपाल; ६. रोशनराज, १२, बाम्बे डिस्काउंट सेल, बेरिंग रोड, पटना; ७. सुनील जुयाल, १४, ८/११७९ फतेहपुर पश्चिम, हरवर्तपुर, देहरादून; ८. शशांक सौरभ, १४, उर्मिला निवास, दहियावा टोला, छपरा (बि.); ९. लोकनाथ मोदी, १६, ६४, सुवर्ण पार्क, हावड़ा; १०. ज्योति खरे, १५, डा. महेन्द्र खरे, बरौदिया कलां, जि. सागर (म.प्र.); ११. स्नेहा भगत, १२, अप्सरा ब्यूटी पार्लर, लालबाग, दरभंगा; १२. संदीप गौतम, १६, १०२१/ई, लोहिया गली नं. ५ बाबरपुर, शाहदरा, दिल्ली; १३. खुशबू जायसवाल, १२, पर्वतीय मोहल्ला, रामपुर रोड, हलद्वानी, जि. नैनीताल; १४. कपिल शर्मा, १२, ५७ ब्रह्मपुरी, पो. अंता, जि. वारां (राज.); १५. अब्दुल्लाह, १६, अताउल्लाह, पिपरापुर, मल्लाह टोला, गोरखपुर; १६. सचिनकुमार, १२, बी/६ सेल टैक्स कालोनी, इंदौर; १७. सोनी जैन, १५, डा. विनयकुमार जैन, १५, ग्रा.+पो. चरकी, गया (बि.); १८. अविनाश गुप्ता, १५, ६२/१६६ हरवंश मोहल्ला, कानपुर; १९. अमर जायसवाल, १५, अमरपुर हाउस, नौतनवां, महाराज गंज, गोरखपुर; २०. मो. जावेद अली, १४, मुस्तफा फजल अली, बैंक रोड, पटना; २१. राहुल वार्ष्णेय, १४, राहुल इंडस्ट्रीज, तमोली पाड़ा, अलीगढ़; २२. भावमित्रा अग्रवाल, १५, बी. टी. एच-बी. यूनिवर्सिटी कैम्पस, कुरुक्षेत्र; २३. देवदत्त, बी-३५३, इफको़न, बरेली; २४. दीपक माडीवाल, १४, कैलाशचंद्र नाडीवाल, श्री जी. की गली नंदवाना, विदिशा; २५. रेणुकुमार, १२, रामशंकर महतो, ग्रा.+पो. ओटार, सिंहभूमि (बि.); २६. राजेन्द्र कुमार मित्तल, १४, प्रेम क्राकरी स्टोर, नजदीक देशराज कवाड़ी, चेतना रोड, रतिया, हिसार; २७. नियाज अहमद, १२, चौधरी बूट हाउस, रमेश सुपर मार्केट, मिलन चौक, भैरहवा, नेपाल; २८. राजन गुप्ता, १६, हनुमान प्रसाद गुप्ता, यशपाल कपूर मार्ग, लालगंज, रायबरेली; २९. सौरभ श्रेयांस, १५, २६ एस. बी. आई. कालोनी, खगड़ी रोड, पटना; ३०. अंकुर सिंह, १२, राजेंद्रपाल सिंह, २६४ गांधीनगर, उन्नाव (उ.प्र.)।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. आलोक आनंद, १५ वर्ष, गायत्री कुंज, वीरपुर, सुपौल; २. दुर्गेशकुमार सिंह, ११, नाहर सिंह, नई टेलीफोन एक्सचेंज कालोनी, हाथरस (उ.प्र.); ३. उज्ज्वलकुमार, १३, डा. सी. एम. दास, बी. डी.एम.पो. वीरपाड़ा, जि. जलपाईगुड़ी; ४. दीपक गोयल, १३, २२४/९ गन्नौर, सोनीपत; ५. अमित अरोड़ा, १२, ए ४० रंजीत एवेन्यू, अमृतसर; ६. बबिता रानी चौरसिया, १५, श्यामसुंदर चौक, म.नं. ८/१६० ए, कन्हैया कुंज गली, जीवनी मंडी, आगरा; ७. अमित, १६, सी-४ जी/८९बी जनकपुरी, नई दिल्ली; ८. अनामिका सिंह, १४, राजनारायण सिंह, मत्स्य विभाग, खगड़िया (बि.); ९. राजेशकुमार दुबे, १५, बाबूराम शर्मा, गौतमपुरी, दादरी, गाजियाबाद; १०. गौरव वार्ष्णेय, १२, दयाराम वार्ष्णेय, ए-४११ आवास विकास रुद्रपुर, नैनीताल; ११. रवीन्द्रकुमार सिंह, १०, ३/बी-१०८ कालोनी, शक्तिनगर, सोनभद्र; १२. धीरजकुमार, १४, वीणा स्मृति, निकट बनर्जी लाज, कास्टर टाउन, देवघर (बि.); १३. रामरतन जांगीड़, १४, जागौर रोड, रेलवे फाटक के सामने, डेगाना (राज.); १४. अयाज अहमद, १५, नसीम मोहल्ला, मुंसहा, पो. टांडा, जि. फैजाबाद; १५. संदीप अग्रवाल, १४, गोपाल किराना स्टोर, बाजार अड्डा, ट्रेफिक चौक, मेन रोड, विराट नगर (नेपाल); १६. सचिन परसाई, १०, गणेश बार्ड, बरेली, जि. नरसिंह पुरम; १७. ओमकांत त्यागी, १६, ४६/८ बल्कैश्वर कालोनी, आगरा; १८. विकास कुमार सिंह, ११, माधवप्रसाद सिंह, साकेतपुरी, हजारीबाग।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Colorstix, Dennis & you
The Jumbo formula for fun!
EXTRA COLOR POWER
COLORSTIX
Stic
Jump with joy. There's lots of fun in store for you. With Colorstix. The new jumbo color pens from Stic. Smoother, softer jumbos in beautiful colors, including some you've never had before. Sky Blue. Flesh Tint. Lilac. And Light Pink!
And that's not all. Every pack of 15,12 or 8 Colorstix, gives you FREE DENNIS COLORING POSTERS or STICKERS.
So, when the fun starts with Dennis, who knows where it will end. For you, or for your friends who you could gift it to!
EXCITING NEW COLORS!
©Hank Ketcham Enterprises Inc., USA.
Makes a Great GIFT too!
NEW Stic Dennis
COLORSTIX
Stic
Stic Pens Pvt. Ltd.,
C-101, Mayapuri Indl. Area,
Phase II, New Delhi 110 064
R.KANGA/STIC/12/94

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९४ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४